





1. Dav. Vogel diff. ex creatio Mundi et  
     lumine nature demonstrari queat. 1704.  
 2. Chr. Marcorij diff. ex Gen. i vi. 1723.  
 3. Joach. Hildebrandi diff. de creatione unius. 1657.  
 4. Berth. Derrichow diff. de immortalitate  
     primi hominis. 1629.  
 5. Christ. Marcorij diff. de voluntate Adami. 1710.  
 6. ioh. Strelmanni diff. de Lazaru primorum  
     parentum. 1637.  
 7. Mart. Correll diff. II, de flavijs praedictis. 1706.  
 8. Aug. pfeifferi, diff. de homicidio Lanckii. 1671.  
 9. Christ. Neubaur diff. de signo quod Deas  
     caini posuit. 1672.  
 10. ioh. phil. pfeifferi diff. de homicidio Lanckii. 1670.

59.

Exercitatio  
Rabbinico - Talmudica

<sup>DE</sup>

ר י ר

SEU

39

ATRAMENTO  
HEBRÆORUM,  
Quam  
RECTORE MAGNIFICENTISSIMO,  
AUGUSTO atq; SERENISSIMO PRINCIPE ac DOMINO,  
DOMINO FRIDERICO  
WILHELMO,

REGNI PRUSSIÆ, ELECTORATUS CÆTERA-  
RUMQUE PROVINCiarum BRANDENBURGICARUM  
HÆREDE, &c. &c. &c.

IN HELICONE PATRIO

Placidæ Συμφιλολογευτων discussioni exponunt

P R A E S E S

M. IOH. IACOBUS QVANDT  
& RESPONDENS

CHRISTOPHORUS GRUBE

Anno MDCCXII. d. Februar. H. L. Q. S.

REGIOMONTI, Typis REUSNERIANIS.

15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100  
101  
102  
103  
104  
105  
106  
107  
108  
109  
110  
111  
112  
113  
114  
115  
116  
117  
118  
119  
120  
121  
122  
123  
124  
125  
126  
127  
128  
129  
130  
131  
132  
133  
134  
135  
136  
137  
138  
139  
140  
141  
142  
143  
144  
145  
146  
147  
148  
149  
150  
151  
152  
153  
154  
155  
156  
157  
158  
159  
160  
161  
162  
163  
164  
165  
166  
167  
168  
169  
170  
171  
172  
173  
174  
175  
176  
177  
178  
179  
180  
181  
182  
183  
184  
185  
186  
187  
188  
189  
190  
191  
192  
193  
194  
195  
196  
197  
198  
199  
200  
201  
202  
203  
204  
205  
206  
207  
208  
209  
210  
211  
212  
213  
214  
215  
216  
217  
218  
219  
220  
221  
222  
223  
224  
225  
226  
227  
228  
229  
230  
231  
232  
233  
234  
235  
236  
237  
238  
239  
240  
241  
242  
243  
244  
245  
246  
247  
248  
249  
250  
251  
252  
253  
254  
255  
256  
257  
258  
259  
260  
261  
262  
263  
264  
265  
266  
267  
268  
269  
270  
271  
272  
273  
274  
275  
276  
277  
278  
279  
280  
281  
282  
283  
284  
285  
286  
287  
288  
289  
290  
291  
292  
293  
294  
295  
296  
297  
298  
299  
300  
301  
302  
303  
304  
305  
306  
307  
308  
309  
310  
311  
312  
313  
314  
315  
316  
317  
318  
319  
320  
321  
322  
323  
324  
325  
326  
327  
328  
329  
330  
331  
332  
333  
334  
335  
336  
337  
338  
339  
340  
341  
342  
343  
344  
345  
346  
347  
348  
349  
350  
351  
352  
353  
354  
355  
356  
357  
358  
359  
360  
361  
362  
363  
364  
365  
366  
367  
368  
369  
370  
371  
372  
373  
374  
375  
376  
377  
378  
379  
380  
381  
382  
383  
384  
385  
386  
387  
388  
389  
390  
391  
392  
393  
394  
395  
396  
397  
398  
399  
400  
401  
402  
403  
404  
405  
406  
407  
408  
409  
410  
411  
412  
413  
414  
415  
416  
417  
418  
419  
420  
421  
422  
423  
424  
425  
426  
427  
428  
429  
430  
431  
432  
433  
434  
435  
436  
437  
438  
439  
440  
441  
442  
443  
444  
445  
446  
447  
448  
449  
450  
451  
452  
453  
454  
455  
456  
457  
458  
459  
460  
461  
462  
463  
464  
465  
466  
467  
468  
469  
470  
471  
472  
473  
474  
475  
476  
477  
478  
479  
480  
481  
482  
483  
484  
485  
486  
487  
488  
489  
490  
491  
492  
493  
494  
495  
496  
497  
498  
499  
500  
501  
502  
503  
504  
505  
506  
507  
508  
509  
510  
511  
512  
513  
514  
515  
516  
517  
518  
519  
520  
521  
522  
523  
524  
525  
526  
527  
528  
529  
530  
531  
532  
533  
534  
535  
536  
537  
538  
539  
540  
541  
542  
543  
544  
545  
546  
547  
548  
549  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
550  
551  
552  
553  
554  
555  
556  
557  
558  
559  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
560  
561  
562  
563  
564  
565  
566  
567  
568  
569  
570  
571  
572  
573  
574  
575  
576  
577  
578  
579  
580  
581  
582  
583  
584  
585  
586  
587  
588  
589  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
590  
591  
592  
593  
594  
595  
596  
597  
598  
599  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
600  
601  
602  
603  
604  
605  
606  
607  
608  
609  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
610  
611  
612  
613  
614  
615  
616  
617  
618  
619  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
620  
621  
622  
623  
624  
625  
626  
627  
628  
629  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
630  
631  
632  
633  
634  
635  
636  
637  
638  
639  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
640  
641  
642  
643  
644  
645  
646  
647  
648  
649  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
650  
651  
652  
653  
654  
655  
656  
657  
658  
659  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
660  
661  
662  
663  
664  
665  
666  
667  
668  
669  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
670  
671  
672  
673  
674  
675  
676  
677  
678  
679  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
680  
681  
682  
683  
684  
685  
686  
687  
688  
689  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
690  
691  
692  
693  
694  
695  
696  
697  
698  
699  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
700  
701  
702  
703  
704  
705  
706  
707  
708  
709  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
710  
711  
712  
713  
714  
715  
716  
717  
718  
719  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
720  
721  
722  
723  
724  
725  
726  
727  
728  
729  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
730  
731  
732  
733  
734  
735  
736  
737  
738  
739  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
740  
741  
742  
743  
744  
745  
746  
747  
748  
749  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
750  
751  
752  
753  
754  
755  
756  
757  
758  
759  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
760  
761  
762  
763  
764  
765  
766  
767  
768  
769  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
770  
771  
772  
773  
774  
775  
776  
777  
778  
779  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
780  
781  
782  
783  
784  
785  
786  
787  
788  
789  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
790  
791  
792  
793  
794  
795  
796  
797  
798  
799  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
800  
801  
802  
803  
804  
805  
806  
807  
808  
809  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
810  
811  
812  
813  
814  
815  
816  
817  
818  
819  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
820  
821  
822  
823  
824  
825  
826  
827  
828  
829  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
830  
831  
832  
833  
834  
835  
836  
837  
838  
839  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
840  
841  
842  
843  
844  
845  
846  
847  
848  
849  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
850  
851  
852  
853  
854  
855  
856  
857  
858  
859  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
860  
861  
862  
863  
864  
865  
866  
867  
868  
869  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
870  
871  
872  
873  
874  
875  
876  
877  
878  
879  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
880  
881  
882  
883  
884  
885  
886  
887  
888  
889  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
890  
891  
892  
893  
894  
895  
896  
897  
898  
899  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
900  
901  
902  
903  
904  
905  
906  
907  
908  
909  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
910  
911  
912  
913  
914  
915  
916  
917  
918  
919  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
920  
921  
922  
923  
924  
925  
926  
927  
928  
929  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
930  
931  
932  
933  
934  
935  
936  
937  
938  
939  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
940  
941  
942  
943  
944  
945  
946  
947  
948  
949  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
950  
951  
952  
953  
954  
955  
956  
957  
958  
959  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
960  
961  
962  
963  
964  
965  
966  
967  
968  
969  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
970  
971  
972  
973  
974  
975  
976  
977  
978  
979  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
980  
981  
982  
983  
984  
985  
986  
987  
988  
989  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
990  
991  
992  
993  
994  
995  
996  
997  
998  
999  
1000

בשׁוֹרֶה

DE  
ATRAMENTO HEBRAE-  
ORUM.

S. I.

**U**NAMI antiquitatis comprobatum videtur suffragio, non illico sub primis mundi incunabulis atramento scripturas suas exarasse gentes Orientales interque has etiam Hebraeam, adeo, ut multis magnisque quæstio implicata sit dubiis: Cuinam Atramenti inventio prima ciusque usus in gente Hebraea debeatur? Sive enim Iudeos sequi malis in *Berechit Rabba* f. XXVIII. col. II. existimantes, Adamum primum libros eosque lineandi modum monstrasse ר' תנחותמא בשם ר' אלעזר una cum artibus reliquis, ita scribentes: ו' מנהם בשם רב אמר כל האומנות אדם לרם מא טעמה וחרשים מהה מארם מאדם הראשון ריבנן אמרין אףלו סרגנו של ספר אדם הראשון ליבורו טני זה ספר הוא וסורנולו R. Tanchuma nomine R. Eleasar & R. Menachem nomine Raf dicunt, omnes artes Adamum primum generationes suas docuisse. Quenam pro eo potest allegari ratio? Resp. Ef. XLIV. ii. dicitur: Et artifices illi sunt מארם i. e. ab Adamo primo Tradunt Rabbini nostri etiam modum lineandi librum primum, edocuisse dicitur enim: (Gen. V. i.) Hic est liber, b. e. tam ipse, quam illius lincatio; seu ut exponit Autor מהנות כהונת f. XXVIII. Hic est totus ille liber, secundum dispositionem, ordinem & constitutiones Conf. R. Moses Mikkozi in הנור ספר מצות הנור Hilchoth Gerueius; & R. Samuel Japhe in יפה תואר f. CLXV. schin f. CXXIX. col. III. & R. Samuel Japhe in col.

col. II; Sive *Fl. Joseph* l. I. Antiq. Iud. c. III. duce, columnas Sethi nepotū  
in memoriale meundi duplici excidio delendi medium inter Vulcanum  
Neptunumque sine detimento duraturas pro antiquissima reputare  
malis scriptione; in Iudeis atramenti nebulam in Iosepho fabulam inveni-  
ties ab eruditis dudum explosam. Conf. *Petrus Lambecius* Prod. Hist.  
Lit. p. VII. *Gerb. Job. Vossius* L. I. de Arte Gramm. c. IX. *Ioach. Job.*  
*Maderus* de Scriptis & Bibl. Anted. p. 6. *p. Dan. Huëtius* Prop. IV.  
Demonst. Evang. c. II. §. XV. p. 94. seqq. & alii. Neque tamen cer-  
tiora atramenti ab Orientalibus usurpati indicia subsequentia nobis  
suppeditant tempora, nisi quod prima quasi lux in illis *Iob. XIX. 23.*  
כִּי יְהוָה אֶפְרַיִם וַיְהִי בְּתִבְנָה מֵלֵי כִּי  
יְהִי בְּסֶבֶר וַיְהִי בָּעֵץ בְּרוֹלָה וַעֲפָרָה לְעֵד בָּאָזְרָה וַחֲצָבָן  
*Utinam verba mea consignarentur, utinam insculperentur libro, stylus*  
*ferreo & plumbō, in omnem eternitatem petra incidarentur!* Equi-  
dem quam mundi aetate lobus vixerit in aprico positum non est, vel  
ipsummet Iudeis hac de re inter se contendentibus apud *R. Mosen*,  
*Maimonidem* in *More Nevochim* Part. III. c. XXII. f. CXLVIII. neque  
tamen de nihilo sunt rationes, quas *Frid. Spanheimus* L. I. Hist. Iobi  
c. VIII. & IX. T. I. Opp. p. 60. seqq adducit motus auctoritate Paraphrasis  
antiquarum, Chronicorum Ebraeorum, Arabum, Orientalium, *Cy-  
priani* item Epist. LXXV. *Origenis* L. VII. contra Celsum p. 305. ali-  
orumque sine numero statuentium, Iobum Mose esse antiquorem,  
eumque aetate excedere. Duplicis vero Iobus modi inscriptionis me-  
minit; Primum enim libri mentionē facit, post ea petra, optans verba sua  
inscribi **בעט ברול וועפרה**, coque ipso pro scriptura colorata parum  
militat. Quanquam enim *Job. Drusius* Comm. in h. 1 existimet, anti-  
quos temperaturam quandam habuisse, qua plumbum indurari po-  
tuerit, adeo, ut stylus eius in silice aut petra incisio fieri posset, id tamen  
vix testimonio omni dubio majori comprobavit, prout & illi parum  
dicunt, qui asserunt verba **בעט ברול וועפרה** reddenda esse: *cum*  
*stile ferreo & plumbō*, ut plumbagine seu plumbō rupem signari ex-  
optet lobus; eiusmodi enim scriptura petra, parum est conveniens,  
quippe qua & plumbō resistit & nulla signatura plumbi admittit vesti-  
gia. Unde melius multo sentiunt, qui vel cum *Bernhardo de Mont-  
faucon* in *Palæograph. Græca* Paris. 1708. edita apud *Job. Clericum* in  
Bibl.

Bibl. Choisie T. XVII. Artic. XI. p. 347. 348. & Iob. de Pineda in Iob.  
 cap. XIX. 24. L. VII. Comment. f. 54. laminas, seu chartas plumbeas intelligent, cum & Pausanias L. IX. c. XIII. laminea plumbea  
 mentione iniciat, cui inscripta fuere Hesiodi Opera & dies, & Plinius  
 L. XIII. H. N. c. XI. alius meminerit laminea, cui acta publica  
 Roma impressa fuerint; Velecum R. Salomone Isaacide, Sam. Bocharto  
 T. I. Hieroz. L. II. c. XLIV. p. 466. & Fridrico Spanheimio L. I. Hist.  
 Iob. c. IX. literas dicunt petra incisae, earumque sulcos plumbo infuso  
 expressos, ut sic exoptet Iobus primum petram incidi, deinde literas  
 incisae plumbo infuso reddi extantiores, quo omnium oculos  
 cæsura rupi incise, & una cum his desideria Iobi patefierent. Con-  
 sentit in hanc expositionem R. Meir ben R. Isaac Arama in  
 f. LVII. col. II.  
 מאיר אובי ויכתב רעהו לדור אחרון למען יעד  
 מי יתן אפה ויכתבו מלוי בספר וגם בצוור החלמיש בזח בעט  
 ימים רבים מי יתן אפה ויכתבו מלוי בספר וגם בצוור החלמיש בזח בעט  
 מי יתן אפה ויכתבו מלוי בספר וגם בצוור החלמיש בזח בעט  
 ברול ובוה בשפרת או רזה שוחקו מלוי בצוור בעט ברול  
 ממולאים בשפרת כרוכ החרקקים חקקי אכן למען יעדו ימיט  
 רנית זהה לעד בצוור ויחכון Optat, scriberet quis mentem  
 suam generationibus venturis, quo subsistere posset per tempora multa.  
 Utinam scribantur verba mea Et. stylo ferreo Et. quo ipso hoc vult  
 Utinam inscriberentur verba mea libro; imdicitam petra silicus, huic  
 quidam stylo ferreo, illi autem plumbō; aut hec est eius mens, ut in-  
 sculpantur verba ejus petra stylo ferreo impleta plumbō, more sculptorum  
 lapides quo subsistant per tempora diuturna, & id est, quod scribit: In  
 perennem memoriam petrae incidentur. Conf. D. Christ. Noldit nota  
 ad Conc. Part. not. MCXCIX. Negari tamen haud potest, fuisse  
 quosdam ipsosmet inter Rabbinos, qui pro re aperta & fere decisā ex-  
 clamavint, atramenti usum inter gentes Orientales & in specie Ebrae-  
 am sicutum ex hoc Iobi loco defendi posse. Illos inter nomen suum  
 profitetur R. Abraham, Medieus in egregio opere  
 f. CLXXXI. col. III. locum hunc exponens  
 שלטן הגבורי על הקלף  
 בראשית רוי על הניר De scriptione atramento facta in membrana aut pa-  
 pyro, imo & f. CLXXXIII. col. IV. vestigia typographia in lobo re-  
 periri demonstratur, atramenti indicia sequentibus excupit

בשחיה מתרעם על הסוגה והצורות שבאו עליו בקטרגן השטן אמר בפירוש מי יחן אף יוכתבן מל' שהוא הכתובת הנушת בראשית ר' חורי מי יתן בספר וווחקו והוא כתובה חחקוק והמלאה גם וזר הנשרת במלאך הרופס בנייר כאשר אסרו עתה ושני הברל המכתב אמרת בקצר ובפסקין אחד כלכד ועל ט' בראשית ר' ברו וווערט ליכל ליא ארכוב הרבור ערילע כי למפורסטמות אין אלו צרכין למשלים או פירושים אך על הרפסה אמר ט' דיא נעשה בעט ברול וווערט

*Cum querulus esset (Iobus) ob afflictiones & angustias accusatione Satane ipsi illatas, explicite dixit: Utinam verba mea scriberentur; quo ipso innuit scriptiōnem factam signaturā atramentū. Addit: Utinam libro insculperentur. Quo ipso respicit scriptiōnem expressam & plenam, qua iunctim sit in typographia in charta, prout modo diximus. Duplex autem hoc scriptura disserimen per compendium innuit, in uno eodemq; versiculo. Qum autem de atramento facta signatura res sit in vado penes omnes, prolixius hac non edisseram. Manifesta enim omnibus, parabolis non indigent aut commentariis. Typorum vero mentionem facit, dum fieri scriptiōnem vult stylo ferreo & plumbo. Collactea sunt illa R. Salomo bar Zemach in Comm. in Iobum f. CX. col. I. ט' יtan הלאי כמו יtan וויה לבכם קלומר הלואי שיכתבן מל' ברו או וווחקו בספר בעט ברול Dicit Utinam, sicut (Deut. V. 26.) dicitur: Utinam esset cor eorum; ita Iobus: utinam scriberentur verba mea atramento, aut insculperentur libro, stylo ferreo.*

### s. II.

Tempora Mosis accendentibus proprius, antiqua nobis obviam fit Iudaorum traditio, qualiorem aliquem atramenti vice adhibitum a DEO in monte Sinai Mosi legis tabulas insinuante, existimant. Nam cum Exod. XXXIV. 29. legamus *משׁלֵך יְהוָה כִּי קָרְבָּן פָּנָיו* Moses vero ignorabat splendidam esse faciem suam, dum cum ipso colloquebatur; scriptorque facer narret, Mosis de monte descendens vultum miro splendore coruscasse, quæstio a Rabbinis moea, unde splendor ille insolitus ortus fuerit? inventi sunt statuentes, splen-

7

splendorem hunc inde ortum, quod Moses calatum a DEo sepositum,  
cui aliquæ adhuc liquoris inhaerent reliquiæ vultui suo illeverit, hinc  
factum, ut tanto fulgore nitentem faciem retulerit. Ita enim in Sche-  
mos Rabba fol. CLXI. col. II.  
מהICON נטַל משה קרני החור ר' יזרעה בר נחמן בשם ר' בן לוי אומר עדר שחריר כתוב  
בקולטוס נשתייר קיימען והעכירו על ראשו וממנו נעשן לו  
קרני החור שנאמר משה לא ירע כי קרן עור פניו Undenam re-  
portavit Moses cornua glorie? Respondeat R. Lebuda fil. Nachman nomi-  
ne R. Simeon fil. Lakisch; Cum scriptisset calamo, residuum manistrat  
pauxillum, quod capiti suo illevit (Moses) & exinde orta sunt ei cornua  
gloriae; dicitur enim: Moses vero ignorabat splendidae esse faciem  
suam Clarius ex Iudæorum sententia haec differit Zennurennaf. XLIX.  
col. IV. Der Medrasch schreibt, von was bat Mosche (würdig)  
gewesen zu dem Lichi? da Mosche ist gewesen in der Hölle, und  
הקבָרֶה (Gott) hat sich bewiesen zu ihm, da hat die Kücke zugedeckt das  
פְנֵי (Angeface) von Mosche mit sein Hand von Ecke. Von denselbigen ist  
gekommen, das Mosche ist gewesen gar licht an sein פְנֵי (Angeface). Er-  
liche (Gelehrte) sagen, darumb weil Mosche bat geredt mit  
הקבָרֶה (Gott) gegen von Gott, vor den is Mosche licht geworden an  
sein פְנֵי (Angeface). Erliche sagen, Mosche hat geschrieben die  
להוחור (Tassen) und da er bat ausgeschrieben, da ist geblieben an der Pen von  
was er geschrieben hat; da is Mosche gangen und hat dasselbe geschmiert  
an sein פְנֵי (Angeface); von dem is Mosche geblieben ein Licht an sein פְנֵי (Angeface). Ea-  
dem ex Iudæorum placitis notavit Ioh. Saubertus in Opp. Posth. p. 133.  
Quo minus autem pro Iudeis his faciamus, qui liquore splendidissimo  
atramenti vicem subeunte Tabulas Legis in monte Sinai scriptas existi-  
mant, eique radios vultus Mosis adscribunt, varianos movent. Ete-  
niam (1) communior est Rabbinorum sententia multo propius veritati  
scripturae accedens, statuentium, scripturam in tabulis lapideis non li-  
quore aliquo consignatam, sed tabulis incisam seu insculptam esse. Clare  
fatis id expressum legimus Exod. XXXII. 16. וולחת מעשה אלוהים  
המרא והמכות מכתב אלהים הוא חרות על הלהוחר

Tabule erant opus DEi; & scriptura scriptura divina tabulis insculpta.

LXX.



LXX. *υεισολαμμενη*. Vulg. *sculpta*. R. Ionathan ben Uziel חקיק *insculpta & clare expressa erat in tabulis*. R. Salomo Isaacides sic exponit: *חרות לשון חרתה וחרט אחר חרת* והוא שניות לשון חקיק אנטלייר בלבו *notant, nempe sculpere; quod Galli vocant entailler*, cui consentanea habet R. Salomo ben Meir Comm. in h. I. Quinimo multo eleganter expositione dubio solvendo succurrit R. Moses Maimonides in More Nevochim P. I. c. LXVI. f. 47. col. II. dum exinde quod priores tabulae מחרב אליזֶה *scriptura DEi* Exod. XXVIII. 16. dicantur, inferre studet, sine ullo instrumento scriptiōnem suscepit, sed una cum essentia harum tabularum immediata creatione productam & sola DEi voluntate procreatam scripturam, cum & Pf. CIV. 24. plantæ, animalia &c. מעשי יהוה *dicantur*, que tam non nisi DEi creantis manu extiterunt. Addit porro Onkelos הותכן מציאות הכתב בלוחות יותר מופלא ממציאות הכוכבים בגלגלים כמו שהוא ברצין ראשון לא בכל עשaspך כר יהוה וזה הכתב הכתוב ברצין ראשון לה בכל Numquid majori admiratione digna erat reputanda scriptura in tabulis quam existentia siderum in orbibus caelestibus? Sicut preinde has non per instrumentum aliquod in celo locavit & existere fecit; sed per primam suam voluntatem, ita & scriptura illa scripta fuit per primam eius voluntatem sine ullo instrumento. Mentem Maimonidis clarius paule pandit R. Ephodeus in Comm. ad Maim. More Nevochim f. XLVIII.

סוכר שהאותות היו נמצאות בלוחות כתבע כשאר עניין הטעב כאשר נראה ישפה אחרת שהיה בו צורות שונות במת הלוות רומיות לנפש האדם שהוא כלוח הטוקן לכתיבת דע כי חר. סינו העידו עליו שהאבני הנמצאות בו יצירואו אליהם הסנה ולכך וקרא החר החרה הר סינו על שם הסנה וראיתו אחר מאבני החר החרה שהזהה מצירואו בו הסנה בתכליות צירואו אליו כנונ מתחלף לגונן האבן ותלקתי האבן והוא לולמי רניס ונארכ בכל אחד ואחר צורה הסנה Existimat Mai.

Maimonides, quod litera fuerint invente in Tabulis per naturam, sicut  
reliqua natura artificia; prout Iaffis aliquis visus est, in quo varii ge-  
neris figura delineatae fuerunt. Tabula enim indicum erant anima ho-  
minis, que est instar tabulae scriptio preparatae. Observes velim, id  
ipsum testari montem Sinai; Lapidés enim qui in eo deprehendantur,  
figuram rubi representant; Et ob id mons hic vocatur mons Sinai a  
rubis. Vidi unum e lapidibus montis huius, in quo delineatus erat ru-  
bus perfecte figura plane divina; Et colore suo exprimebat colorem la-  
pidis. Dissecui lapidem hunc in frustamulta, Et in unoquoque figura  
rubi apparuit. Nec est ut dicas, id valere equidem de tabulis priori-  
bus, non autem de posterioribus, quæ non à DEo sed Moſe scriptæ  
perhibentur; agnoscent enim Iudæi, posteriores tabulas prioribus ex-  
asse fuisse conformes. Quantum quidem ad magnitudinem & mate-  
riam præsto est Gemara Berachos c. I. prout mentem eius adducit R.  
Abraham in f. CLXXXI. col. II.

אמר ר' לוי בשם שלשׁ הגבורים אמר ר' לוי בשם ר' חנינה מחתה כסא הקבור ורואה לו והקבה למשׁן  
את המחצב שנ' ותורת רגלו כמעשה לבנת הספר כי אמר לוי  
הקבלה חזוב מכאן שנ' להזות אבניים בראשונים מה הראשונים  
ארכן ששה טהرون ורוחם שלשה אף אלו כן מה הראשונים  
של ספרינו אף אלו וכו' Dicit R. Levi nomine R. Chama fil. Cha-  
mina: Sub throno gloria ostendit Moſe DEus b. lapicidinam, quia di-  
cit (Exod. XXIV. 10.) Et sub pedibus eius erat instar operis Sappirini.  
Dixit ei DEus benedictus: Cæde exhibe duas tabulas lapideas prioribus  
similes. Quales erant priores? Longitudo VI. latitudo autem III.  
palmarum; E. Et posteriores ejusdem fuerunt Et longitudinis Et latitu-  
dinis. Quales amplius erant priores tabule? Ex Sapphiro. Ergo Et  
posteriore ex Sapphiro fuisse necesse est. Quantum autem ad scriptu-  
ram ipsam, paria proferri R. Bechai in fol. CXXVIII.  
וְכַתֵּב עַל הַלְּחֹת וְחוֹזֶר אֶל הָעֵדָה לְמִשְׁרָה חס  
col. II. וְשָׁלֹות וְמִפְרַש הוּא בְּכַתֵּב פָּסֶל לְךָ שנ' להזות אבניים  
ראשוניים וכתתי וְיוֹרֵד שְׁגָם הַשְׁנָוֹת הָיו מִכְתֵּב אֶל הַיּוֹם  
Dicitur (Exod. XXXIV. 26.) Et inscripsit tabula; DEum scripsisse

innuit, cuius ante mentionem fecerat, non Mosen; (absit hoc quam longissime!) Satis clare autem patet id ex scriptura, dum dicitur: (Exod. XXXIV. 1.) sculpe tibi duas tabulas lapideas prioribus similes, ut scribam. Hoc ipsum declarat, etiam posteriores tabulas a DEo scriptas esse. (2) Accedit & hoc, quod splendorem faciei Mosis ex liquore in penna residuo ortum esse clare satis alii Iudæorum negent; ne quid enim dicamus de fabula, qua Iudei in *Devarim Rabba* f. CCCII. col. IV. Mosen cornu gloria inter oculos posito Sammaëlem excepisse fingunt, quæ potius על דרכּ משֵׁה seu parabolice una cum aliis, in Iudæorum scriptis occurrentibus, exponenda, prout eruditæ iudicavit D. Ioh. Bened. Carpzovius Dispp. Acad. III. c. III. p. 126. 127. & Henr. Jacob. van Bashuyzen, Theol. D. Hanov. in Exerc. pcc. anno 1707. ed. multo fane concinnius illi loquuntur, qui splendorem hunc a manu DEi in spelunca faciem Mosis obvelante ortum defendunt. Ita R. Salom. Isaäcides Comm. in Exod. XXXIV. 29.

רבותינו אמרו מן המורה שנתן הקב"ה יהו על פניו שנ' ושבורי כתבי

*Unde promeritus est Mose cornua ista gloria?* Doctores nostri tradunt: *E spelunca, quando imposuit DEus b. manum suam faciei Mosis.* Dicitur enim (Exod. XXXIII. 22.) *Et operiam te vola mea.* Conf. R. Leo in גור אריה f CXVII. col. IV. Unde ista de consignatis liquore quodam atramenti vices subeunte Tabulis Iudæorum sententia, vel ex eadem vel ad minimum ex alia Iudæorum opinione propullulasse nobis potias videtur, qua quidam Rabbinorum tabulas legum divinarum ex albo, literas vero inscriptas ex igne nigricante preparatas, opinati sunt. Eo tendit R. Simeon in *Schir Haschirim Rabba* f. XXX. col. I.

אר שמעון בן לקיש תורה שנתן הקב"ה הוותה שורה של אש לבננה וכתובות באש שחורה חיינ' אש וחצוב' מאש והיא מוכללה באש ונתחנה באש ההור מימינו אש רת למו *Dicit R. Simeon fil. Lakisch: Legis quam tradidit DEus benedictus pellis fuit ex igne candido, scripta autem fuit igne nigricante. Ipsa ignis erat, excisa ex igne, exornata igne & tradita in igne, prout scriptum est: (Deut. XXXIII. 2.) Ignea lex a dextris eius.* Unde Siphre Chamim in h.l. scriptiōnē tabularum comparat mori hominum כתוב בריו על החנין *inscribentium atramento chartæ alba.*

## §. III.

Barem sapiunt ingenii Iudaici subtilitatem & atramenti Iudeos inter recepti certitudinem, quæ in *Sora* c. IX. f. XLVIII. col. II. disputant Rabbini. Controvertunt enim illic ad verba Mischna: **משחרב בית המקדש בטל השמיר** *Ex quo d-structa est domus sanctuariorum, periret Schamir.* Notant Doctores Gemarici, per innui vermiculum grano hordeaceo simillimum, vespera Sabbati creatum, qui solo contactu lapides durissimos secarit. *R. Salomo in Pesachin* f. LIV. col. f. **השמיר כמן תולעת היה ואין כל דבר קשה עמוד בפנוי**

**שלש ופרק** *Schamir speciem habuit vermiculi, nec ulla res dura ei potuit resistere, quin rumperetur.* Usum esse eo Mosen, cum in humerali Pontificis nomina XII. tribuum fingeret, nec non Salomonem in exstruendo Templo perhibent; Cum enim 1. Reg. VI. 7. templum Salomonis erectum dicatur, ne sono quidem cæsorum lapidum percepto, traditio antiqua est, vermiculo **שמיר** hoc expedivisse Salomonem; vermem enim hunc omnes lapides dolasse, & sic sine omni sono templum erectum esse. Disputat autem contra R. Iuda hæc adstruentem R. Nehemias, obtrudendo locum 1. Reg. VII. 9. ubi intrinsecus & extrinsecus ferræ sectione lapides præparati perhibentur; unde tandem infert, lapides istos ferræ ante præparatos, tum vero demum templo illatos esse. Hos aperto Marte pugnantes conciliaturus R. Nachman, discrimen faciendum monet inter lapides Templi & lapides palatii regii; Quoad prius preferre se, ait, sententiam R. Iude, quoad posterius sibi placere mentem R. Nehemias. Hisce annexit Gemara:

**וליה נחמייה שמיר למאי אתה מיבעי ליה לברותニア אבנים**  
הלו אין כותבי אותן ברו מושם שנ פהוור חותם ואין מסרטין עליהם באיזומל משום שנ במלואות אל-  
כותב עליהם ברו ומראו להן שmir מכחוץ והן נבקעות  
מאליהם כתאיינה זו שנבקעה ביום החמה ואינה חסורה כלום  
וכבקעה זו שנבקעה ביום הגשםים ואינה חסורה  
כלום תננו רבן שmir זה כרתו כשורח ומשחרת ימי  
**בראשית נברא ואין כל דבר קשה יכול לעמוד בפנוי**

B 2

במה

במִזְבֵּחַ שָׁלֹשׁ אֶתְנָהָרִים אֶתְנָהָרִים אֶתְנָהָרִים  
וּמִזְבֵּחַ שָׁלֹשׁ אֶתְנָהָרִים אֶתְנָהָרִים אֶתְנָהָרִים

Verum si R. Nebemia prebendus fuerit calculus, cui usui tandem adductus fuisset Schamir? (per Asmodæum, ut addit Kafvenaki in h. l. ad En Israël P. II. f. 476. col. I.) postulatum ab eo. (inspergit hic עִירִישָׂרָאֵל f. CIV. col. II. responsonem apertam: *Lapidibus pectoralis adhibitus fuit.*) Nam traditio existat: *Lapidibus illis* (qui sunt in humerali & pectorali) *nihil inscribunt atramento*, quia dicitur: (Exod. XXVIII. 11.) *sculpturis signili*, neq; tamen *cælo facta est insig- rias*; quia scriptum deprehendimus (v. 20.) *sculpentes fuisse in plenitudinibus suis* (i.e. ut per sculpturam nihil quicquam lapidibus decideret; Quenam vero hic suppeditari poterit conciliatio? Resp. Scriptura literarum facta est atramento, tunc aportato vermiculo Schamir & extrinsecus admoto, sua sponte lapides pro literarum atramento factarum figuris diffisi sunt sicut more, diebus calidis se dissidentis, ita ut nibil ei secedat. Aut vallis more, tempore pluviosobianitis nec quicquam sui perdentis Ceterum tradunt Doctores nostri p. m. Schamir Creaturam esse grani hordeacei magnitudine, ante hexaëmerum conditam, nullamq; rem, quamvis durissimam coram ea confitescere. Quaratione autem asservari solet? Involvitur spongis laneis, & reconditur in pyxide plumbea, repleta furfure hordeacea. Conf. de vermiculo Schamir pluribus Gittin f. LXXXVI. col. II. Pesachin t. LIV. col. I. Pirke Avot c. V. Mischna VI. & Pirke R. Eliezer p. 42. edit. Vorst. R Salomo Comm. in Ezech. III. 9. Equidem genti Iudaicæ insolens haud est, fabulas ejusmodi construere, ut in majorem rerum gestarum gentis suæ admirationem incautiorum abripiant animos; Neque enim vermiculo Schamir lapides Templi, neque gemmas pectoralis exsculptas ullibi in scriptura legimus; Multo minus Iudeos iubabunt illa, quæ de שָׁמִיר leguntur Es. V. 6. X. 17. Ezech. III. 9. Zach. VII. 12. illa enim aut senticetum aut lapidem durum, nuspiam vermem saxa diffingentem notant; Imo felici Minerva rem omnem e fabularum protraxerunt involucris Sam. Bochartus T. II. Hieroz. L. VI. c. XI. & Iob. Braunius L. II. de Vest. Pont. M. c. VII. §. XII. p. 619. dum sub nomine שָׁמִיר Smiridem lapidem durissimum poliendis & cælandis lapidibus gemmisque adhiberi solitum, notari defendunt, quo Bezaleel &

& Oholiabus gemmis lapidibusq; poliendis usi sint. Senserat has suorum subtilitates album non mereri calculum. R. Isaac Abarbanel, inde non solum expositionem hanc allegoricam vocat, verum & aliud quid, quo Iudei respexerint, Interpretis cuiusdam Christiani expositioni innixus producit in f. CCXVI. col. IV. פרוש על נביים הראשונים. in 1. Reg. V. 18. שכתב שכמי שלמה והוא פסלם האכנים עם ות הולך אחר סכל מה שהוא רושם באתו רם היה נתקן בושר והחומר כענן רם העשורים שכasher ושימו אותו על אבן הספר הנקרא ריאמנטו וחזור אותו מה שלא יוכל לעשות שום ברול ושוח היה ענן והשער אשר אמרו שהוח מוחך האכנית רם ברכמו ושבוכו ודרך בעצמו פסל בצלאל אבני החשן הקשים בטבעם והמאמר הזה יסוייר מאר למת שאמרו חול בשמיר ואוללה רמו אמרם שהוח השמר כשורף לשטור הרם שהוח כמו רם והשער בעננו ושהוח בקנין של עופרת לפי שעיל העופרת עושים פתוח וספר Deprehendi in Commentario sapientis aliquum Christiani, Salomonis tempore sculptos fuisse lapides sanguine vermiculi aliqui, quicquid enim signatum fuit sanguine hoc, excisum est elegantius. Fuisset illum similem sanguini bircorum, quem dum affundunt lapidi pretioso, seu adamanti, fecat lapidem, quod nulli ferro datum est. Similem dicit rationem fuisse vermiculi Schamir, quem lapides findere ferunt, q. d. sanguinem eius. Eundem in modum sculpsisse Bezalelem lapides petrae hordeaceo, Quod ipsum mixum in modum consonat illi, quod dicunt Doctores nostri p. m. de Schamir. Forte vero dum dicunt, Schamir grana hordeaceo fuisse similem, id inferunt ex nominis convenientia, quia fuit instar sanguinis birci in effectu; item fuisse in calamo plumbeo, quia plumbo facere siveverunt ceteraram lapidum preciosorum.

## S. IV.

Quamvis vero Mosis etate atramentum apud Ebraeos in usu fuisse, inficiari non possumus, cum id ex Lege Mosis scripta & Scheida Sotæ Num. V. 23. nec non ex illa Iudeorum traditione, qua scri-

B 3

ptio-

ptionem atramento factam, inde a monte Sinai derivant, tam clare constet, ut & R. Abraham in f. CLXXXI. col. IV.

pronunciare veritus non fuerit: הנה בורורים שבקוושה לא

הוכשר אל- הרישום הנשתת בקנה או בקולמוס המטובל בדיו

שחור ונאה ככחוב מפיו יקרא אל- את כר'- הרכבים האלה

ואני כותב על- הספר בדיו ועם רשותה הדיו אין ספק שכחפ

משה ריבינו עה את התורה כל- כוכתוב וכותב משה את

ההורדה הזאת ויתנה אל- הכהנים

*Ecce in rebus sacris*

*licita non est scriptura, nisi canna, aut calamo atramento nigro & pulcro*

*imbutis suscepta, prout scriptum est (Jer. XXXVI. 18.) ore suo protulit*

*Jeremias verba ista omnia, ego vero libro inscripti atramento. Et bac*

*atramenti signatura nullum dubium quin scripperit Moses Doctor noster*

*super quem pax sit, legem universam, prout dicitur: (Deut. XXXI.*

*9.) Et scripsit Mose legem hanc, tradiditq; eam sacerdoribus; ita tem-*

*poribus Mosen proxime insecuris morem atramento scribendi non de-*

*siisse ex eo conicere licet, quod Iud. V. 15. Laudentur*

*משכיכ' - - - - -*

*חרבן בקולמוס וספר חד בשבט סופר*

*scribentes calamo scribae acuto, sive cum R. David Kimchi, & R. Sal-*

*ben Melech Literatos ac eruditos, sive mercatores computum insti-*

*tuentes in tabulis cum R. Is. Abarbanel in*

*f. XLIV. col. IV. intelligamus. Ipsum tamen nomen, quo apud Hebraeos*

*primum insignitum est, clare satis detectum reperitur demum Jerem.*

*XXXVI. 18. ואמר להם ברוך מפיו וקרא אליו את כל הרכבים-*

*Reposuit illis Baruch, ore suo Jere-*

*mias protulit verba illa, ego autem scripsi in libro atramento. Mirum*

*est LXX. reddere: καὶ ἔγειρον ἐν βιβλίῳ, vocem vero negligere,*

*eamque nullo plane exprimere indicio; reliquæ tamen versiones vo-*

*cem ר' in hoc loco scripturæ unice occurrentem reddidere per atramen-*

*tum. Idque res ipsa exigit. Etenim (1) eandem per atramen-*

*tum exponunt Rabbini ac Interpretes quotquot oculis usurpare licuit,*

*ne uno quidem excepto. R. David Kimchi Comm. in h.l. ברוך הוא*

*Id denotat ז' quo scriptio suscipi solet, & iisdem*

*verbis R. Moses Maimonides ad Schabbas c. I. Mischn. V. unde Sanctius*

*Comm.*

Comm. in h. l. notanter **רְיוֹן** additum existimat, quod aliis quoque li-  
quoribus scriptio suscipi queat. R. Mof. Maimonides in Schabb.c.XII.  
Mischn. IV. explicaturus vocem **רוּן** illico ad hunc Ieremias provocat  
locum, notam proclamans vocis huius explanationem  
**רוּן וּרוֹעַ מִן** *Atramentum, nota vox est ex Ier.*  
*XXXVI. 18.* Idem sentit R. Dav. Kimchi in *ספר שרשים* f.CIII. R. Mar-  
dochai Nathan in *ספר נתר נחיר* f.CLXXVII. R. Cohen de Lara in  
*ספר ליקח טב* f. XXXVII. col. II. R. Uruck in *ספר כהונת* f. XLIII. col. I.  
*ספר מעריך רם ערכות* f. XXVII. Philip. Aquino in *ספר XCIX. ed. f. XXVII.* Unanimi huic Iudeorum confes-  
sioni ex ase conformis est (2) notatio vocis cognatae **רְנָה** ab eadem ra-  
dice, quæ antiquis fuisse videtur **רְוֵה** descendantis, formæ **שְׁבֵן** Exod.  
**XXVIII. 19.** Deut. XI. V. 5. aliarumq; vocum apud R. David Kim-  
chi in fol. CCXXXVIII. col. II. Non lubet illam ex-  
cutere Edvardi Leigh Crit. S. p. 42. sententiam, qua existimat, dici  
**רוּן atramentum a וּ sufficiens**, eo quod sufficiens sit ad literas exaran-  
das atramentū, nec novā examinare lubet sententiā *Christ. Körberi* in Lex.  
Part. Ebr. p. 35., qui opinatur, derivandum ex Hebræorum **רְנָה**  
seu Arabum **شَيْهَة** *voluit, appetiit*, cum atramentum revera sit aliquid  
appetens seu adstringens. Certe enim haec & insufficietes & nimis  
longe petitæ sunt derivationes. Certiora adsunt, quæ cognatarum  
vocum suppediat formatio. Deut. XIV. 13 avibus accentuantur  
**Milvus pica & רְוֵה in specie sua.** In partes ire hic non diffitemur Interpretes, quid **רוּה** notet?  
in primis cum Versiones hic vix clari quidpiam pandant. Onkelos ver-  
tit *רְהָנָן* Ionathan *רוּתָא חֲוֹרָתָא* *Vultur albus*. LXX. aut o-  
mittunt, aut pro novo aliquo nomine non venditant, sed sub vulture  
comprehendunt; ita quippe in Exemplaribus communiter: *Kai τὸν*  
*γύπτα, καὶ τὸν ἄρτιον, καὶ τὰ ἔρωντα* *ārāwā*. Editio Complutensis quadam  
addit, ita vertens: *Kai τὸν γύπτα, καὶ τὸν ἄρτιον, καὶ πάντα τὰ νόσακα, καὶ*  
*τὰ ὄφεα ἄρτιον*, quales in recensione animalium mutationes plures nu-  
merari queunt, notante Flam. Nobilio in LXX. Interpretes, quam-  
vis Edit. Francof. A. MDXCVII. id insolenter fieri pronunciet. Co-  
dex Alex. à Iob. Ern. Gratio editus legit: *καὶ τὸν ἄρτιον, καὶ τὸν γύπτα, καὶ*  
*τὸν*

τὸν λιτίνα, καὶ τὰ ὄφεα ἀντι. Vulg. *Milvus*. Luth. *Geyer*. Belgæ de  
 Gier. Arabs **مِلْوَنْ** *Milvus*. Maius reddit dubium hoc, quod Sa-  
 muel Bochartus Part. II. L. II. Hieroz. c. X. non abnuente Job. Clerico  
 Comm. in Pentat. T. II. f. 469. innuat, mirum sibi videri, vocem  
 מִלְוָן non legi Lev. XI. ubi tamen reliqua animalium nomina expi-  
 muntur; Coniiclit proinde, eam vel a propheta (cuius rei causa non  
 pateat) vel a scribis post Prophetam ob ὀμοίωσιν duarum vocum  
 מִלְוָן & מַרְאֵה omissam esse, quarum coniecturarum ultima vero ma-  
 gis videtur Clerico consentanea. Neutiquam tamen imperamus a  
 nobis, ut in hanc sententiam condescendamus, cum noverimus, haud  
 simplex in animalium horum recensione Leviticum inter & Deutero-  
 nomium intercedere discrimen, quod nec negligenter Propheta, nec  
 scribarum ascribi poterit incuria. Qui milvum innui volunt, pro-  
 bant id in primis e voce **רָאֵה** Lev. XI. 14. cum qua soni ratione af-  
 finitatem habet maximam. Verum (a) **רָאֵה** & **רָאֵת** idem  
 sunt, nisi quod alterum nomen a **רָאֵה** seu volatu pernici, alterum a  
**רָאֵת** visu acutissimo avi huic impositum sit; unde quando in Chü-  
 lin c. III. f. LXIII. disputant Iudæi, an animalium 20. an 21. species  
 in Lege prohibita fuerint, alteri obicienti 23. esse, reponit R. Abai,  
 male ab eo **רָאֵה** & **רָאֵת** pro duabus haberi, cum **רָאֵת** **חַיָּה**  
**עֲנָם** idem sint. Et R. Salomo Isaacides  
 וְרוֹאֶת חַיָּה **רָאֵה** חַיָּה אֲזֵל חַיָּה.  
 וְרוֹאֶת וְלוֹמֶת נִקְרָאת שְׁמָה רָאֶת שְׁרוֹאֶת בְּיוֹתֶר וְלוֹמֶת חַזְׁרוֹת  
 בְּכָל שְׁמוֹתָה שְׁלֵמָה לְתַנְתְּרוֹן פֵּה לְכַבֵּל רֵין לְחַלְקֵל שְׁלֵמָה  
 יְהָא דְּתוֹסָרָה קוֹרָא אַתָּה רָאֶת וְתַבְאֶת לְחוֹתָר אָמֵר וְרָאֶת  
 שְׁמָה אֲזֵל אֲזֵל שְׁמָה וְרָאֶת לְסֵס הַכְּתוּב Quod dicitur  
 idem est quod non **אֲזֵל** & alibi **רָאֵה** dicitur. Ob quid  
 vero appellatur? Resp. Propterea, quia visu valet. Que vero  
 est ratio, quod scriptura omnia avis huius tibi exponat nomina? Resp.  
 præscindit scriptura omnem disceptandi ansam ob nomina diversa or-  
 tam; ne qui forte eam prohiberet vocet **רָאֵה**, qui permitteret, vocet  
**רָאֵת**; quam tamen scriptura non prohibuit. Deinde (b)  
 & **רָאֵת** ceu species avium plane distinctæ ludæis prohibentur, a qua-  
 rum esu abstinere debebant; prout etiam **רָאֵה** & **רָאֵת** non pro iisdem  
 sed

sed diversis speciebus agnoscere conveniens est. Unde vero magis consona videtur illorum sententia, qui per רִיחַ vulturem intelligunt, cum R. Sal. Isaacide, Castalione, Schindlero, Versione Angl. & Italica, nec non R. Luther. Huicq; sententia miras fert suppetias Es. XXXIV. 15. ubi Propheta desolationem Idumeos describens ait: אָרֶשׁ נְכֹזֶב רִיחַ רְעוּתָה תְּרֻמָּתִים cōvenerunt illic inter se una ad alteram. Non moramur LXX. reddentes ἔλαφοι cervi, nec alios, qui milvos volunt; etenim non milvos sed vultures innui, sicut addidit: נְכֹזֶב (vi vocis קְבַץ ex I. Reg. XX. i. observata) id quippe de vulturibus dici mirum non est. De Augusto Dio Cassius: Περὶ τῶν αἰχματοτόνων ἐστὸ πεδέν τὸ ἄργειον εἰσελθόν γύπταις ἔχει μετὰ ταῦτα δημηγορῶν τὶ ποὺς τὸς σφατεῖας, ἀλλὰς δωδεκάς εἶσε. Aristoteles I. VI. Hist. Anim. c. V. πόλλοι ἔχασθην φείνονται ἀπόλεθροι τοὺς σφατεύμασι. Maxime memorabilis est illa apud Petrum Bembum Lib. V. Hist. Venet. relatio, qui memorat illis diebus, quibus bellum parabatur in Apulia, corvos vulturesq; tantis agminibus inter se confixisse, ut carri XII. eorum cadaveribus explorarentur. Vid. Illysses Aldrovandus T.I. Ornithol. L. III. c. I. p. 255. 256. Edit. Bonon, Milvos vero congregations turmatim factas amare, experientia vix comprobat. Communis hæc est ludorum sententia. R. Day Kimchi in h.l. Patet vox sensus ex Deut. XIV. 13. ubi dicitur: In lingua exotica vulturem appellant. R. Salomo: רִיחַ וּלְטוּרֵשׁ בְּלָעֵן Vultures saluantur in lingua peregrina. Conf. cundem in Zach V. 9. Cum autem observarint animalium scriptores, geminum præ cæteris dari vulturis genus diverso colore a se distinctum; nigrum alterum, alterum album; non incongrue per vulturem nigrum innui albo multo præstantiorum teste Plinio L. X. Hist. Nat. c. VI. & Aelian. L. II. Hist. Animal. c. XLVI. affinitas vocum רִיחַ & רִין & רִיחַ abunde declarat. Non incongrue duo hæc secum invicem componit R. David Kimchi in Sepher Schorash. f. CIII. רִיחַ אֲשֶׁר שִׁיחָוֹתָן מִן חַשְׁרֵשׁ הַזָּה וְאַתָּה כָּחֵב עַל חַסְפָּר בְּרִין Possibile est enim esse radicus cum voce רִין, cuius mentio fit Ierem. XXXVI. 18. Inscripti libro atramento. R. Elias Levita addit: רִיחַ לְפִי שְׂחוֹת שְׂחוֹר כְּרוֹ שְׂחוֹר וְרִיחַ Dicitur avis hac, quia nigra est atramentum ad inflar, estq; a Rad.

ר' י. Neque vero obstat haec sententia quod legitur in Chalil c. III.  
f. LXIII. אמר ר' יוזה החסידה זו רוח לבנה למה נקירה

שפרת חסידות שושנה חסידות עט חכחות

Dicit R. Ichuda: *חסידות idem est quod דינה alba*; Quam vero ob causam Chasida salvatur? Resp. *quia facit benignitatem cum pullis suis*. Solvi quippe haec facile poterunt, si dixerimus nomen hoc vel potissimum designare vulturum speciem, qua non alborum, sed nigrorum est; vel intelligi-vulturem coloris cinerei seu grisei ex albo nigroque mixti, ut adeo *דינה a colore nigro, בונה a colore albo*, nuncupetur. Cinereum hoc vulturum genus Aristoteles I. VIII. Hist. Anim. c. III. σπόδεζεζον appellat, quam vocem minus recte Theod. Gaza per multiformius verit; enimvero σπόδος cinerem & σπόδεζεζον cinereum colorem exprimens significat; Nam & Petrus Bellonius L. II. de Avib. c. XXIII. vultures in albidos, nigros & cinereos dispescit. Conf. Albert. M. L. VII. de Anim. c. IV. & L. VIII. Hist. Anim. c. V. Ilyss. Aldrovandus L. II. Ornithol. c. II. p. 271. 272. 273. Denique (3) comprobant significatum hunc vocis יונן voices linguis Hebraic cognatis familiares. Syri non solum vocem *דינה atramentum* ex Hebraeorum יונן formant, 2. Cor. III. 3. verum ipsum etiam Dæmonem ~~דניאל~~ appellant Matth. IX. 32. 33. XI. 18. Luc. VIII. 30. Sunt, qui Syrum hoc a Latinorum Divi deducunt, cum dæmoniis ceu divis cultus exhibeat, unde *daueoniv* cultus 1. Cor. X. 20. idque sibi maxime probari vult Lud. de Dieu in Animadv. ad Evang. p. 32. Mavult tamen Val. Schindlerus Lex. p. 382. à *דינה*-milvus (seu vultur), eandem derivare, eo quod avii huic rapaci Dæmon similis videatur, ob infatiabilem ubique & usque prædandi cupiditatem avi huic nativam, referente Plinio L. X. Hist. Nat. c. VI. Verum rem acn quod ajunt testigisse videtur Nir. Fullerus L. VI. Misc. S. c. IV. deducens à *דינה* vel Syrorum *דינה atramentum*, ab atri coloris specie, vel quod ea præ exteris induitus spiritus infernalis hominibus se præbeat conspicendum, velquod a Gentilibus ei pecudes nigra immolatae fuerint. Unde & quæstionem ab Anton. Maria Verricello Tr. de Apost. Missionibus qv. CCXLVI. aliquando moveri opus erat: An, cum Æthiopes atrum colorem profecto, album pro infausto judicarent, Missionarius permettere queat, ut apud Æthiopes Christi, Maria & Apostolorum ima-

imagines atro colore pingantur? qua de re pluribus D. Joh. Frid. Mayer.  
Diff. de Elia corvorum convictore c. II. Th. II. p. 19. 20. Non  
multum abudit Arabum حَرْبَلَة atramentum apud Anion. Giggeum  
T. II. Thes. Ling. Arab. p. 201. item حَرْبَلَة atramentarium ap. Iac. Golium  
Lex. Arab. p. 889. & Edmund. Castellum in Lex. Heptagl. pag. 672.  
Amice quoque conspirat Persarum حَرْبَلَة, qua Persæ Sabinæ Indi-  
cæ speciem quandam notari volunt, quasi Dæmonis arborem; Vid.  
Iac. Golium l. c. p. 890. Edmund. Castellum in Diction. Perfico-Lat.  
f. 285. & Angelum a S. Joseph. in Gazophyl. L. Pers. Amst. 1584 ed.  
p. 363. Ut taceamus Britannorum Du, niger, non inconcinne hoc  
revocatum a Sam. Bocharto L. II. Canaan c. XV. p. 841. memorante,  
prisac hanc fuisse Britannorum vocem evincere Cambdenum, quod  
apud Trinobantes in Ptolemaeo Idumanus dicatur annis, qui Anglis  
bodie Blakwater i. e. nigra aquæ. Subiungit: Tale est, quod Scottie flu-  
vium Duglas ex Britannica Lingua nigro cœruleum explicant, quia  
Du nigrum & glas glaucum significat. Ex his etiam coniectura est,  
Pænorum lingua du vel dua nigrum significasse, & chadua iuncum-  
nigrum.

## §. V.

Variam apud veteres atramentum librarium, ut appellat Vitru-  
vius L. VII. de Architectura c. X. pag. 143. edit. Elzevirianaæ Anno  
MDCXLIX. vel scriptorium, ut vocatur Cornelio Celsi L. VI. c. IV.  
conficiendi rationem in primis apud Romanos fusus executi sunt Plini-  
nius L. XXXV. Hist. Nat. c. VI. Leo Allatius in Monum. Etrusc num.  
LXXIX. Gerh. Joh. Vossius L. I. de Arte Gramm. c. XXXIX. p. 135. &  
Petrus Maria Caneparius, Cremonensis, Lib. de Atramentis Venet.  
MDCXIX & Lond. MDCLX. ed. Qualis vero Atramenti Hebrei con-  
ficiendi ratio, nec non ex quanam materia fuerit, vix iudicabimus,  
nisi prænotatum fuerit, duplex atramenti genus esse, alterum anti-  
quis magis sicutum, idque eximius, alterum recentioribus, vulga-  
rius & minoris pretii. Solennius & antiquis notius delineare videtur  
מיכר מעשׂהו הריו Maimonides in Hilkos Tphillin c. I. §. IV.

מקבץין העשן של שמןיא או של זפת ושל שעון  
וכוונא

וכויזא בחן ונובלין אותו בשרפ' האילן ובמטע דבש ולותהין אותו  
חרכיה ורכין אותו עד שיעשה רקיין ומיבשיהם אותו  
ומצעני' אותו וכשערז כתיבת שורחו במי עפץ' וכייזא  
בו וכוחב בו שאבס' מהקען והיה נמחק וזהו הריו שמצוין  
מן המובהר לכתוב בו ספרם הפלין ומוחות ואם כתוב שלשתן  
במי עפץ' וקנקנתו שזו עומר ואין נמחק כשריס'

*Quomodo preparari solet atramentum? Fuliginem colligunt oleosorum,  
picis vel cerei aliorumq; his similitum; Pissa autem cum resina arboris pauxilloq;  
molla tandem insinuerit macerant ac conterunt, donec atteruentur.  
Massa exsiccata tandem reponitur, & cum quis ea uti desiderat scripturus,  
aqua gallata vel huic simili eam maceratam solvatur,  
scribatq; Nam cum placuerit delere facile delebitur. Eaq; atramentis pse-  
cies omnium est optima, qua scribuntur libri, phylacteria & schede  
liminare. Si autem tria illa, (libros, phylacteria & schedas liminares)  
exaraverit aquis gallarum & chalcanto quod adstringit, nec deleri potest,  
exquisita sunt. Conspirat R. Iom Tobb in Megilla f. CLIII. col. II.  
Oleum quidem atramento confiando adhibitum Talmudici tradunt  
in Gemara Schabbas f. XXIII.*

אמר ר' יהושע בן לוי כל השמנים יפן לריו ושמן זית מן המובהר אויבניא להו לגביל או לעשן  
תש רתני רב שמואל בר זוטרי כל השמנים יפן לריו ושמן זוטרא  
מן המובהר בק' לצבכל בין לעשן רב שמואל בר זוטרא מתני  
הכ' כל העשנים יפן לריו ושמן זוטרא מן המובהר

*Dicit R. Iosua fil. Levi: Omnia olea apta sunt parando atramento,  
oleum autem olive prestantia omnia excedit. Quae situm ex eo: an id va-  
leat de punctione, an de fuligine. Resp: docuisse Raf. Samuel filium Sutra:  
Omnia olea apta esse atramento, at oleum olive excedere omnia sive ad  
pisendulum sive ad fuliginem. R. Samuel fil. Sutra docet hoc pacto omnes  
fumos etiam aptos esse ad atramentum, oleum autem olive omnium esse  
prestantissimum. Quomodo vero oleo usi fuerint in atramento pra-  
parando, enucleate differit R. Sal. Isaacides in Schabbas h. l. מצאי ר' סלאו  
בתשובה ר' הנאנט שמענים כל זוכיר בעתן שמן זוטרא*

זרת עיר שמשחין וגורר השחרוריות ונותן בו שמן קומטני  
ומגבלן בו ומיבישו בחמה וממחה אותו להrk הרוי

Deprehendi in Responsis summorum Doctorum, moris esse, fumum olei oliva excipi in vase vitro tamdiu, donec fuliginem contraxerit. Post hec corraditur fuligo indito pauxillo olei, subacta ad solem exsiccatur, & conficiendo atramento inservit. Vix ovum ovo similius est, quam is e fuligine atramentum parandi modus Veterum, quem Plinius Lib. XXXV. H. N. c. VI. delineat, pictores veteres producens officinas suas ita ædificantes, ne fumo concederetur exitus, quo fuligo desiderata obtineri posset, nigro conficiendo inserviens. Lucem dictis affundunt illa Vitruvii L. VII. de Architect. c. X. p. 143. Edificatur locus, uti Laconicum, & expolitur marmore subtiliter, & levigatur, ante id sit fornacula babens in Laconicum nares (i. e. interiores fauces) & eius prefurnium magna diligentia comprimitur, ne flamma extra dissipetur: in fornace resina collocatur. Hanc autem ignis potestas cogit emittere per nares intra Laconicum fuliginem, quod circa parietem & cameræ curvaturam adhaerescit, inde collecta componitur ex gummi subacto ad usum atramenti librarii, reliquo testores glutinini admiscentes, in parietibus uiuntur. Sed quid tandem, quaris, est Laconicum? quod Dio Lib. LIII. vocat λακωνιον τρυγατηγον? Rem explanat Erilb Philander in notis ad L. V. Vitruvii c. IX. p. 97. nempe fuisse turriculas cameratas in hemisphaerium, calori vaporique recipiendis destinatas, quibus utebantur frequentissime Lacones, siccis sudatoriis ad cruditates excoquendas maxime assueti. Figuram eius in iconे rudiori penicillo silit Bernaldinus Baldus in Lexico Vitruviano a Ioh. de Laet Antverpiano edito p. 64. it. D. Gualtherus H. Rivius Med. & Mathematicus in notis ad Vitruvium p. 452. 453. vividi autem Ioh. Iocundus in Vitruv. edit. Venet. MDXI. fol. 74. Resinam autem de pinu aut arbore picea atramento præparando, olim fuisse exhibitam, abunde innuit Dioscorides L. I. c. XCIII. hocque atramenti genus typographiis inservire memorat Henricus Salmuth in not. ad Pancroll. L. II. Tit. XII. p. 250. itemque Delechampius ad Plinii L. XXXV. H. N. cap. VI. insuperanne etens, tribus modis atramentum fieri, pri- mum ex fuligine olei nucum usci, deinde ex ebore cremato, tandem quod præstantissimum ex ossibus Persicorum uscis. Quo ipso iure forte

recedemus a *Wilhelmo Schikardo* de Iure Regio c. II. Theor. V. s. **III.**  
 p. 98. dum mentem Maimonidis, qua in רקיון divisa vult mastu-  
 las, ita declarari cupit, quasi frustatim comminuta fuerint, donec at-  
 tenuarentur; Etenim Maimonides in placentulas minores divisa ac  
 preparatas, non vero comminutas ac contritas his verbis innuit. In  
 eiusmodi רקיון divisum paratur atramentum Sinensium. Atha-  
 nasius Kircherus quidem L. VI. Chinæ illustratæ c. III. p. 232. *Sinenses*,  
 inquit, non utuntur nostratis calamis, neq; atramento, verum in lapide  
 marmoreo cantillum de nigro colore atterunt ad imbueendum penicillum,  
 quem ea ratione cum scribunt, aut potius cum pingunt, digitis te-  
 nent, ut in presenti figura appareat. (vid. Kircherum ipsum l. c.) Ni-  
 hilominus tamen *Mattæus Riccius* L. I. Exped. Sacr. apud Sinas exi-  
 guis panibus simile atramentum hoc ex olei fumo adornari memorat.  
 Prolixorem mastularum atramenti Chinensium præparationem ac u-  
 sum suppeditabunt *Olaus Wormius* L. IV. Musei. c. X. p. 376. *Oliger*  
*Lacobeus* P. II. Musei Regii Sect. II. p. 52. *Ludovicus Moscardus Nobis*  
*Veronensis* L. I. Musei sui c. LXIX. allegatus a Cel. *Io Christ. Wagen-*  
*seilio* in Cod. Sota p. 374. & 1117. & *D. Simon Pauli* in *Quadrupart.*  
*Botan.* p. 161.

### s. VI.

Atramenti species altera, qua communiter Iudei utuntur, ex  
 gummi, chalcanthro, galla nuce, aliisque præparari solet, aqua affusa,  
 in vase foli aut igni exposito. Processum in præparatione atramenti  
 Ebraeorum observari solitum, vix quisquam exquisitus delineavit  
*R. Abraham* in שבט הנברים fol. CLXXXI. col. IV. cumque bre-  
 vibus exprimat illa, quæ apud alios sparsim leguntur, hic transferre  
 non pigrabimur. Ita vero ille: מִן וּמִן מְהֻרָיו וְחַמְזֹוֹר בְּחַרְטֹן לְחוֹסֵף  
 יוכשר לכתובות ספרי תורה והתפילין והחנויות כחומר לחשוף  
 על הווי שכתב חומכם או בחלופות תפילין פרק א' פסקא ד'  
 תחכשחת הווי הוו שקבעתי מהספר המשלה ר' עקנאל  
 מפונטוטולי יש שבאלו היה מעשוה ווי הספר רב כי פאר  
 מפאוותה לו או יצא כאשר האמנתי פניו הספר הנקבר

כחומר

כמיהר יוזדה זיל שישמש לדברים שבקרוושׂר כמו שיישמש  
גַּם כִּי בְּכִתְבָּתָם הָדוֹ שֶׁל רְבִינָה זיל ואחריו אכתוב מוקחה  
דוֹ אַחֲרַ טֻב שִׁישַׁמֵשׁ לְמִכְתְּבִיסׂ וְלְאַזְרוֹחַ שֶׁל חָוָל

*Cum non quevis atramenti species apta sit scribendis legi voluminibus,  
schedis frontalibus & liminaribus, agnum duxi atramenti confessioni,  
quam suppeditavit R. Mos. Maimonides in Hilc. Tphil. Secl. I & IV addere  
confessionem atramenti, quam accepta fero scribe Excellenti R. Imma-  
nueli Pontremulensi q. d. s. quod primo fuit confitum a scriba R.  
Meir Paduano p. m. aut prodit, ut opinor, e thesauris Scribae Illustris  
magnae, existimationis R. Lebuda p. m. qui eo usus est in rebus sacris,  
quomodo pariter usus est in scriptione earum atramento Rabbin. p. m.  
Tum vero describam confessionem atramenti alias egregii, scriptis &  
epistolis profanis inservientis. Pergit porro de atramento prioris ge-  
neris in rebus non profanis usitato:*

וחדרו הראשה הונצ'ה קה יב  
לטריות של מים חיים המצעיאים מין אדם וכשר בהטפה  
ראשונה בלבד כי המים חיים יצאו מעולם יותר טובים מחוץ  
ארונות ממה שיצאו מהין לבן הטוב והרווח שבינוין ויהו  
מוטפיכ נס מ על ידו ושראל בקשרו ובטהרה ושיט  
בתוכן ששאה אונקירות גנאלת די איסטריא כתושה מעט ולא  
בשלט שבפניהם ותשורה אותה תוך המים הנכווים שלש ימים  
מערת לעת בכל מօסורה ויטיב כרי שיטים החווים  
לא יסופו ויגשו והעלאת עשנים ועתיקות לrhoות אחר כך  
תרוחחים על אש קלה גחלול ובל עשן בכל זה  
הטסוסה כמו שליש שעה אחריו כן חסר המכסה שעיל חכלו  
ותתמי בחרחתן עד שיוסרו חזין אחריו כן תסנן וחטיב המט  
הנשאים בחברת הגנאלת ותחזרם אחריו הסנן נקיים מהגנאלת  
על האש כאמור ורוק להוכן שלשה אונקירות של זומני  
אראביקות כתושה ורקה עד לעפר ותגעגע המים תמר  
כמעט חז שעה אחר כך ורוק להוכן בהוון עד על אש קל ולא  
חוק שלש אונקירות של ויטריאלו רמנאי רך וכחותם נס הונצ'

ער לעפר והגען הרים אחורי גם בן כמו חצי שעה ואם תרצה  
שלא יעלה במשך החוף עופש ברו **שים** בתוכו כמעט  
בסוף עשייתו כוס אחר מלא חומץ כשר טוב וחוק או אром  
או לבן כמו שתרצה וגם אם ייטב בעין להבהיר או הרוי זה  
כח חלמון (ולא חלבון) ביצה מטוגנת וטיב וכשוחז  
הרוי זנן ומוכר מעל האש בשעה אחרת יותר כדי של **לה**  
יוקרש בו החלמן בעבר אמינות האש שבמים שים חלמון הזה  
המטוגן וטיב לתוכו עבר הכל **לה** וחור בשלם שבפניהם ובעשיהם  
הרוי זה קח לך הרים החום המטוגנים ברכד פעם אחרת  
ולא תקח הרים של **שה** או שלשה הטרפות כי מזוגת למן  
שיהיו הרים דוחזת ונכרום באחרונה יותר חזקם ממן  
שראו שקלוקלו בעין הקלפים או העורות בכירובת הרו הזה  
הלא בחטיפות המרובות ולכו לאבור הרים בנקלה ול **ה**  
יעשו בם השရות והרתוות **האמוריות אל-** בקושי

*Atramenti prioris confectio h. m. suscipitur: Accipe XII. libras aquarum vivarum, expressarum e vino rubro, eogenuino ex affusione prima tantum; etenim aquae vivae multo exprimuntur meliores e vino rubro, quam quidem ex albo, bona & spirituosisori vini specie; destillande vero sunt per Israëlitam in rellitudine & puritate sua. Infunde eis VI. uncias gallarum Ibyriacarum non penitus sed paululum contusarum. In aquis modo memoratis macerato illas tribus diebus a tempore uno ad alterum in vase probe obtecto, ne aquae vivae consumantur & evaporet pretrum roboris & virtutis eorum in ventum. Postea fervida fac illas ad ignem tenuem, clarum & sine fumo in vase hoc obtecto circiter tertiam horae portionem. Postmodum remove tegmen vase impositum, continuata eius servfactione, usque dum dimidiū eorū subsidat; Tum probe percolapo aquas residuas cum galla, & reduc illas post percolationem depuratās a galla ad ignem, prout dictum. Inferge 3 Gummi Arabici uncias, contusi & pulverisati, concussis perpetuo aquis per horae circiter dimidium. Hoc factō, inferge, dum adhuc igni apposita sunt leni non vero acri, 3 Vitrioli Rom. uncias tenuis, contusī in pulverem, posteaq; concutito aquas similiter per horae circiter dimidium. Si volueris, ne post*

post tempus aliquod atramento accedat mucor, infunde confecto fere operre aceti genuini ac generosi, sive rubri sive albi, poculum unum, prout tibi placuerit. Si placuerit splendorem huic atramento inducere, accipe vitellum (non albumen) ovi probe successati, cumq; fuerit atramentum frigefactum & ab igne semotum per horam unam & amplius, ne coaguletur in eo vitellus ob calorem ignis in aqua, indito vitellum tunc probe contusum & commisce illa omnia probe interse. In confectione vero huius atramenti accipe aquas vivas infusas una tantum vice, nec accipias aquas gemine aut trine destillationis; Exploratum enim est, aquas vivas modo memoratas postremum magis esse validas, quam convenient, & sic perfodere membranas aut pelles scriptura hoc atramento facta; & annon per multiplicatas illas affusiones perduntur aquae, nec sustinent macerationem aut fervefactionem, que dicta sunt nisi difficulter. Huic subnecet R. Abraham aliud atramenti genus, rebus profanis, usuque communis scribendis Epistolis ceterisque negotiis inserviens, ex aqua fontana, galla, vitriolo & gummi Arabico præparatum, fusioriq; stylo delineatum, deprehendi potest fol. CLXXXII. col. I.

### §. VII.

Tria sunt præ ceteris, quæ ludæi in genuina atramenti confectione in usu habuisse animadvertuntur, nobisque præ reliquis attendenda sunt, quod corundem sapissime in Talmude scriptisque Rabbinorum iniiciatur mentio; nempe קומוס & עבצין & קומוס sit, necdum inter ipsosmet convenit Iudeos. R. Moses Maimonides speciem quandam pulveris intelligit colorem nigrum inducentis, dum in Gittin c. II. Mischn. III. scribit: קומוס הוא כי species pulveris est, colorem atrum inducentis, Arabicæ vocatur. אליאן Idem inculcat in Megilla c. II. Mischnal. קומוס מין עפר יוך והוא מסכני הרוי ובערבי אליאן Species pulveris viridis est, colorando atramento inserviens, Arabinus vocatur. Eadem tradit in Schabbas c. XII. Mischn. IV. Quotquot tamen evolvere licuit e reliquis Talmudis Interpretibus, omnes vocem קומוס per Gummi expresserunt. R. Obad. de Bartenera in c. XII. Schabbas Mischn. IV. בסקריה מן אבן שוכב ארכום

D

בקומוס

בְּקוּמוֹת מִן עָפָר וַצְבָעָו שְׁחוֹר פָּא שְׁרָף אַילֵּן גּוֹמָא בְּלָעָן

*Sikra species est lapidis colorem rubrum inducentis, autem est species pulveris coloris nigri. Aliis est resina arboris, que alio nomine Gummi salutatur.* Idem in Megilla c. II. Mischna II.

מִן שְׁרָף וְבְלָעָן גּוֹמָא Species resina est, in lingua peregrina dicta Gummi. Vid. ad c. II. Sota Mischn. IV. c. I. Iadaim Mischn. III. conspirante R. Iom-Tobb in Tosephot ad II. alleg. R. Nathan in Sepher Aruch f. CXXXIX. col. I. גּוֹמָא קּוֹמָא פרוש הוּא השְׁרָף כְּמוֹ שָׁאמְרוּנוּ

קּוֹמָס כְּלַחֲרָפִין יִפְנִין לְדוּ וּבְלָעָן גּוֹמָא Gemara vocem

(in Cod. Schabb. f. XX.) exponit per קּוֹמָא, explicans, per resinam, prout dicere solemus: Quaelibet resina atramento apta est; in vernacula lingua dicitur Gumma. Cum vero variæ sint gummi resinæque species, non incongrue quæstio moveri posset: Quænam gummi species ex mente Iudæorum optima habita fuerit & atramento confiicio aptissima? Insignis est ad hanc quæstionem responsio in Gemara Schabbas c. II. fol. XXXII. col. I. טְרַפְּתָה כְּלַחֲרָפִין יִפְנִין לְדוּ וּשְׁרָף מְכֻלָּל Qualibet gummi species parando atramento est idonea, sed gummi טְרַפְּתָה omnium est prestantissimum. Verum & hoc valde incertum est, quid per טְרַפְּתָה innuant Gemaristæ. Pro opobalsamo excellentissima resinæ specie pugnare videtur Targum Onkelos, vocem צְרִי Gen. XLIII. 11. nec non Gen. XXXVII. 25. exprimens per טְרַפְּתָה. Nam quamvis Edmundus Castellus Lex. Heptagl. f. MMMCCCCXLII. Vatablo, Pagnino, Persa, & Vers. Iud. Germanica non abnuente, evincere allaboret צְרִי theriacam notare; nullum tamen impetrare poterit ab accusationibus Criticis assensem, cum theriaca demum ab Andromacho sub Nerone temporibus longe recentioribus inventa sit, teste Galeno l. de Theriaca ad Pison. Unde satius est, suffragantibus LXX. Vulg. aliisq; resinam צְרִי vocare, in primis cedriæ ob condienda demortuorum corpora valde adamatam, prout ex Plinii L. XVI. c. XI. haud ineruditæ coniicxit D. Christian. Noldius in notis ad Conc. Part. n. MDCCCLXXII. & Ioh. Clericus Comm. in Genef. XXXVII. 25. Certum proinde est, נְטָחָה a stillando dici, & resinæ esse speciem, idq; omnes confiteri. Mirum inde non est R. Salomonem Comm. in Exod.

XXX. 34. vocem vertere per Gummi: **נַטְף** הוּא צָרוּ וְעַל־  
 שאינו אלה שرف הנוטף מעצי הקטף קרי נטף ובלען גומי.  
*Nataph est Zori. Quia vero non est nisi resina stillans ex arboribus resiniferis, dicitur נַטְף & lingua exotica gummi.* Sequitur Raschium R. Isaac Abarbanel in הדרות פירוש ע' f. CLXVII. col. II. verum dicam ei scribit R. Abraham in Schilte Haggiborim c. LXXVIII. fol. LXXXIII. col. II. ita scribebat:  
 הוּא צָרוּ כִּי כְּתָבָתוֹ עַל הַצָּרוּ בְּכָל  
 מה שאמרו חכמי האומות כאשר שמעתם לי אסог אחרו  
 נב מלחריע לכם כי החכם השלש דץ אכ זול בפ' על  
 התורה פרשטי כי תsha כתוב ר'שו זול כתוב שנטף הוי  
 דנקרא צרו והוא הנוטף מעצי הקטף וברשות קורין אוו גומי.  
 ותמהר אני פאר מני שוואוי בקי בלשון ליש ולאטינו ול' ז  
 ראה שרשוי זול שלא היה בקי בלשונת ואלא פירש שם  
 שם אחר פרטיו בשם אחר כולל לכלה לשפט  
 כי כל שرف יהיה מורה שיווהו יקרא גומי בלשון לען.

*Postquam de Zori scripti in genere, quod tradiderunt sapientes gentium, prout perceperitis; non deero quin notum reddiderim, R. Is. Abarbanel p. m. Comm. in Legem sequentia tradere: Scribit Raschi p. m. נַטְף id est quod צָרוּ, stillans ex arboribus resiniferis, lingua aḡ exotica vocari Gummi. Valde mirum mibi vero est, quod, cum ipse fuerit exercitatus in linguis peregrinis nec non latina, non perficerit, Raschium in linguis his minus versatum, illic nomen Aromatis specialis appellare, nomine omnibus resinis communi. Quia qualibet resina, quecumq; tandem illata sit, dicitur lingua exotica Gummi. Quamvis vero balsamum notare haud pauci asserant, attamen R. Salomo in Schabbas fol. XXIII. ita ad hanc vocem commentatur:*

**קְטַף פְּרוֹנוּיָה שְׁרֵף יְעָרָה** כמו שאנו שׂין משל שְׁרֵף Ioh Christoph Wagenseilius in Sota c. II. p. 373. ad hanc R. Salomonis obscuram satis expositionem aliquo modo illustrandam confert illa Plinii L. XIII. H. N. c. XI. Gummi optimum esse dicentes, quod ex Ægyptia spina provenit, deterius ex amygdalis amaris & ceraso, pessimum e prunis confectionum. Hinc colligunt,

igit, reliquas inter gummi species, eam quam prunus exsudat, omnium minime tenacem esse, sicque atramento præparando accommodatissimam. Scrupulus tamen haud exigui Viro Cel. iniicitur momenti per illa, quæ deprehenduntur in *Tosephos Gittin* שְׁרָף per gummi expondere disertis verbis vetantia, dum verbis הרפנִי יְפַנֵּן לְדוֹיו שְׁרָף זְנוּמִי מְכוֹלָן subiiciunt: וְשְׁרָף קְטַפְתִּי יְפַנֵּן דְּדוֹיו זְנוּמִי לְאוֹדוֹן הַחֲרִיאָה שְׁרָף וְשְׁרָף קְטַפְתִּי יְפַנֵּן מְכוֹלָן דְּדוֹין וְדְרָן לְתַהְרָן זְנוּמִי אֶלְאָה בְּרוּ שְׁלָעֶפֶץ אֶלְאָה אַוְטָר רְתַתְּרָה חַלְוָה קְלִיפָת הַעַשְׁׁׂשִׁין שְׁעוֹשִׁין מְנוּמִי וְדוֹיו Non indigatur per שְׁרָף gummi, neq; enim mos est illud indere, nisi atramento e gallū præparato. Sed vero tradente Rabbenu Tam שְׁרָף est liquor corticum illius arboris, ex qua atramentum præparatur. Hæc a sententia pristina dimoverunt Virum Celeb. ut p. 1117. potius velit, שְׁרָף fuisse corticis arboris nigræ, v. gr. Hebeni, succum, maxime hanc ob causam, quod in Sota Doctores Talmudici confiteantur, literas redi indelebiles, gummi huiusmodi exaratas. Communiorem tamen etiam hic elegisse sententiam, forte consultius fuerit, quam novam, a ludæis forte nondum concessam, approbare.

## S. VIII.

Prater gummi memorari deprehendimus קנקנותם Chalcantum aliis notante Sepher Aruch Cracoviae 1592. 4to edito קנקנתום קנקנתון agedum ipsi nobis Iudei aperiant. R. Obad, de Bartenora in Iadaim c. I. Mischna III. קנקנותם Chalcantum vocatur Vitriolum, וריאולוּי ומזהור כען זוכירז quod pellucidum est instar vitri. Eadem habet in Schabbas c. XII. Mischn. IV. Megilla c. II. Mischn. V. R. Moses Maimonides in Schabbas c. XII. Mischn. IV. קנקנותם סכין הקומוס וכון נקרא בערבי קנקנותם est ex speciebus קומוטס eodemque modo appellatur in lingua Arabica, nec non in Gittin c. II. Mischna III. מילר עץ העבר המשריך מין מין est species pulveris denigrantis. Conspiratus R. Nathan in Sepher Aruch f. CXXXVII. col. III. & Autor Lib. מילר אהבה זמנית Mantua edit. 4to. in notis ad Maimonid. Hilcos Thphillin & Mesusa c. I. §. IV. fol. LXI. col. II. Notari tamen mere- tur

tur, quod R. Obad. de Bartenora in Sota c. II. Mischna IV. vocem hanc per אִירְמָנֶת expresserit וּבְלֹעַ וּדְרֵיאוֹלַו

Non negamus, nomen hoc soli literarum ר & traiectioni ortum suum debere, & atramentum sutorium innui, quo cum consiprat R. Abraham in Schilte Gibborim f. XXXIX. col. III. וּטְרֵיאוֹלַו רֻמָּאנוֹ נִקְרָא בְּלֹשׁוֹ לְאַתִּינוֹ אַסְטָרָמִינְטוֹס סְטוּרוֹאָס וּבְלֹשׁוֹ יְוּן נִקְרָא בְּלֹשׁוֹ לְאַתִּינוֹ אַסְטָרָמִינְטוֹס קָלְכָנְטוֹס Vitriolum Romanum Latinis dicitur atramentum sutorium, Grace χάλκανθος. Rotunde tamen R. Salomo in Cod. Sota c. II. Mischna III. fol. XVII. col. II. utrumque coniungit: קָנְקָנְטוֹרָה כְּנָקְנָקָנְטוֹרָה וּוּטְרֵיאוֹלַו אוּ אַדְרֵימַס קָרְזַן אָוֹתוֹ cum & veteres Græci atramentum suum duplicitis statuerint generis, ψευδησιών f. scriptorium, & χάλκανθος f. sutorium conf. Cels. I. VI. c. IV. Dioscor. I. V. c. CLXXXIII. Movent tamen Iudæi ipsimet hic loci vix satis sibi constantes dubia quædam, quæ habentur in Gemara Cod. Erubbin c. II. f. XIII. col. I. & Sota c. I. f. XX. col. I. Occupati hic sunt Gemarici in historia quadam recensenda, quam his verbis exprimunt:

אמר ר' יהודה אמר שמואל משום רם כשהייתי לומד תורה אצל ר' חייתי מטייל קנקנותם לתוכה היו ולא אמר לו ר' בר כשבאתך אצל ר' חי ושםשאל אמר לי בני מה מלאכתך אמרתי לו לבלה אני אמר לו כי בנו הוא זדור שלמלאכתך מלאכתך שמים היה שם החסיד אורת אחרת או חתני אוות אמרת נמצאתך אתה מחרוב את כל העולם כלו אמרתי לו דבר אחר איש לו אני מטייל לתוכה היו וקנקנותם שמו אמר לו וכי מטיילן קנקנתך לתוכה היו והתורה אמר ומזה כתוב שייכל למחרות מי קאל ופא קא מחרור לר' חמי קאמפל לאי מיבעא בחסויותם זיתורית רבקי אמר אלאי אפילו למייחש לזכוב רודלטינז אתי ותוב אהנירז דוריית ומוחק ליה ומשוי לוח ורש ר' אחר יש לו שאני Dicit Rabbi Iehuda dixisse Samuelem nomine R. Meir: Cum discerem Legem penes Rabbi Akiba, calcantum indidit atramento, Et ne verbum quidem hanc ob rem me monuit. Cum venisset ad R. Ismael, dixit mihi: Fili mi, cuinam rei

operam navas? Respondi ei: Scriba sum. Reposuit ille: Fili mi, cau-  
tus es tu, cum opus tuum sit opus divinum, ne deficiat in scribendo vel  
redundet litera unica; siquidem enim id reprehensum fuerit, panole-  
triam orbi induces universo (v. gr. si in vocibus אֱלֹהִים אֱלֹהִים  
DEus veritas est, deficiat litera una, erit: וַיְהִי אֱלֹהִים מְחֹרֶבּוּ דָּיוֹדְכָּר הַ  
mortuus est; aut si pro יְהֹוָה dixit DEus, scribas וְדִיחֵרְוּ דָּיוֹדְכָּר  
dixerunt Dii) Respondi ei: Praesto mibi est res quædam; indo atramen-  
to aliquid, cui chalcanthum nomen est. Reposuit: Undenam constat  
iniici chalcanthum atramento? Nonne Lex dicit: Et delebit (Num.  
V.23.) b. e. ita scribat, ut deleri queat; (at vero chalcanthum re-  
linquit post se colorē nimis notabilem) Quid iussit eum R. Ismael, ut hæc  
ei respondeat R. Meir? Reposuit ei hunc in modū: Non erat quæstio de de-  
ficiū & redundantia, id exploratum mibi abunde est, verum & ob hoc  
ipsum sollicitus sum, ne qua musca advolet, & angulo literæ & insidens  
cum deleat, indeq; conficiat, hinc re quædam utor, quam atramento  
iniicio, cuius nomen chalcanthum est. Sed vero ne hæc quidem extra  
litem posita sunt, dubitant enim quidam Rabbinorum, an chalcan-  
thum atramento sit iniicendum, cum id expresse in Erubbin l. c. prohi-  
beatur. Hanc igitur Talmudicorum prohibitionem ut effugerent Rab-  
bini, quæstionem moverunt: An quod Talmudistis dicitur אֲרוּמֵת  
idem sit, quod chalcantum alii vocant? In negativam propendet Au-  
tor Tzephos in c. II. Megilla Mischna IV. fol. XVIII. col. II prolixiori  
discursu hæc inspergens: רְכִיבָּב וְכִתְבָּב וּמְרָחָב סֻתָּה כְּתָב  
שִׁיכּוֹל לְמִחוֹת וְאֶם כֵּן שֶׁמֶן דְּקָנְקָנוֹם לְאוֹ הַיּוֹן אֲרָמִינֶת שָׁהָר  
בְּכָל יוֹם אֲנוֹ מְתָלוֹי אֲרָמִינֶת לְתֹךְ זְדוּוֹ שְׁלָנוֹ  
Scriptum est (Num. V. 23.) scribat & deleat; de Scheda Sotæ, b. e.  
inscribat, ut deleri queat; ex quo concludo, Chalcanthum cum Arment  
idem non esse: Arment enim perpetuo atramento indere mos est. Ap-  
plaudit tandem R. Samuel ben Meir in Erubbin f. XIII. docenti, in-  
telligendum hic esse vitriolum, quod contusum nigrem inducit.  
Idem sentit R. Moses Mikkozi in Sepher Mizvos Gadol Hilc. Thpill.  
f. CIV. col. II. כתובן בריו ומותר להת ארמנט בלהען בחוריו שאין זה  
וְסִכְמָנוֹם שְׁנָחָלִיקוּ עַל־זֶה

31

est ei indere Arment; neg, enim id idem est cum chalcantho, quo de  
litigant Doctores in Erubbin. c.I.f.XIII, & Gittin c.II.f.XIX. Quæ  
vero pro litis huius conciliatione adduci queunt, desiderantibus pandet  
*R. Sal. Luria* in Hilc. Seph. Thora f. X. col. I.

S. IX.

Non minus atramento confiicio Hebræis inservit galla, Græ-  
cis υπνικη, Hebræis vero עפנאי diæta, fructus qui nascitur in foliis ac  
ramulis quercuum. Neq; enim gallæ inserviunt tantum membranae  
Iudaorum libris apte preparandæ, memorante *R. Sal. Isaacide*,  
in Comm. ad Sota c. II. Mischna V. fol. XVII. col. II. *R. Moſe Maimo-*  
*nide* in Sota c. II. Mischna IV. & *R. Moſe Mikkozi* in Sepher Mizvos  
Gadol Hilcos Sepher Thora f. CVII. col. I. verum & in utroque a-  
tramento tam elegantiori quam vulgariori concinnando adhibetur. Il-  
lius molleculas piftas aquis gallarum macerari & scriptioni reddi aptissi-  
mas docet *Maimon* in Hilc. Thpillin c. I. s. IV. Huius vero Massæ  
gallas immisceri, res omnium confessione satis manifesta est. De eo  
solum lis oritur inter quosdam Doctores Iudaicos, an atramentum e  
galla nuce confectionum pro legitimo habendum sit, nec ne? Sunt com-  
plures, qui negativæ amplectuntur, nisi in primis illis quæ habentur in  
*Nidda* c. II. f. XX. col. I. & *Gittin* c. II. f. XI. col. I. Breviori stylo  
totam hanc controversiam & quasi in nuce proponit *R. Moſes Mikkozi*  
in Sepher Mizvos Gadol Hilcos Sepher Thora fol. CVII. col. I. II.  
אороּ דָיו שׁעַשְׁנִין מעֲכִים לְעוֹלָם  
הוּא לְחֵבֶד וְאַינְנוּ קְרִיְדָיו וְפְסָולָה הוּא לְכֹתֵב מִנּוּ סִפְרָה  
וְחַלְילִין וּמוֹזֹות שָׁהָרִי סָתָם דָיו יְבֵשׁ וְקַשְׁׂרָה כְּשַׁלְנָה כְּרָאוּמָרִין  
כְּפֶרְקָן שְׁנִי רְנוּדָה שְׁבָקָעָ קְרוּט שִׁילָן דָיו לְכֻרוֹק דָיו אַתָּה הָרָב  
וְזָהָרָה הַלְשׁוֹן מִשְׁמָעָ בְּקָרוֹת קְשָׁה וְבֵשׁ וְעוֹד שְׁנִינוּ בְּגַטְין  
בְּכַלְלָן כּוֹתְבִים אַתָּה תָּגַת בְּרִיּוֹ וּמוֹסִיף רָחִינִיה בְּנִמְרָא  
כְּתָבוּ בְּמַיִּ טְרִיאָה וְאַפְנָא כְּשֶׁר אַלְטָא אַפְנָא אַיִן וְזַהֲרָה  
*Atramentum ex galla preparatum, perpetuo humidum est, nec appelle-  
latur דָיו, prohibitum est illo conscribere Codicem Legis, schedasq;  
frontales ac liminares. Etenim atramentum nobis receptum siccum  
ac durum est. Pater hoc ex Nidda Sect. II, ubi mentio fit frangentis*

gru.

grumum atramenti, ad sanguinem eo explorandum, quod ipsum satis innuit grumum durum ac aridum. Amplius in Gittin S. Et. II. dicunt. Quavis re consignant libellum repudii; Atramento &c. Addit in Gemara Rabbi Chanina: si scripserit quis aqua pluviali & gallis recte scribat scriptio. Ergo galla non sunt huius atramenti. Satis exinde apparet, maximum huius sententiae fundamentum latere in illo loco Nidda c. II. f. XX. ubi mentio sit sanguinis specierum polluentium, ut & mentio eius, qui diffecuit grumum atramenti, eoq; exploravit sanguinem. Autor Tosephos in h. I. f. XX. col. I. hanc inde colligit: פָּלִי קְרוֹטָנָה דְּרוֹתָא וּבְרַקָּה בְּהָה פָּרָו קְרוֹטָנָה דְּרוֹתָה מִכְּאָן מִשְׁמָ' שדיו שלנו הוּא קְרוּיו דְּוּ מַרְקָטָה קְרוֹטָה משמע שהוּא יבש ואסור רות לכתוב סת ברוּוּ שֶׁל עפץ דיסקút grumum atramenti. Hinc discimus, atramentum usū apud nos receptum appellari רַיִם, eo quod appelleret grumum atramenti, quod necessum esse aridum. Prohibetur etiam Rabbenus Tam conscribere librum legis atramento e galla nuce parato, quia id perpetuo humidum est. Brevibus eadem inculcat R. Salomo ad verba citata ita commentatus: מִכְּעַד חֲתִיכּוֹתָן דְּוּ וּבְשׁ מִסְכָּבָת frusta atramenti aridi. Idem Autor Tosephos de Rabbenus Tam ita differit in Megilla f. XIIX. col. I. פָּרָשׁ רְבִנֵּן תֶּם שְׁהָרוּוּ שְׁלָנוּ הוּא דְּוּ גָּמוּר אַכְלָה שֶׁל עפץ לא הוּא דְּוּ שמע מינה ודעך דְּוּ לאזָה הוּא מעפץ ומטעם זה רצין לפסתול ספרי תורה הכתובי מרוּוּ של עפץ והאונקיות השיבו לו רוחם מיריו במים שבו בחן עפצים אכל אותו, שעשו מנוף העפצים וראוי הוא טוב ומכל מקום נרא/ דאותו שלנו הוּא עיקר דְּוּ כְּרַמְשֻׁמָּעַ פרק כל הוּא ורכבי אמי פָּלִי קְרוֹטָנָה דְּרוֹתָה וברק פָּי מְשִׁכְרַת חֲתִיכָה של דְּוּ וּבְרַק בְּיָה וּמְשִׁחָה וּבְאוֹתוֹ שֶׁל לנו שְׂיָר שְׁבִירָה וּלְאַתָּה בְּאוֹתוֹ שֶׁל עפץ Explanat Rabbenus Tam atramentum nobis receptum esse atramentum perfectum; verum atramentum e galla nuce preparatum nomine non venire (adducuntur hic citata a nobis supra ex c. II. Gittin) Inde concludo, principale atramentum non fuisset ex gallis paratum. Et

*Et hanc ob causam irritos pronunciat Codices Legis scriptos atramento e galla nuce parato. Reponunt vero ipsi Germani, hic sermonem esse de aquis, in quibus resolute sunt gallæ; id autem quod præparatum ex ipssimis gallis elegans esse, negari non posse. Nihilominus tamen videtur illud atramenti genus, quod apud nos receptum est, esse principaliſſimum atramentum, sicut docemur in Sect. II Nidda ex illis, que dicit Rabbi Ammai. Difſecuit grūmum atramenti & exploravit &c. i. e. fregit frustum atramenti illoq; inveſtigavit sanguinem nigrum. Iam vero in eo quod nobis in usu, fractione opus est, non in illo, quod preparatur e gallis, Conf. Haggas Majmoniis in Hilc. Sepher Thora c. I. s. IV.*

## S. X.

*Et tantum quidem curæ ad atramenti præparamenta postulant Iudei, considerandus nobis sua ſeſe ſponte ſiftit uſus atramenti, qui Iudeis non unius generis, verum varius est ac diuersus. Ante omnia inservit atramentum Volumini Legis describendo. Notum est, in Synagogarum ſuarum archivis volumen legis in membrana ſcriptum aſſervare, explicatumque quovis legere ſabbatho Iudeos. Maxima hic atramenti cura ſcribis iniungitur Iudaicis. Ez Hechaim M. S. in Hilcos Sota Vekinnam c. I. citatus a D. Wagenſeilio in not. ad Sota cap. II. Mifchn. IV. p. 367. de Lege describenda:*

*הרשות יורה ביו ובעורו;* **שין כ' אחר תלוק מהכשו**

*Descripturus Legem curā babeat & atramenti & membranarum admodum a ſe invicem diſtinguarum. Requiritur ante omnia, ut voluminis Legis literæ non niſi atramento exarentur ac pingantur. Sopherim, c. I. Mifchn. I. און כותבנ ספּר לֹא עַל שׂוֹרֶת בְּמִחְמָה טְמֵאָה וְלֹא נְכַרְצֵן וְלֹא עַל שׂוֹרֶת חֲזָה טְמֵאָה וְלֹא חֲזָה בְּגַדְעָן וְלֹא נְכַרְצֵן בשערן וְלֹא כָּלָח לְמִשְׁרָח מְסִינָה שְׁכַחְבֵּן עַל שׂוֹרֶת בְּמִחְמָה טְהָרָה וְעַל שׂוֹרֶת חֲזָה טְהָרָה וְתוֹפֵר וְכוֹרֵךְ בשערן הַלְכָה לְמִשְׁרָח מְסִינָה שְׁמַרְגָּלָן בְּקַנְתָה וְכַותבנ בְּיוֹ עַל הַעֲרָר שְׁחוֹר סְמֻך לֹא מִן הַמְּקָרֶה וְאַיִל כָּתֵב עַל הַſּׁפֵּר וּבְיוֹ Non est mos ſcribendi codices neg, in pellibus bestiarum immundarum, neg, in pellibus viventiis immundi; nec adaptantur nervis, nec ligantur*

tur pellibus ipsorum. Traditio est Mosis de monte Sinai, scriptionem suscipi in pellibus bestiarum purarum, ut & pellibus animalium purorum, colligari etiam ac involvi pellibus ipsorum. Traditio est de monte Sinai, lineaturam fieri per calatum, scriptionemq; suscipi atramento in membrana continua. Cui accedit id, quod deprehendimus: (Ier. XXXVI.) Ego vero inscribam libro, atramento. Consentit Baraitha Schabbas Sect. IV. f. CIII. col. II. Alio quodam liquore scriptum Codicem sacrum pro irrito & stimandum Iudaei unanimi decernunt suffragio. Maimon Hilcos Thphillin c. I. s. V.

**אָתָּה כִּן מֵה מַעֲטָה וְהַלְכָה שְׁנָאָר**

למשה מסני שיוויל חקובים בריו למעט שאר מינו צבעוניין כתין הארונות והירוק וכיוצא בהן שם כתוב בטפרום או בתפלין או במגוון אפלואות אהרים בשאר מינו צבעוניין או בחדב. *Hec cum ita sint, quid igitur excludit traditio hæc Mosis iniuncta in monte Sinai, iubens scriptionem atramento suscipi?* Resp. Excludit liquores reliquos, v.gr. rubrum, viridem, bisq; similes. Nam si inscriperit libris, phylacteriis aut schedis liminaribus vel unicam literam reliquo colorū genere, aut auro etiam, ecce tota scriptura reputatur pro profana. Respicit sine dubio Maimonides ad morem scribendi reliquis coloribus non Iudeis forte tantum, verum & gentibus aliis admodum receptum, dum aliquibus in more positum fuit literas librorum aut capitum initiales ære aut minio obducere, quin & auro exornare, alias vero colore plane diverso rubro putta aut viridi scripta sua consignare. Ut enim non ineruditate notat Ioh. Mabillonius L. I. de Re Diplom. c. X. olim materia scriptioni inserviens distinguebatur in Atramentum, Rubricam, aureum & argenteum liquorem. Purpureum liquorem e muricis sanie vel conchylii sanguine expressum, seu, ut alii volunt, ex arboris succo antiquorum scriptis inservuisse, notum est. Vid. Olaus Wormius Lib. III. Musci c. VIII. p. 258. & Gerb. Ioh. Vossius L. IV. Thcol. Gent. & Phys. Christ. c. XLVII. p. 1463. & ab hoc scribendi modo encaustum ac literæ miniatæ ortum trahunt, & quia peculiari privilegio non nisi in Imperatorum literis fvetus erat hic liquor e trito in pulverem purpuræ conchylio paratus, sacram encaustum vocari meruit, de quo plura dabant Ioh. Mabillon L. I. de Re Diplom. c. X. s. III. IV. p. 42. 43. Henr. Salmuth in not. ad Pancir. L. I. Tit,

Tit. II. p. 10. *D. Henr. Lincke* Disc. de Rubro, Nigro & Albo c. I. de Nigro § XIII. XIV. p. 42. & de Albo praloqv. §. X. seqq. p. 84. 85. nec non *D. Sam Stryke* Diss. de Cera Rubra & Sacro Encausto c. VI. p. 47. seqq. Argenteum liquorem antiquitus adhibitum discimus ex *Hieronymo* Praef. in Iobum T. III. Opp. p. 17. His tamen multo frequentiores fuere Codd. aureis consignati literis. Teltis est *Georg. Cedrenus* in Compend. Hist. Tom. I. fol. 351. & *Iob. Zonaras* L. XIV. Annal. T. II. p. 52. Edit. Paris. 1687. Constantinopoli in incendio periisse Draconis intestinum Homeri Opera aureis literis exarata exhibens; quibus associari potest Codex M. S. membranaceus Genesini aureis & argenteis literis exaratum exhibens, Bibliotheca Vindobonensis ci-  
mulum illustre, apud *Petrum Lambecium* L. II. Bibl. Vindob. addit. p. 1010. & L. III. p. 2. & *Dan. Neßelium* in Catal. MSS. Bibl. Vindob. Part. I. p. 49. seqq. Codicum deauratorum farraginem dabit *Iob. Ma-  
billonius* L. I. de Re Diplom. c. X. §. VI. & VII. Addi quoque meren-  
tur ea, quæ ex accurati MSS. indagatoris Bernb. de Monfaucon Palæo-  
graphia Gr. brevibus sicut *Iob. Clericus* T. XVII. Bibl. Chois. Artic. XI.  
p. 346. Verum quantum ad Iudeos, mirum profecto est, proliberi  
scripturam coloribus variis, in primis autem auro exornatam. Splen-  
didissimum Salomonis si intueamur templum, auri fatis ipsi templo  
insumum esse animadvertisimus. Arcam foederis intra arcas duas au-  
reas repositam fatentur Iudei *Schekalim* c. VI.

כִּי־זֶה עַשָּׂה בְּצַלָּאֵל  
אַהֲרֹן עַשָּׂא שְׁלֹשׁ תְּהִיכָּתָשָׁים שֶׁל זֶה אַחֲרֵי שֶׁל  
עַז וְנִתְן שֶׁל עַז בְּתוֹךְ שֶׁל זֶה וְנוּן  
*Quomodo fecit Bezaleel Ar-  
cam? fecit quasi tres arcas aureas, unam vero ligneam. Ligneam  
indidit aurea, & auream alteram imposuit lignea, labra vero superiora  
obduxit auro, ut instar uniuersitatis arcae. Obductam vero fuisse exi-  
stimat R. If. Abarbanel in CXC. col. II.*  
וְאַחֲרֵיו שְׁרִירָה צְפִיָּה הַוְּדָבָר רַק וּרוֹזָק הוּא שִׁיהְיוֹ שְׁלֹשׁ אַרְנוֹת כִּי יְהוָה  
שְׁרִירָה כְּכָר וּלְמִזְבֵּחַ וְכָלָו לְשָׁאָה אֶתְמָתָר אֶתְמָתָר  
עַל תְּהִיכָּות כָּל שְׁכָן עַם כָּכָר הַכְּפֹורָה וְהַכְּרֹובִית

*Mens mea est, auro obductam fuisse arcam. Incongruum enim est, si dicamus fuisse tres arcas; fuisse sane pondus illarum admodum grave,  
nec potuissent illas portare 4. viri in humeris suis, in primis si addatur*

*gravitas operculi ac Cheruborum.* Interim Legis volumen vel auro obducere, vel aureis exprimere literis plane prohibentur. *Sopherim* c. II. §. IX. אין כחבים בוחב מעשה בחרותו של אלכסנדרוס שחיו כל אוכratioתior כתובות בוחב ובא מעשה לפני חכמים ואמרו תגנ Non scribunt auro. Ferunt Pentateuchum Alexandri ita fuisse adornatum, ut, quotiescumq; nomen Dei occurreret, nomina illa aureis literis exprimerentur. Delata re ad Sapientes, decisum est, librum hunc e medio esse tollendum. Paria inculcant in *Gemara Schabbas* fol. CIII. col. II. שכתב שלא בדיו או שכח את האוכרות בוחב הרו אלו ונגנו Si quis liquore scriperit alio, quam atramento, aut nomina divina aureis expresserit literis, Codices illos occultandos pronunciant.

## § XI.

At enim novam hic moveri videoes a Iudaeis controversiam, an per hæc Talmudicorum placita omnis in universum scriptura aureis literis suscepta prohibeatur, an vero tantum nominum divinorum scriptio aureis literis interdicatur, reliquorum autem licita pronuncietur? Scripturam aureis literis adornatam penitus improbare videtur R. Moses Maimonides in *Hilcos Thphillin* c. I. §. V. Doctori tamen huic quedam opponit R. Ios. Kaaro in *Ceseph Mischne* ad h. l. f. LXXXIV. col. III. ac prohiberi tantum aureas literas in nominibus divinis scribendis evincere conatur. קשות רהניא בהכונה כתב האוכרות כבורך ונגנו משמע רוקא אוכרות אבל כתב אחרות אהזרות בוחב כborach ונגנו רוחה לאירועות אחרות שכובין, בוחב כסולן שמי לא כתבן בדיו ואוכרות דעתך משות רסורה שלוב מעלתן ראותו ליכתב בוחב كامل וחכ משפט מorthnia במסך טפחים פרק א' קמאנ אין כתובין בוחב Obiici potest Maimonidi id, quod traditur in *Massech. Schabbas* c. XII f. CIII. col. II. Codex in quo nomina divina aureis exprimuntur literis, occultandus est. Ex quo infero, interdici illum præsepe codicem, in quo nomina divina aureis exprimuntur literis. Proinde, si quis alias literas auro consignaverit, legitime habeb scriptura. Dicendum vero est, parem hic esse una cum ceteris iteris rationem, dum reliquarum etiam literarum scriptio auro suscep-

pta

*pro nulla redditur & plane illegitima, quia scriptio atramento suscepta non est. Enimvero verba Gemara loquuntur de eo, qui existimat nomina divina ob maiestatem ac excellentiam suam digna esse, que auro scribantur. Hic sensus clare satius dispallescit ex illis Cod. Sopherim c. I. §. IX. Nequaquam sribunt tintura auri. Non negamus equidem hunc scribendi modum sine auro Iudeos inter receptum fuisse, quamquam & hoc nobis probe notum sit, singularem quandam circa scripturam nominum divinorum curam a Iudeis requiri. R. Moses Maimonides in Hilcos Thphillin c. I. §. XV. XVI.*

הכרוב ספר תורה או כונה וכותב אכרח הפלין או מועה ובשעת כתיבת קיינה לא היה מפוזר וכותב אכרח מן האוכרחים שבchan שלא לשמן פסולין לפיקד והכותב את השם אפללו מלך וישראל שואל בשלהו לא ישובנו היה כותב שניים או שלשה שמות הר' זה מפסיק בוניהם ומשיב הטובל את הקולמוס לכתוב ארץ השם לא יוחזר מאותו השם אבל Qui scribit Codicem sacrum aut schedas frontales ac liminares, ac intra scriptio[n]is tempus non intendit scriptio[n]em, scriperit vero unum ex nominibus divinis debita intentione neglecta, pro irritis reputantur. Proinde si scribenti nomen divinum Rex ipse salutem dicat, nihil quicquam ei respondeat. Si scriba duo aut tria nomina divina immediate se invicem sequentia scriperit, quietcat inter ea, & tunc demum respondeat. Si scripturus nomen divinum calatum intinxerit, ne inchoet scriptio[n]em illico ab illo nomine divino, (ne forte plus atramenti insit calamo, sic scriptura minus apta emergat,) verum in litera antecedanea calatum recens immersum prius exerceat. Rationem rei huius si postules, clarius suppeditabit eam Arba Turim in Iore Deah c. CCLXXVI. f. LII. col. I. כתוב כלום לכתוב השם לא יוחזר מרד בשם לכתוב שמי יהוד עלי רבי רוי ולא יצא הכתוב מושך אליו יכוין שיטבלנו בתבה שלפני divino; ne forte plus atramenti insit calamo, & sic scriptura minus elegans prodeat, verum in litera proxime precedente calatum recens immersum prius exerceat. Enucleatus paulo rem hanc proponit R. Joseph

*Ioseph Kaaro in Ceseph Mischne ad Maimonidis Hilcos Thiphillin c. I.  
S. XV.*

וְהַטָּע שְׁצִירָה לְתֹחֶל מָאוֹרָה שְׁלֵפְנוּ הַיּוֹנוֹ מִשּׁוֹתָה  
שְׁמָא וְהָא רֹב דָיו עַל הַקּוֹלְמוֹס וַיְפֹל כְּשׂוֹכְתוֹב הַשֵּׁם וַיְצִירָה  
לְמוֹתָקוֹ או שְׁמַיָּא נְרָכָה שַׁעַר בְּרָאשׁ הַקּוֹלְמוֹס וַיְפִסְרָה רַכְתָּב  
*Ratio autem, ob quam necesse est incipere a litera nomen divinum antecedente hæc est, ne qua calamo nimium insit atramenti quod excidat in scriptione nominis divini, opusq; sit (atramenti guttam) radere, aut ne crene calami pilus adhæreat, ac scripturam fædam reddat. Quodsi ramen summam scriba curam calamus delusisset, atramentum scriptioni nominis divini adhibitum cura peculiari radendum erat, ut non mini divino debitum honor exhiberetur. Rem omnem ex Menachos c. II refert R. Ioseph Kaaro l. c. ad s. XVI.*

הַטוּחָה בָשֵם גּוֹרֵד אֶת  
מָה שְׁכַבָּה וְחוֹלוֹתָה מִזְרָחָה שְׁגָרָד וְכַתְבָה הַשֵּׁם עַל מִקְטָן  
הַגָּדוֹר דָבְרֵי יְהוָה כְּלָמָרָא אֶל אֶתְכָבָשׂ בֶּן רֵי שְׁחוֹתָה לְנֵזֶם  
לְכַתְבָה גּוֹרֵד בְּתַעֲרֵר שִׁיחָה וְפָה מִקּוֹם הַגָּדוֹר אֶבֶל לְאֵין יְמָחָקָנוּ בְעֹור  
שְׁחַכְתָּב לְחֵזֶק שְׁלָא וְחוֹהָנה נָאָה רָבִי יְצָחָק אָמָר אַף מַוחַק וְכַתְבָה  
רָבָה בְּרָבָה חָנָא אָמָר רָבִי יְצָחָק בָּרָ שְׁמָאָל בָּרָ מְרָחָא וְלִכְתָּב  
מַוחַק וְכַתְבָה וּכְזִין רַאֲסִיקָא וּמִתְּרָא לְכַתְבָה הַשֵּׁם עַל הַמִּחְקָה  
מִכֶּשׁ שְׁכוֹתָבִים אָוֹתוֹ עַל הַגָּדוֹר וְאַפְלָיו בְּחַפְלִין וּמוֹזָרָגִים וּבְלִיכְרָבָר  
שִׁיחָה כְּחֻבוֹי Qui errorem commiserit in scriptione nominis divini, radat id, quod scripsit, & superne appingat id, quod rasum est; Inscriptibat vero nomen DEi loco scripture rasæ, hæc est mens R. Ie buda q. d. nisi scriperit nomen τετραγυγάμικατον, quod ipsi scribendum fuerat, radat scalpello, ut sit pulcher locus rasure; verum non debeat illud, madida adhuc scripture, id enim indecens foret. R. Isaac dicit, licitum esse si quis scripturam deleverit, ac tunc scripserit. Rabbanus Channa fert dixisse Raf Isaac filium Samuels nepotem Marta Traditionem esse: Licite radi & scribi. Cum itaq; inde concludamus, licitum esse inscribere nomen divinum loco rasæ, (scriptura adhuc madida) quanto magis licita fuerit inscriptio loco rasæ (scriptura exsiccata) sive fuerint schedæ frontales sive liminares, dummodo scriptæ fuerint ordine receptæ.

## §. XII.

Inconclusæ proinde antiquitatis ritus est, quo Iudæi Codicem sacrum atramento scribendum monent, & prout procul dubio a Mose servatus, ita nec sequentibus neglectus fuit temporibus. Omnia instar ea sint, quæ ex Ier. XXXVI. 18. produci queunt de Baruchō Ieremiac amanuensi Codicem igne deletum Ieremia dictitante describente de novo. Neque enim incongrue ex his Ieremiac verbis descriptionem non solum legis, verum & librorum sacrorum elicere siveverunt Iudæi. Nec minus eo tendunt illa, quæ eleganter & exaspiciat in hunc locum differuit R. Isaac Abarbanel in פרוש על נביאט אהרוניים fol. CXXXVI. col. III. Præmitit hanc initio questionem:

השאלה השנירז בטור ששאלו הרומים לברוך איך כתבה ארן  
כל רברים אלה מפיו ותשיבו להב מפיו יקראי אל את כל  
הרבריסת אלה ואני כותב על הספר ברונו כי הנה השאלה  
יראה שאין בה צורך כי הלא ירע איך יכתוב האורט מה  
שאומרי לו ומה השאלה על זה גם התשובות יראה חfine  
מכלי מלך מפיו יקרא אל ואני כותב על הספר ברוי ומילא ירע  
בכל אלה ומה וחזרו שחרוש אליהם הלא ירע שכותבים ברינו

Quæstio II. de eo agit, quod quæsiverunt Baruchum Principes. Quomodo scripsisti omnia verba ista ex ore eius? Et qualis eius fuerit responso: Ore suo prælegit mihi omnia hæc verba, ego autem ea libro inscripti atramento. Certe enim questione hæc supersedere potuissent. Enimvero numquid latere eos poterat, quomodo homines scribere soleant, quæ scribi iubentur. Qualis vero hac de re est quæstio, talis est et responso, sane insulfum hoc videtur & minus accurate dictum: Ex ore suo dictavit mihi, ego vero libro inscripti, id est atramento. Cuiam vero hæc talia ignota sunt, & quid sibi vult novitas illa, quam eeu novam proponit; nonne norant descriptionem atramento suscipi? Solvit dubium hoc R. Isaac Abarbanel fol. CXXXVII. col. II.

אל

אבל אמרת הענן לך והוא שכאשר ברוך הנור להם  
 שהוא כתוב כל הורכרים אשר הוא במנילה לפי שם שמע אורה  
 מריםיו חחשו השרים אם אמר ירמיהו הורכרים האלה אל  
 ברוך ברוך כללות ובברוך מעצמו סור הורכרים והניהם במגלה  
 כאשר הם ואם היה הדרך כן לא יחושו כלך לפרט  
 הורכרים כי אם לכלהות הענן או אם כתוב אותם מלה במלחה  
 בעית שהיה אומר אורים ירמיהו והיו אם כן כל הורכרים ונבי  
 נכואות וויצואים מפי ירמיהו לא ולורת זה ומפני זה שאל אל  
 ברוך הנור נא לנו איך כתבת את כל הורכרים האלה  
 מפני רל אם אמרם לך בכללות ואיך זכרת אותם כולם  
 ובחרכיהם הוא שחתה מוסיף או גורע על רבריו או אם  
 כתבת אותם מלה במלחה מכל היוצא מפני והוא השיבם שלא שמע  
 הורכרים בכללות אבל מפני זה קורא אליו מלה במלחה  
 ובדרכו הוא היה כותב על הספר והסתכל כי לא אמר ואני כתבתי  
 אלא ואני כותב על הספר בלשון הוודח לך שכאשר קיים  
 היה אומר דבר אחר וזה הוא לפניו כותב אותו מיר באטן שלנה  
 שם ברוך במנילה והודח אלא תרווי והכתובה כלבר וככל  
 בשאר היה מריםיו ואם כן הורכרים כולם היו מפני  
 ולא היה אחד מהם מכירוך וחותרה עם זה השאלה השכנית

*Verum negotium hoc vere ita se habuit: Postquam ipsis Baruch annun-*  
*ciasset, se scripsisse omnia **רבריך** quae fuerunt in illo libro, quia*  
*ea audiverat a Ieremias, percontati sunt aula regia magnates, an ver-*  
*ba ipsa in genere tantum (seu quoad sensum) ipsi suppeditarit Ieremi-*  
*as, Baruch autem proprio Marre disponueris ac collocaris verba ista in*  
*libro, prout expressa legebantur? Si ita res se haberet, non opus foret*  
*tanto tempore se sollicitos esse de verbis, quam de sensu verborum; An vero*  
*excepiter illa verbotim, ita ut ei Ieremias illa omnia dictarit in calatum,*  
*& sic omnia illa verba sint verba prophetie egressa ex eloquio Ieremias,*  
*non ab alio quoquam? Inde explorarunt Baruchum: Indica quaso no-*  
*bis, quomodo scripseris omnia verba illa ex ore eius? b. o. si dicta-*  
*vit illa tibi Ieremias tantum quoad sensum, quomodo illorum omnium*  
me.

meminisse potes? Necessum quippe fuit, ut adderes ac detrahères verbis eius. An vero scripsisti ea quoad verba singula secundum ea que locutus es? Respondit ergo illus, non exceperisse se res illas quoad sensum, sed verba ipsa dicitantis, hecque ipsa verba libro inscripsisse. Adverte, non dicere Baruchum, & ego scripsi; verum: & ego fui sribens super libro, in praesenti, q. d. cum Ieremias verbum unum proferret, se coram ipso illud scripsisse statim, qua ratione nihil volumini nisi addidit Baruchus, nisi atramentum & characteres tantum, reliqua vero omnia a Ieremias fuerunt. Quia cum ita sint, verba omnia fuerunt ex ore eius, nullum vero illorum a BarUCHO. Quo ipso solvitur quæstio secunda.

Quæritur vero: Utrum vitriolum etiam a Volumine Legis scribendo removeri debeat? Iudei sane Palæstinam incolentes Pentateuchi Codd. atramento & galla vitrioloque præparato Arabibusque dicto consignatos pro illegitimis habent. Verum perstringit eos R. Moses Maimonides in Sota c. II. Mischna IV. usum eius illicitum non esse, his evincens:

ראית בארץ ישראלי מרוחיקן כתיבת ספרי תורה באחד ממיין הרוי נקרא בערבי חיבור אלא ברוי ממש ומוי שחרור להם בכר איט אצלי אלא טועה הרבה מאר שאמור בספר תורה הכתובים באלהיכר פסולות מפני שאינם נמקחות והננה טעה בפסק ההלכה שהוא לאי ידע הורכים שמתיקיהם בהם פסק ההלכה מן ותלמודו שהרב הakhir הבא בתלמוד בוחר הענן והוא מה אמרו בכלי טolian קנקנות חוץ מפרשת סוטה שבמكرש ואחר שהרב הוא כר אין אצליינו מלה שיאסרו כתיבתו באלהיכר אלא בפרשיות סוטה שבמקרש בלבד

למה שאמור ותורה Expertus vero sum in Palestina prohiberi scriptorium Pentateuchi illo atramenti genere susceptum, quod Alchibber Arabibus salutatur, nec approbari, nisi atramentum propriæ sic dictum. At qui hæc illos edocuit, me iudice, insigniter lapsus est, dum Codices Legis atramento Alchibber exaratos nibil habuit, eo quod deleri nequeant. Erravit ille ignorans, in quo consistat ultima Talmudis decisio. Nemirum extremum in Talmude locum hæc occupant: Curvis atramento ebalcanthum indigopos est, isto solum excepto, quo verba Sotæ inscribuntur

tur in templo. Quae cum ita sint, nihil est, quod scriptionem per Alchibber factam prohibeat, nisi in Scheda Sotæ, quæ in templo servabatur, quia de ea dicitur: (Num. V. 23.) Et delebit.

s. XIII.

Geminan nihilominus sunt, quæ ritum hunc de scriptura atra-  
mento solo suscepimus in conscribendo codice sacro dubium reddere vi-  
dentur. Primum est, quod Fl. Iosephus L. XII. Antiqv. Iud. c. II. e-  
narrat de Exemplari Legis ab Eleazarē Pontifice ad Regem Ptolomæum  
transmisso per LXX. Seniores illud transferentes & Ptolomæo versionis  
cuiusdam V. T. Græca desiderio summopere flagranti eundem codi-  
cem exhibentes. Fuisse hoc exemplar publicum inque templo asser-  
vatum, colligi videtur ex Eleazaris ad Ptolomæi literas responsione:  
Ἐπὶ λέξιμουν δὲ καὶ Πρεσβυτερος ἀνδρας ἐξ ἀπὸ Φυλη̄ ἑκάστης δε πεπόμ-  
φαισι ἔχοντας τὸν νόμον. ἔται δὲ τῆς σῆς ἐνστρείας καὶ δικαιοσύνης τῷ  
μεταγυγαφέντα τὸν νόμον εἰς ἡμᾶς ἀποτέμψαι μετὰ ἀσφαλείας τῶν  
κομιζόντων. Selegimus etiam Seniores sex ex tribu quavis, quos ad te  
lege insfructos misimus. Tunc autem pietatis erit, tuque iustitia, legem  
transcriptam nobis remittere, curabis etiam, ut isti viri nobis illesse  
restituantur. Exemplar autem hoc aureis consignatum fuisse literis,  
ex sequentibus Iosephi concluderelicit: Ως δὲ περιῆλθον μετὰ καὶ τῶν  
ἀδέρφων οἱ γέροντες, καὶ τὰ βασιλεῖα κομίσας ὁ Ἀρχιερεὺς ἀντοῖς ἔδωκε, καὶ  
τῶν διφθερῶν, αἵ, ἐγγεγραμμένας ἔχον τὰς νόμους ΧΡΥΣΟΙΣ ΓΡΑΜΜΑ-  
ΣΙΝ, επηρωτησεν ἀντεῖς περὶ τῶν βιβλίων· οἵ δὲ ἀποκαλύψαντες τῶν  
ἐνειλημάτων ἀπέδειξαν ἀνταῦ Θαυμάσιας ὁ βασιλεὺς τῆς Ιερουσαλήμ· Ταῦτα  
ὑμένας, καὶ τῆς συμβολῆς τὸ ανεπίγυνων ύπο γάρ ἥρμοσο, καὶ τὰ ποιη-  
σας καὶ σόντας πλεῖστον, χάραν ἐπεν ἔχειν αὐτοῖς τε εἰλιθοῖς καὶ μείζονα τῶν  
πέμφαντι προ δὲ πάντων τῶν θεῶν ἢ τὰς νόμους εἶναι συμβεβηκεν. Cum  
autem Seniores illi venirent, cum muneribus a Pontifice transmissis, nec  
non cum membranis, legem aureis literis expressam gerentibus, pri-  
mum de libris eos sciscitatus est. Cum vero ex involucris eisdem pra-  
tractatos obtulissent, diu multumq[ue] miratus est membrane subtilitatem,  
Et commissuras in ea ita latentes, ut visu discerni non possent; Gra-  
tias igitur illis reculit qui venerant, maiores ei qui miserat, maximas  
Deo, cuius legem attulerant, Paria his leguntur apud Aristeaem de  
LXX.

LXX. Interpretibus fol. XX. παρελθόντων δὲ σὺν τοῖς ἀπεισαλμένοις  
δάχους καὶ ταῖς διαφόροις διφθέραις, εἰναῖς η νοροθεσία γογγαμμένη  
ΧΡΙΣΤΟΓΡΑΦΙΑ τοῖς ιεράκοις γεδίμασσον. Dubium hoc de Codice Vet.  
Test. aureis literis consignato illi facile solvere se posse existimant, qui  
urgent, non ex exemplari quodam Hebraeo, verum Aramaeo LXX.  
versione suā transtulisse. Collimat eo iudaeus magni nominis R. Asarias  
in Meor Enaim P. III. seu Imre Binah c. IX. fol. L. col. II. hæc inferens:

תְּלִיא תְּרָאֵת שְׁחַבְיוֹא לְ סֶפֶר תּוֹרָה בְּאוֹתוֹתָי מִזְחָבוֹרָה  
וַיְרוּעֲוָתוֹ חֻכְרָות בְּרַבְקָ אֲשֶׁר לֹא כְּהַלְמָרָ בְּסֶפְרֵינוּ וּלֹפֶט אָוֹמֶר  
הַדְּרָשָׁת אָוֹתָו הַסְּפָר הַמְּתוּרָגָם שְׁחַבְיוֹא אַלְיוֹ הַזָּהָרְ מַצְיוֹ אַצְלָתָ  
מִן הַנְּטָחוֹתָן הַרְאָשׁוֹנוֹת שְׁזַכְרָנוֹ וְאַוְלָי וְהַתְּרָבָ אָוֹתָו אַיּוֹתָ  
נְכָרֵי כְּחַלְמָנִי הַמְּלָכָה בְּמַטָּסָה יְוָמָא שְׁעַשְׂתָּחָרָ נְבָרֶשָׁת וּבְמַסְכָּתָ  
סְׁוּפְרִיְּתָ פָּק אַיִתָּא אַין כְּוֹתְבֵין כְּוֹתֵב מְשָׁאָה בְּתוֹרוֹתוֹ שְׁלָטָ  
אַלְכְּסָנְדוֹרָס אֲשֶׁר הוּא לְרוּתִי יְנָא אַלְכְּסָנְדוֹרָ אֲבִי הַוּקְנָטָ  
פְּמַלְכִי חַשְׁמָנָא שְׁחוֹ כָּל אַוְרָוִתָּה כְּתָבוֹת בְּזָהָב וּבְזָבָן  
מְשָׁאָה לְפִנֵּי דְּרָכָמִים וְאָמְרוֹ תְּגַנָּה Idem clare satis exinde dispallescit  
quod adduxerint librum legis scriptum literis aureis & membranis glu-  
tine connexis, qui mos non obceinet in codicibus nostris. Unde conjectu-  
ra satis sit evidens, librum illum Chaldaicum, Prologeo allatum,  
fuisse apud illos expressum ex prioribus exemplaribus, quorum mentio &  
nobis iniecta est. Et forte illam voto obtulit Gentilis quidam, quomo-  
do Helenam Reginam candelabrum obrutissime meminimus in Masscher Io-  
ma. Etenim in Cod. Sopherim c. I. legimus: Non scribunt Librum Le-  
gis auro. Inde cum Alexander (quem exissimo esse Ianneum Alexand-  
rundrum patrem Hycani ex Regibus Haemoniorum) Librum Legis habe-  
ret, cuius nomina divina aureis exarata erant literis, Sapientes re-  
audita, Codicem hunc occultandum decreverunt. Conf. R. Gedalias  
in Schalscheles Hakabbala f. XXIV. col. II. Ceterū non miramur Iose-  
phum talia referre, qui fidem suam in multis satis suspectam esse com-  
probavit, quin omnem apud eruditos autoritatem fere decoxit. Con-  
stat id abunde ex duplice Ezechielis Codice, quorum alterum deperdi-  
tum alterum hodienum servari tradit, L. X. Antiquit. Iud. c. VI. at  
hunc Iosephi fucum solide dissipavit Stephanus le Moyne in not. ad Varia

Sacra p. 333. seqq. aliosque Iosephi n<sup>o</sup>vos detexerunt **Petrus Cunaeus**  
**L. III. de Rep. Hebr. p. 373. 374.** & præ ceteris **D. Thom. Ittinge** in  
 Præf. Edit. Iosephi Coloniae MDCXC<sup>1</sup>. editi fol. 42. seqq. Sitamen fatendum quod res est, omnino statuendum Codicem hunc, vel  
 ob hoc ipsum, quod literis aureis esset instrutus, pro sacra*to*e, inq;  
 templo asservato haberi non posse, sed dicendum potius, codicem il-  
 lum privatis usibus inserviisse, in privatum commodum fuisse descri-  
 ptum ac extra Synagogas adhibitum; & in hac quidem sententia nihil  
 deprehendimus, quod Iosepho contradicat, qui Codicem hunc ab  
 Eleazarō Regi Ptolomæo commendatum quidem satetur, attamen tan-  
 tæ sanctitatis eundem fuisse nuspia insinuat. Quo ipso erroris abun-  
 de arguitur **Ioh. Leidenius** olim Prof. Ling. Hebr. Ultraiectinus, qui  
 ut Editionem Bibl. Hebraicorum typis Iosephi Athiæ Amstel. 1667.  
 evulgatam, ob curam in Codd. MSS. collatione adhibitam commen-  
 daret, codicem quedam MSS. in pref. horum Bibliorum capit<sup>e</sup> præ-  
 missa ex hoc commendandam sibi censuit capite, quod codex ille aureis  
 exaratus esset literis. Verum acri styli in Leidenium hic invehitur  
**Rib. Simonius** Lib. I. Hist. Crit. V. T. c. XXIII. p. 116. errorem hunc  
 Leidenio his iuste quamquam paulo acrius exprobans: *Qui ergo pre-  
 bos* (Codd. MSS.) *a minus exactis discernas, inspicendum est, num  
 characteris eorum omnino simplex sit, bene conformatus, & in quo nil  
 insolens appareat.* *Hac in parte Leiden suam imperitiam prodit, lau-  
 dando Codicem quendam a Iudeis consultum in adornanda suorum de-  
 quibus supra, Bibliorum Amstelodamenium editione;* propterea quod  
 aureis characteribus exaratus sit. *At in sua Synagogis non alios quam  
 atramento scriptos ferunt Iudei, privati quidem, ut libet, eos scri-  
 bunt.* Alterum, quod cuiquam scrupulum iniicere posset, *Codex*  
*Esther* est, quem peculiari volumini inscriptum festo Purim in Syna-  
 goga prælegere Iudeorum mos est; Eundem vero multo ornatu de-  
 scribere solent Iudei, & non solum floribus ac ornimentis variis ve-  
 rum & imaginibus amoenissimis conspergere, ut imaginum elegan-  
 tiam scribarum manus affectasse videantur. Licuit nobis elegans Me-  
 gilla talis exemplar in Bibliotheca B. Wagenseilii intueri, magni ab  
 hoc viro æstimatum, nitide scriptum, & figuris ac imaginibus vario  
 colore variegatum, hisce nostris tractare manibus. At vero quem-  
ad

admodum alias Iudæi singularem quandam libro huic concedunt prærogativam, eundemque ab aliis etiam in lectione ipsa distingvunt, ut & R. Moses Maimonides in Hilcos Megilla Vachanucha c. II. s. XVIII. scribere non detrectet: **כל ספרי הנביאים וכל הכתובים** עתידין לבטל ליטוריות המשיח חז' מגלה אסתר והרי היבן קיימת חמישה חומשי תורה וכחលות של תורה שבעת פה שאין בטלין לעולם ואף עפ' שכל זכרון הצורות יבטל שנ' כי נשכחו הצורות הראשונות וכי נשתמרו מעין ומי הפורים לא ובטלו שנ' ומי הפורים האלה לא יעכזב מתר ויהווים זכרת לא יסוף מורה. *Libri prophetici omnes, omniaq[ue] bagiographa cessabunt temporibus Messiae, excepto Codice Ester; Ille enim perdurabit sicut Pentateuchus & constitutiones legis oralis, que non cessabunt unquam.* *Quanguam enim omnis memoria angustia pressorum cessatura sit, prout dicitur (Ez. LXV. 16.) Oblivioni tradentur angustie priores, & abscondentur ab oculis meis; Attamen dies Purim non desinat, quia dicitur: (Estb. IX. 28.) Et dies Purim non perituri sunt e medio Iudeorum, & memoria eorum non cessabit a semine eorum.* Ita etiam in describendo hoc volumine elegantiam ubivis mirum in modum affectant, ac idem accurate delineare solent, idq; sine distinctione describere, quale exemplar antiquissimum in membrana descriptum, lignoque circumvolutum, omnibus accentuum, vocalium & distinctionum notis destitutum recenset Job. *Buxtorffus de Punct. Antiqv. & Autor. part. I. c. IV. p. 49.* Et eiusmodi prærogativas complures Estheræ volumen agnoscit. Vid. D. Aug. Pfeifferi Tract. de Usu L. S. Catholico p. 4. Attamen figuræ hæ, ac diversi coloris usus marginem Megillæ, non ipsum textum voluminis huius exornant. Diserte enim R. Moses Maimonides in Hilcos Megilla Vachanucha c. II. s. IX. אין כותבן העניליה אלא ברו על הנoil או על הקלו כספר תורה ואם כתבה במי עפץ וקנקנו כשררי כתבה בשאר מיין צבעוניים פסולה וצירוכיה שרטוט כיוורא עצמה ואין הער שלה צריך לעבר לשמתה היתה כתובה על הנoil או על עור שאית מעור או שכתבה Non inscribunt Megillam nisi atramento pergameno aut membrana more voluminis legi. Si quis scripsit F 3

*rit eam aquis gallarum aut chalcante legitima est scriptio. Si reliqui colorum generibus, illegitima. Necessaria hic etiam est lineatura, sicut in lege ipsa, neque tamen pelli eius preparatione sub intentione voluminis sacri facta indiget; Si inscribatur charte aut pelli nondum subacte, aut si quis scriperit eam Gentilis aut Epicureus, pro irrita habeatur. Vid. Arba Turim in Orach Chaiim c. DCXCI. f. CCL XXX. R. Mos. Mikkosi Seph. Mizvos Gadol Hilcos Megilla f. CCL. col. II. Clarius paulo colores illos exprimunt Talmudici in Megilla c. II. Mischna II. fol. XVII.*

*דורתה כתובה בסם ובסקרא ובគומוס ובקנקנותם על הניר ועל הרמהרא רין יצא עד שתהרא כתובה אשוריית על הספר וברו.*

*Si inscripta fuerit auripigmento, minio, gummi, chalcanto sive charta sive diphthera, liber non evadit ab obligatione, nisi lingua Assyriaca inscripta fuerit libro ope atramenti. Quantu vero attinet scripturam aquis gallarum chalcantoque factam, Maimonidem Talmudistis contradicere videamus, dum scriptionem chalcanto factam legitimam pronunciat, Talmudistæ vero pro irrita declarant. Maimonidem ergo hoc non e Talmude ipso, verum ex illo precepto elicere, quo parem Legis & Megillæ statuunt scriptionem, obseruat R. Iom Tabb. Bar Abrahams in Maggid Mischne ad Maim. c. II. Hilc. Megilla §. IX.*

*ומש במי עפץ  
וקנקנותם כשרות אעפ שלא נזכר שם פשות דיויאז ונלמר מרדן קרל וחומר מספר תורה כמו שנהכאר פא מוחלות תפלין ורעד שבקנקנותם פטולין וכמימיו כשרות ושם יתנבר*

*Quod dicit Maimonides: Si scripserit aquis gallarum & calcanto, scriptio ritia est; hoc quavis non memoretur ibi explicite, elici tamen potest ex via argumentandi a minori ad maius, a libro legis petitio; sicut clarum evadit ex c. I Hile. Thphillin. Obserua autem, quod chalcanto facta, scriptio nulla sit, aqua autem eius legitima, id quod ibi exponitur. Eadem via conciliare conatur Maimonidem cum Talmudistis R. Joseph Kaaro, in notis ad Schülchan Aruch in Orach Chaiim f. CCCXVII. col. I. רע שבקנקנותם פטולין ובמימיו כשרות Nota megillam chalcanto scriptam irritam, verum aqua eius scriptam legitimam haberi.*

## §. XIV.

Ordo poscit, ut ad atramentum in delineatione phylacteriorum & Mesuſæ seu ſchedarum liminarium uſitatum, & quid circa illud obſervatum fuerit, progrediamur. Phylacteria Hebreis quid notent vel illis notum putamus, qui antiquitatem Hebraicam a limine ſalutariunt; Sunt nempe theca e corio confecta, in quarum capſulis diſtinctis ſcheda quædam e membrana confecta certa legis verba exſcripta gerunt, & tempore precum a Iudeis fronti manuique finistræ međiantibus loris decenter complicatis alligantur. Mesuſæ autem ſunt ſchedæ membranaceæ poſtibus ianuarum affixa; theca oblongæ incluſæ, exterius vocem שְׁמָרָה demonstrantes, interius vero textus quodam Biblicos inſcriptos gerentes; Avidos hic abunde ſatiabunt R. Moſes Maimon, in Hilcos Thphillin c. I. II. *Arba Turim* in Orach Chaiim c. XXV. f. VIII. R. Moſe Mikkorai f. CV. ſeqq. R. Abendana in Michl. Iophi Exod. XIII. 16. Sam. Petitus in Var. Leſt. c. X. & XX. Thom. Goodwin in Moſe & Aaron L. I. c. X. & XX. ſeqq. I. C. Wagenseil Comm. in Soṭa Exc. c. II. ſect. I. 10. quoſque toto faceo admetur D. Aug. Pfeiferus in Antiqu. Hebraic. c. XI. §. III. T. II. Opp. p. 1010. In antiquitate phylacteriorum explorandam cum Iudeis hac vice in arenam nos non dimitemus; Satis profecto antiquam illi ad minimum fingunt, qui inquirentes, quid tandem DEus Moſe oſtenderit, dum non faciem suam intuendam, ſed tergum daret, accurate ſatis ſe respondiffe putant cum R. Sal Iarchi in Exod. XXXIII. 23. זְדֹאַת קָשֵׁר הַפְּרִיָּן Demonſtravit (DEus Moſe) modum innodandi phylacteria. Verſio Germ. Iudeorum cum Comm. fol. LXIV. col. I. ita exprimit: Er wies ihm den Knopfen von Thphillin. R. Aben Ezra in h. I. R. Leo in Gur Arieh fol. CXVI. col. IV. ex Talm. Berachos fol. VII. col. I. & Menachos f. XXXV. col. II. Hac quippe ædepol lyra ſunt! Scripturam ſchedarum non nodorum ligaturam intueri noſtrum eſto. Liquore ſcriptionem ſchedarum harum ſuceptam facile diſpallescit, at quoniam? Pro atramento omnes decertare videas Iudeos. Talm. Hierof. Megilla cap. I. f. LXXI. col. IV. חֲלָבָה לְמֶשֶׁה מִטְנֵי שְׂרוֹחָו כְּתוּבָן בְּעוֹרָתָן Traditio Moſe eſt de monte Sinai, inſcripta eſſe Thphillin membranis, idq; atramento. Conf. Leo Mutin. de Cer. & Rit. p. 42. Imo inclinate eo Talm. Babyl. Megilla c. I. Mischna VIII. itemq; Sopherim c. XV.

c.XV. Mischna I. eandem phylacteriorū & mesusā cum libro legis esse rationem demonstrans: אין בין ספריהם לתפלין ומוותת אליהם שרשכפריות נכתבות בכל לשון והתפלין וממוותת אין נכתבות אלא אשוריית רבנן שבעון בן גמליאל אומר אף ספריהם לא Nullum est discrimen inter libros, phylacteria & mesusas, nisi quod libri scribi queant lingua quavis; Phylacteria vero & Mesusa non nisi lingua Assyriaca, Rabban Simeon fil. Gamalielius propnunciat, nec libros licitos fuisse, nisi Lingua Graeca exaratos. Evidet R. Iom Tobb in Tof. f. CLIII. cum Gemarifis componere studet hæc Talmudis verba cum illis, quæ deprehenduntur in Iadain c. IV. Mischna V. urgens, loqui textum tantum de convenientia ratione pollutionis, cum & phylacteria & mesusā & libri manus polluantur. **הא** להופר בנירין ולטמא את הרים והוֹרֶשׁ שׂוּרָה Et hæc & illa tam in complicatione per nervos, quam in pollutione manuum sibi correspondent. Nihilominus R. Moses Maimonides latius esfatum hoc extenderet conatur, hoc inde deducens, quod non solum in complicatione & pollutione, sed & in ipsa scriptione phylacteria mesusaque eodem iure gaudeant, id quod de Thphillin in aprico positum, de mesusis autem patet ex Schülchan Aruch in lore Deah Hilcos Mesusa f. CCLVII. col. II. s. VII. שׂיר לעשׂות המוותת ברוי ותנין של שׂעננץ כטו בספר תורתם Equum est confici mesusas atramento, ut & coronulas literarum שׂעטנוצ' prout sit in libro Legis. Tam rigide ritus hic a Iudeis servatur, ut in phylacteriorum scriptione liquorem alias cuiusdam coloris, rubri scil. aurei aut viridis adhibere omnibus modis prohibeant. Maimon Hilcos Tphillin c. I. s. V. אם כח בתפלין אפלו אוח אהת בשאר מני אכבעוני או Si quis in phylacteriis vel unicam literam reliquorum colorum consignarit speciebus, nec non auro; phylacteria ista reputantur pro irritis. Perinde vero est an atramento ex fumo collecto, an vero e gallis preparato scriba in consignandis utatur phylacteriis, aut mesusis. Quamvis enim Maimonides Hilcos Tphillin c. I. s. IV. atramentum e fumo collectum adhibendum iniungat, ואן כח שלשין بما עפצא וקנקנותם שהוא subiectit tamen: Si tamen omnia illa tria scriperit aquis

aquis e galla preparatis & chalcantho, quod consistit nec delenti cedet,  
 bene se res habet. Schüchan Aruch in Orach Chaiim c. XXXII. Hil-  
 cos Thphillin f. XXVI. col. II. לכתוב בריו העשויה מעשן עישט  
 או שטנים שרו במר עפץ. Vult scribendum esse atramentum pre-  
 parato e fungo lignorum aut oleorum aquis, gallarum macerato. A liter-  
 ris aureis quin & ab auro omni tam in conspergendis phylacteriorum  
 literis, quam in externa eorum theca addendo nimium quantum ab-  
 horrent. Schüchan Aruch Tur Orach Chaiim Hilt. Thphillin c. XXXII.  
 f. XXXVI. col. II. כתב אפיו אחר אחד בשאר מני צבענים או ברכות על האותיות  
 בוחב הרי אלו פסליין אם ודק עפירות והכ על מעבורו הוחב על  
 אותן מאוכרות אין לו תקנה לפי שאסור להעובי הוחב ממשם  
 Qui scripterit vel unicam literam rel-  
 quorum colorum specie aliqua, vel auro, rem fecit irritam. Si in-  
 speserit pulverem aureum literis, remotoq; auro remanserit scriptura  
 inferior, legitimares erit. Si vero insperserit pulverem aureum aliqui  
 ex nominibus divinis, nulla ei est medela; Prohibitum enim eo casu est  
 excutere aurum; ita enim nomen divinum detere velle videretur.  
 Cauto porro opus erat, ne in inscriptione phylacteriorum macula qua-  
 dam factam atramento scripturam feedaret. Hinc ante omnia mem-  
 branam exquisite confectam glabratamque postulant, cui scriptura sit  
 imprimenda. Schüchan Aruch I. c. fol. XXVII. col. I. וורה הקלה  
 שלט שלא יהא בו נקודות שאין הרו שבר עליו רוחינו שלט  
 תהא האות נראה במלוקה לשתיים Membrana perfecta sit, ne  
 que in ea deprehendantur foramina, que atramentum transire nequit,  
 idq; ne litera in eo conspiciatur in duas quasi etiam partes. R. Moses Mik-  
 kozi Hilcos Sepher Thorah. CVIII. col. I. hanc legem de membrana in-  
 iungit: שור שחוֹר נקב לא יכתוב על גבי רנקב וכל נקב שדריו נקב  
 Membrane perforata forami inscribat nemo. ערב עלו אינו נקב  
 Omne aurem foramen, quod transit atramentum, pro foramine  
 non reputatur. Quæ ultima totidem verbis leguntur in Gemara Schab-  
 bas c. XIV. fol. CVIII. & Chullin c. IX. f. CXX. Calamus scribe ante  
 scriptiōnē tentandus, ne qua inculta gutta atramenti elabatur,  
 schedam maculet, operamque scribae cludat. Schüchan Aruch in O-  
 rach

טב לנזרת. I. rach Chaiim cap. XXXII. §. XXXII. fol. XXVIII. col. I.  
 הקולםוס קודם לכתוב הפרשה שלא יתר עליו די יותר  
 מדאי וופסיד וכן יזהר קודם שיכתוב כל שם לקרות כל  
 טב Bene fit, si scriba  
*calatum tentet, antequam scriptionem suscipiat sectionis, ne (calamo)*  
*plus iusfo adhæreat atramenti, scilicet scriptura macula aspersa contatur.* Hoc insuper observet, ut, antequam scribat nomen Dei, legat id quod  
 scriptist, ne ob eius incuriam illude medio tolli opus sit. Quodsi tanac  
 contingere, ut cautione omni exhibita nihilominus guttula atramen  
 ti e calamo scribentis excidat, quid scriba in mesuia & phylacteriis  
 agendum sit abunde innuit R. Mof. Mikkozi in Sepher Miz. Gadol fol.  
 CIV. col. III.

אנס נפה לטפת די בחול בית או חוץ או אורה  
 או אותה אחרת ועתה אין שמה הראשון עלייה או ירך שמאל של  
 בס פטוחה נגע לשול החצן ונשיות בכך סתוםה או אותה  
 ראש נשיות דלתה כי היא נגנה לא יועיל תיקון למחוק  
 הטיפורה ולגרור כהער רחוי כחק הוכות ופסול בן בטחה  
 ובתפילהין ובכמזהה ובכנת ולא יועיל אחר כך להעיבר הקולםוס  
 על האות לא לרבען ולא לר' יהורה ראם מועל על האורה  
 שנכתב שלא לשמה לשוויה אותן מכל מקום לשוויה  
 Si exciderit gutta atramenti in concavum literae  
 aut ־ aut litera aliis, ut iam non amplius nomen pristinum obtine  
 at, aut latus sinistrum ־ mediani cum latere inferiori coalesceat & sic  
 fiat ־ finale, aut litera ־ mutetur in ־ huius furfuris alia;  
 non licet corrigere errorem defricando guttam aut elidere scal  
 pello, cum id idem esset ac sculpere medium, quod prohibetur tam in  
 libro legis quam phylacteriis, mesusa ac libello repudii; nego, aquum  
 est postea calamum inducere litera, nec secundum Doctores nostros,  
 nec secundum R. Iuda (in Gittin Sect. V. f. LIV. col. II. & Schabbas  
 Sect. XII. f. CIV. col. II.) Etsi enim licet litera qua scripta est titulo haud  
 debito inducere literam aquo titulo scriptam, nihilominus inducere  
 litera tali non licet. Conf. Schülchan Aruch I.c. fol. XXVII.  
 col. II. Tandem ut atramentum intra terminos suos servaretur, nec  
 ultra citroque diffueret in scribendo, quin potius literis maior con  
 ci-

52

ciliaretur elegantia lineatura scriptio sublevanda erat, quam appellare confieverunt Iudei, qua mediantibus lineis a superiori ac inferiori literarum parte ductis intra casses atramentum quasi constringitur. De lege lineanda placita Rabbinorum sicut R. Jacob ben Ascher in Iore Deah Hilc. Sepher Thora f. LI. col. II.

ספר תורה  
צירכה שירוטות ותניא במסכת סופרים הלכה למשה מסיני מסרגלין בקנה ופרה, לא אתה לאפוקן סכך אלא עופרת או כיווץ בו שצבע ופרט שאה חוכה לשורת אלין טוב לשורת כדו ליפות הכתב שייתה נאה והר משה בר מינמי זיין פסלה נלא שירוטות ולוה האסכיב ארוןacci בראש וכורט לברכיה

Liber legis lineatione opus habet. Traditio enim occurrit in Cod. Sopherim: Traditio est Mosis de monte Sinai: Lineaturā fieri calamo. Exponunt Rabbini: Cur precise calamo? Resp Adducitur hoc non ut excludatur culter, sed plumbum aut huic simile, quod colorem inducit. R. Tam exponit: Non esse necessariam lineationem, sed approbari eam ob scripture elegantiam, quo ea reddatur pulchrior. R. Moses Maimon. p. m. irritam pronunciat scripturā sine lineatura. Cumq; eo conspirat Dominus Parenz R. Ascher p. m. Quæ vero de schedis frontalibus ac liminaribus disceptant inter semet ipsos Iudei, nimis prolixum foret adducere; avidos Lectores abunde satiabunt R. Moses ben Maimon Hilcos Thphillin c. I. s. XII. R. Moses Mikkozi Hilc. Thphill. f. CIV. col. II, Hilc. Melusa fol. CVI. col. II. Hilc. Sepher Thora fol. CVII. col. II. Arba Turim in Orach Chaim c. XXXII. f. IX. col. I. & ex eo Schilchan Aruch in Orach Chaim fol. XXVII. col. I, ut & R. Menachem in Zeda Ladderech. f. LXVI.

### S. XV.

Postscripta sacra nostræ se sicut meditationi scheda Sotæ, seu mulieris adulterii suspectæ, quæ, quoniam liquore consignata fuerit, explorandum est. Quamprimum enim in atrium Sota deducta esset, schedam conscribebat sacerdos, scripturamque aquis in vase fictili alatis immergam delebat; basque aquas scriptura inquinatas mulieri propinabat eibendas. Expressa hunc ritum iniungit lex Num. V. 23. 24.

G 2

וכתב

וכתב ארת ראלת האלט הכהן בספר ומורה אל פי  
המרים וחשקן ארת האשא את מי המרים המארוט

*Et inscribet anathemata hæc sacerdos libro, & delbit aquis amaris, potabiq; mulierem aquis amaris maledictionem inferentibus. Qui scribere schedam dicitur, est seu sacerdos; neque enim cuivis licitum erat schedam mulieris adulterii suspectæ consignare. Sipre f.IV. col.III.*

למה נאמר שהיה ברין נאמר כן וכותב ונתבר להן וכותב  
ומזה וכותב האמור להן כשר בכל אדם אפ' וכותב האמור כן  
Cuinam vero hæc assignantur?

*Resp. Dicitur (Deuter. XXIV. 1. 3. de libello repudii) & sribet.  
Et dicitur etiam hic loci & sribet. (hinc ita colligerem:) Si vox  
in Deut. quemlibet hominem legitimum pronunciat (ad scribendum  
libellum repudii) Ergo & hic ad schedam Sotæ (captus est quilibet)  
Dubio vero huic occurrit scriptura, addens: (sic sacerdotem  
aptum huic operi tantum pronunciat) Eadem repetit Pesikta,  
Sotaria f. XXXIX. col. III. IV. Sepher Ialkut f. CCVIII. col. I. Sepher  
Rabbos fol. CCXXXI. col. I. quaedocverasunt, ut R. Isaac Kaaro  
in Toledo lizchak f. LX. col. IV. rationem subnectat, cur non asy-  
nedrio aut indicibus scheda Sotæ exarata fuerit? Ita vero ille:*

הספָק הַר לְמַה נִשְׁתַּחֲוֵה זֹה הַעֲנֵן שֶׁ כָּהֵן וְלֹא שִׁירָא  
שוה הוועת דין שנעשה באשת ההייא והרינום הם לנטהרין  
והשופטים לא לכהן במאה שהוא כהן-וחיתור הספק למה געשית  
זוזה הענן על יד הכהן לפי שוה הוא לשיט שליט בז  
איש לאשתו ולפי שאחרון רוח אהוב שלם רורוף שלום ומשים  
שלום בין איש לאישתו לפיך נעשה על יד בני אהרון

*Dubium quartum est: Quare negotium hoc exsecutus fuerit sacerdos,  
non vero Israëlitæ? hoc quippe erat iudicium in muliere exequendum,  
iudicia vero erant synedrii & iudicium, non sacerdotis qua talis. Du-  
bium huius solutio, quare hoc exsecutus fuerit sacerdos, est, quia sa-  
cerdotus erat pacem alere inter maritum & uxorem eius. Et quia Aaron  
amat pacem eis summo incumbebat studio pacemq; alebat inter  
maritum & coniugem, propterea negotium hoc Aaronis filii demanda-  
tum*

zum ej. Inscriptio anathematum a sacerdote siebat, בבספר Onkelos & Syrus ספרא, Ionathan מנילהא LXX. בילו Vulg. libellum, Luth. einen Zettel vertit, idque iure, cum id ipsum vox ספיפסימנו-  
 tet, Ier. XXXII. 11. Deut. XXIV. 1. 3. II. Sam. XI. 14. II. Reg. V. 5.  
 Sed qualis tandem scriptura huic adhibitus liquor? Unanimi suffra-  
 gio Iudei atramento certo tamen modo præparato palmam deferunt, id  
 præ ceteris ex sequentibus verbis corroborantes: ורחה אל מי המרים  
 Et delebit aguis amaris. Omnia fere instar sit nobis hac vice Mai-  
 monides in Hilcos Sota c. IV, §. VIII. IX. X.  
 כתבה אingerת פסולה  
 שני, בספר כתבה על פסולה שנ' בספר ספר א' ול' שנים  
 ואינו כותב לא על חניר ולא על הדופתרא אלא במנולת ספר  
 שנ' בספר ואט כתבה על ניר או רופתרא פסולה ואט כתבה  
 ישראל או כהן קטן פסולה שנ' וכותב הכהן איש כותבה ל'  
 בקומות ולא בקנותום ולא בכל דבר שרושומו ניכר ועומד אל' ברי' שאין בו קנותום שנ' וכותב ורחה כתוב שהוא יכין  
 להמחורת ואט כתוב ברכבר המקדים פסולה נשאר במילוי  
 רושם כתוב ניכר שמייחק יפה בפה כתוב א'ית  
 אחר ומוקה' וחור וכותב אותן שניה ורחה עד שהשלים  
 Si scripsit schedam Sora more Epistola (R. Salomo ad Gem. Sota f. XVII. col. II.)  
 אingerת בלא שרטט בספר אמר רוחמא והלבנה למשה בטני שרשפריס  
 Dicitur ἰ. e. sine lineaione. Deus b ait  
 at traditio Moysi est de monte Sinai libros lineaatura indigere, quæ  
 R. Salomonis verba sinistre intellexisse videtur Auctor Matthanios Cabin-  
 na in Rabbos fol. CCXXXIV. col. III.) irrita est scriptio, dicitur enim  
 in libro. Si inscriperit duobus foliis, irrita est, non anter enim  
 dicitur in libro, non vero libris. Negat inscriberi licet charta,  
 aut diphteræ, sed volumini libri, q. d. בבספר Ergo si quis charta aut di-  
 phteræ inscriperit, irritum est. Si qua scriperit Israëlia, aut sacer-  
 dos minorenus irritum est, dicitur quippe כהן sacerdos. Negat scri-  
 ber gumi, nec chalcanto, nec ulla re vestigia scripture retinquent,  
 verum atramento, cui chalcantum inditum non est. q. d. Et scribet  
 Et delebit, seu ita scribat, ut deleri queat; si ergo re quadam consten-  
 re

re sribat, irrita est scriptio. Si in libro relictum fuerit scriptio fa-  
tiae indicium, irrita est scriptio, usq; dum deleatur pulcerrime, (nam  
ut verba R. Salomonis adducit R. Ioseph Kaaro in Cceseph Mischne I. c.  
אמ היה רישומו ניכר ציריך להזר ולמזה שלא וזה רישומו ניכר  
si vestigium eius clare exprimitur, necesse est denuo radere, ne eius vesti-  
gium pateat.) Si scriperit literam unam eaq; aqvis deleta scriperit secun-  
dam, eamq; delectat usq; dum absolverit, irrita est, donec perfecta  
fuerit tota scriptio. Quibus non immrito associamus R. Iosua Aben-  
Schub in Sepher Darschos al Hattora f. LXII. col. I.  
ואחר כך מוחה הכתוב בלא סטם המחווקים הכתב אלא ברוי  
הכתב שרויא כתובות כלא טירושים והיה נקל למוחה  
Polonica delcat scripturam, scri-  
ptam non coloribus scripturam confortantibus, sed atramento quod si-  
gnat quidem, attamen facilime diluit potest. Quae ipsa a Maimonide  
allata eo libentius adducimus, cum facilitiori stylo ea nobis proponant,  
qua Doctores Mischnici inculcant Sota c. II. Mischna IV. f. XVII. col.  
II. fusiisq; ibidem enucleant Gemarici & Rabbini reliqui omnes ap-  
probant, vid. Siphre fol. IV. col. III. Rabbos fol. CCXXXIV. col. IV.  
Siccine ergo omne prohibitum est atramentum, in scheda Sotæ scri-  
benda, cuius vestigia relinquntur? Ita est, id quippe eliciunt  
Rabbini partim ex verbis ו מוחה delebit, partim ex eo, quod  
Mischnici Doctores prohibeant scripturam ~~בכל~~ רבר שרש ~~בכל~~  
re vestigia scriptio lingente, unde R. Salomo h. I.  
ונבלע בקרף  
וינו יוכן למחוק וקוטט ונקנתות עברוי וושט  
Quod absorbetur a membrana, nec diluit potest. Propterea prohibentur  
gummi ו calcanthum, que vestigia relinqunt. Unde atramento uti-  
ficebat, semoto tamen chalcanto in hac scheda exaranda. Gemara Sota  
fol. XX. col. I. II.  
תני' ר' יוחה אומר אמר היה ר' מילך  
מיטילן נקנתות לתוכ הדיו חוץ מפרשת סותה בכלכ  
Traditio est: R. Iehuda referit dixisse R. Meir: cuivis atramento chal-  
cantum iniici, sola sectione mulieris adulterii sufficit excepta. Quo  
ipso a contradictione asserta sua liberat R. Iom Tobb exposita in notis ad  
Sota h. I. f. CVIII. col. I. & notis ad Megilla c. II. Mischna II. Hic e-  
cum professus erat, licitam esse scriptionem chalcanto factam, illic  
pro

prohibitam. Reponit vero, de alio hic de alio illie sermonem esse  
atraimento: לפיכך כשהוטל קנקנותם בריו שוכן מתקיים הרי  
זה פסול לם סותה אבל לזרתם אינה פסולה רתרת לא קפירין  
שלא תזה יכולת להמק וזראה שחבאי (זרמכם) מראמר  
לכל מטלון קנקנותם חוץ מפרשׂת סותה חוץ במנדרת

Proprieta iniicere atramento chalcantum, adeo ut per illud  
consistat, prohibitum est in Sota, sed in atramento illo (Megille)  
non curamus, an quear deleri nec ne? Ratio vero quam afferit Mai-  
mones ex eo, quod dicitur: Cuivis atramento chalcantum iniiciunt, ex-  
cepta Sotæ scheda, reperiturq; in Gemara l.c. Conf. a nobis adducta s.  
VIII. & XIV. An vero etiam aqua facta sit atramenti deletio? queri pos-  
set. Affirmativa sine dubio subscriptent cum B. Lutherio, Syro, Ara-  
be, Pagnino & aliis, vertentes verba Num. V. 23. und mit dem bittern  
Wasser abwaschen, quos defendit D. Christ. Noldius in Conc. Part. not.  
CCCXXIX. in primis cum נַא sepe notet cum, utpote Iof. XI. 19. Hos.  
XII. 5. nonnunquam vero etiam expletat omissum Ablativum, uti  
Iud. VII. 6. נַא בְּרָם ore, & Matth. X. 27. εἰς τὸ δὲ aure dicitur; At-  
tamen cum illa exempla partim non exhibeant τὸ נַא coniunctum cum  
מִרְחָה, sed in alia plane constructione occurrant, partim exempla a  
Noldio adducta nihil evincant, praestat dicere cum Cel. Andrea Aco-  
lutho c. III. de Aquis Amar s. LXVIII. p. 317. hac voce non innui tan-  
tum aqua defundum esse atramentum, sed simili prohiberi, ne sche-  
dula superflua aqua in terram defluat, quin potius נַא ad residuum in  
vasculo aquam destillet. Tandem nec silentii involvenda peplo,  
meditata ludorum, in causam inquirentium, ob quam scriptura a-  
tramentumque requisita fuerint in scheda Sotæ? Provocat nos eo  
quaestio R. Isaac Kaaro in Toledos lizchak fol. LX. col. IV.  
מה צורך  
לכטוב האלוות דאללה בספר ותשחה בם רוי שיאמר הכהן האלוות  
בפיו בלבד כתיבת**Quid opus erat scribi anaibemata bac in li-**  
**bro, & bibi aquas; sufficeret, si ore protulisset anaibemata sacer-**  
**dos sine scriptione?** Ad quam quaestioneem diversa respondere ludaos  
animadveritas. R. Isaac Abarbanel in פירוש על התורה fol. CCXXXV.  
col. IV. (Edit. Veneta f. CCLXXX. col. III.) postquam recensuerat

fun.

functiones sacerdotis VI. cum Sota susceptas, earum causas his edifferit:  
 דָּוּ הַרְבִּים הַלְּהָ וּמְזִים עַל גְּנוֹת מִשְׁעָה הָאֲשָׁה כִּי הַמִּים וּמְזִים  
 לְתֹרֶת הַשֵּׁם שְׂהֹוִרָה עַל הַעֲיוֹת וְהִיא עֲבָרָה עַלְיהָ בְּטוּמָתָה  
 וְעַפְרָה קְרֻקָּעָה מְשִׁיכָן דָּוּהָ רְמָוּ לְכָבוֹר בּוֹתָ� וְיִ' וּמְשִׁיכָנוּ שְׁלָזָן וּבָנָה  
 שְׁמָה אַתְּפָן זָוָה וּמְחַדְּרָ כָּלָב וּלְכָן שְׁמָה רָאוּי שְׁתָעַנְשׁ עַל חַטָּאָן  
 גָּם תְּרָמוּה בּוֹה שְׂעָרָה הִיא וְאַלְעָפָר תְּשׁוֹב שְׁמָה כִּי כָּן צָוָה  
 בְּכָלִ חֲרָס טִימָן שְׁהָיָה תְּשִׁבָּר כְּכָלִי חֲרָס וּפְרִיעָרָן רָאֵשׁ הָאֲשָׁה  
 חָוָה וּמוֹלָעָרָה כִּי יְוָהָא שְׁכָסָתָה כְּלִימָה פְּנָה וּמְפַנֵּי הַבּוֹשָׁת  
 תְּכַסְּרָה פְּנָה בְּשֻׁרָה גָּם כִּי שְׁעָרוֹת רָאֵשׁ עַרְוָה וּהַשְּׁבָעָה  
 וְהַלְּהָה הַוָּא תְּפָלָת הַכָּהָן עַל עֲנֵנָה וּהַוָּאָתָה בְּאַלְתוֹן אַמְּן  
 לְקִים וְרָבָר וְכִתְבָּתָה הַאֲלוֹת עַל סְפָר הִיא יוֹתָר חֹזֶק וּקוֹיָם  
 וּכְמוֹ שְׁאָמֵר וּמְאָמֵר אַסְטָר קִים דְּרָבָר הַפּוֹרִים הַלְּהָ וּגְנַחַב בְּכָבָר  
 כִּי הַדְּרָכִים הַגְּנַחְתִּיבִים הַסְּמָמָרוֹת נְטוּשָׁם וְהַוָּהָנָה נְמַחַק הַשְּׁמָה  
 הַמְּפּוֹלֵשׁ הַנּוֹכָר בְּשַׁבְּעָה, בְּמַיִם הַחַם לְהַזְּדִיר שְׁמַפְנִי מְעֵשָׂה נְמַחַק  
 הַשְּׁמָה הַנְּכַמְּבָה הַהָּוָה וְהִיא לְרוֹעֵשׁ מְעֵשָׂה בְּבּוֹהָה הַתְּרוּרָה וּוּמְקֻרְשָׁה  
 וּבִישָׁרָה פְּנֵי כְּנָנוֹתָה יְשָׁאָלָן וְעַלְעַלְעַל הַכָּל הַשְּׁמָה הַנְּכָבָר  
 הַנְּמַחַק שָׁם בְּסְבָתָה וְאַמְּנָה וְהַקְּרָבָת הַמְּנַחָּה הַוָּא כָּאַלְוָה הַוָּתָּה  
 הַיָּהָה מְעִירָה עַל גְּנוֹתָה מְעִשְׂיוֹתָה וְשִׁיטָּוֹתָה וְמְתָרָה וּבְמִורְשָׁה  
 אָמְרוּ לִמְהָ מִיְּתָהָן הַכְּיוֹר לְפִי שְׁהָכְרוֹ נְעֵשָׂה מְפָרָאות הַנְּשִׁוָּתָה  
 הַצְּבָאָוָתָה פְּתַח אַהֲלָ מְעוֹרָה לְחַסְרוֹתָהָם וּקְדוֹשָׁתָה וּלְמַתָּמָם  
 וְעַפְרָה וְכִתְבָּה הַשְּׁמָה הַנְּכָבָר מִם לְרָמָוּ שְׁבָא / מְטִיפָה סְרוֹחָה וְעַפְרָה  
 שְׁהַולְכָה לְמַקּוֹם עַפְרָה וּרְמָה וְהַכְּתָבָה לְפָנָיו מִי הִיא עֲתָווָה לִיתְנַ  
 אָתָּה הַדִּין בָּאָותָה שְׁלַשָּׁה שְׁזִכָּר עֲקָבִיָּה בָּן מַהְלָלָאָה

Hec omnia innuebant turpitudinem rei a muliere patrate. Aque in-  
 dicabant legem divinam, de non retegenda nuditate monentem, quam  
 tam transgressa est impuritate sua. Pulvis pavimenti index erat glo-  
 riae templi & habitaculi divini, quo venire non debebat merces meretricia,  
 & pretium canis (Dent. XXIII.19.) inde aequaliter fuit, ut ibi ob pecca-  
 tum panam tueret; indicabatur etiam eam e pulvere esse, inquit, pulverem ibi  
 reddituram, inde & vas testaceum iuber accipere, indicio, eam ut vas  
 scilicet frangendam. Capitis denudatio index erat nuditatis eius, cum enim  
 ob-

obtegentem faciem eius timeret pudorem, & ob pudorem faciem suam  
velaret crinibus, nudatio criniti nuditatis index siebat. Iuramentum & exse-  
cratio sunt preces sacerdotis ob rem commissam. Confessio ad iuramen-  
tum per Amen, Amen, siebat ob rem eo magis corroborandam. Scriptio  
vero anathematum in libro, magis illa confirmabat & stabiliebat, sicut  
etiam dicitur (Esth. IX. 32.) Et sermo Esther confirmavit verba Pu-  
rim illorum, & scriptum est in libro; Etenim (Coh. XII. 11.) res  
scripta sunt velut clavi infixi. Deletio tandem nominis Iehovah, in  
anathemate memorati, aquis illi peracta, indicabat, ob operaeius no-  
men hoc deleri, ipsam enim malo opere suo sprevisse legem & sanctuarium,  
& pudibundas reddidisse Istrælitum facies, & prater hæc omnia no-  
men Iehovah propter illam deletum esse. Oblatio ferti siebat, ut testis  
esset turpirudinis operum eius & exuberantia sceleris. In Medrasch a-  
iunt: Quare aqua depromenda ex labore? Resp. Quia labrum con-  
fatum erat ex speculis mulierum turmatim ad ostium tabernaculi con-  
fluens purificationis ergo. Quare aqua & pulvis adhibenda & no-  
men DEi inscribendum? Resp. Aquæ indicabant eam prodigiæ & gutta  
factida; Cinis, cundum ei ad locum cineris & vermium. Scriptura, ut  
innueretur is, coram quo ipsi exponentum esset iudicium, secundum  
tria illa, quæ exprimit in effato suo R. Akiba fil. Mebaleel. Legitur  
hoc in Pirke Avot c. I. Mischna I. & pluribus hæc adducite e Talmude  
Hieros. Baal Hatturim h. I. Rabbos f. CXXXI. col. I. Pesikta Sotar-  
ea f. XXXIX. col. II. R. If. Kaaro in Toledoz Izchak f. LXI. col. I. Ve-  
rū magis ingeniosæ videntur Medraschicorū reliquorū de scriptura sen-  
tentiae e tripode Apollinis iudaici protractæ. In Bammidbar Rabb.  
omnia hæc ad vitulum aureum applicantur, ubi de scriptura hæc ad-  
duntur fol. CCXXXV. col. IV. וכותב האלה האלה הכהן זו. משנה  
משנה בספר זהו הלוח שהויר כחוב כי פקר אין אבוח  
ונוי וכי הוא כותב והלא הבה כחוב אלא לשיטש יושיאך  
לא ננתן הבה אלה למשות כמות רחימתו ותנו אל משנה  
ולכך נקראו על שמו כאלו והוא כהבן ולמה קרי הלוח ספר  
לפי שהויר ספר ומוחה אל מי מרומים לפי שכען יושיאך  
שביר את הלוחות ופרק הכתוב מעלהם ובאות מהו  
הכתב

הַכֹּהֵב שְׁרוֹן יִשְׂרָאֵל עֲוֹנֶשׁ בְּמִתְּחִילָה Scriber anathemata illa  
 sacerdos b.e. Moses, in librum seu tabulas, quibus inscriptum (Exod.  
 XX. 5.) visitans iniuriam patrum &c. Numquid vero Moses scri-  
 psit eas, nonne eas consignavit Deus? Resp. Quia Israëlite idolatriam  
 commiserant, non dedit Deus tabulas nisi Moysi, Q.D. (Exod. XXXI. 18.) Et  
 dedit Moysi Hinc Moysis tabula vocantur eis, scriptio imputatur. Quis vero  
 tabulas libri vocat? Quia fuit (alii legunt) libro instar. Et delebit  
 aquis amaris; nam ob Israëlis peccata tabula fregit, scriptura ab iis  
 avolante. In illa autem deletione Israëlite pānam suam potarunt in  
 aqua. Alio tendit R. Salomo Ephraim in Ir Gibborim fol. XCIVIII.  
 col. IV. comparans Ecclesiæ Iudaicæ adulterium spirituale cum corpo-  
 rali, ubi inter alia:

וְכָתַב הַאלֹהִים בְּסֶפֶר שְׁמָן כְּכָל אֱלֹהִים  
 הַכְּתֻובָה עַל סֶפֶר וְמוֹתָה אֶל מֵהַמְּרוּםַמְּרֻם מִתְּחִילָה רֹאשׁ  
 לְשׁוֹן מִיחַיִוִי וְוַתְּרָאָה שְׁהַתְּרָאָה בְּזַהֲם בְּשִׁבְילַמִּימִינָה שְׁלָמָה  
 יְשָׁטְפָמָן Inscribet anathemata ista libro: Q.D. (Deut. XXIX. 20.)  
 secundum omnia anathemata fœderis in hoc libro consignati. Et delebit  
 aquis amaris. Tō מִתְּחִילָה notat hic prohibitionem et precognitionem.  
 Nam premonuit eos de aquis ne eos inundarent, (ceu factum tempo-  
 re diluvii.) Et quis tandem capax est, subtilia Medraschicorum per-  
 contandi ingenia, quæ pleno horrore novas semper speculations no-  
 bis admittiuntur.

## §. XVI.

Novus exsurgit atramenti apud Ebraeos usus in consignando li-  
 bello Repudii, a maritis Iudeorum uxoribus tradito. Scriptum hic re-  
 quiriri in abdicanda muliere libellum probabatur Rabbini, in proscenium  
 כי יקח איש אוישׁ ובעלה ותוֹרָה. Et  
 אם לא תמציא חן בעינו כי מצא בה עורות ונבר וכותב  
 לה ספר כירחות נתן ביוורח ושלהורה מכיתו  
 Cum quis uxorem duxerit, maritusque eius factus fuerit, eam vero apud mari-  
 tum gratiam nancisci non contingat, quod fœdi quidpiam in ea depre-  
 benderit, consignato libello repudii, inquit manum eius tradito, eam  
 e domo sua dimittat. Evidet Iudei hic communiter Legem qua-  
 ruit

runt Patribus a DEo severe inculcatam, uxorem repudiandi, ut vel ex solo R. Isaac Abarbanel in פורוש על התרזות CCCVIII. col. II. patet; eam tamen hic querendam non esse, sed nudam Mosis permissionem, & ob Iudaici populi סולגונאשׁתָר permissionem esse בְּלֹו אַפְּסָאִס partim ex Malach. II. 16. partim ex Matth. XIX. 8. elucevit. Conf. Ioh. Lightfootus in Horis Ebr. ad Matth. XIX. 8. T. II. Opp. p. 345. Ioh. Buxtorff. de Sponsal. & Divortiis P. II. p. 106. & Ioh. Seldenus L. III. de Uxor. Ebr. c. XXII. XXIII. p. 470 seqv. Nihilominus antiquus ritus Iudeos inter receptus est, uxorem scripto dimittendi prefente scriba ac testibus scriptio nem intuentibus, schedamque mulieri insinuantibus, & variis aliis ingenium Iudaicum sapientibus ceremoniis expellendi. Maimon in Hilcos Geruschin c. I. s. I.

אין האשת מהנישת אלא בכתב שיגע לה וכותב זה  
היא תקרה נט ועשורה וברובן הין עקר הנושן מן  
התורה ואלו הין שלא יגרש והאיש אלא ברצונו ושיגרש  
Non repudiatur uxor, nisi scripto,  
ipso insinuato, quod ipsum vocatur גט. Decem vero fundamentalia  
momenta ad repudium hoc vi legis requiruntur, nempe: ne expellatur  
a viro, nisi volente, itemq; ne expellatur nisi scripto, non vero re  
alia. Placet ducibus Rabbinis ea solum indagare, quae circa atramen  
mentum ab iis observantur. Quodnam & quale requiratur atramen  
tum, cohiben' בריו. Mischna III.  
בכל כוחbin' בריו, discimus ex Gittin c. II. Mischna III.  
בסט בסיקרי' ובקומות ובקנקנות ובכל דבר שהי'   
של קיימת אין כוחbin' לא במשקין ולא במים פירוט ולא  
בכל דבר שני מתקיים Unusquisq; liquor scribendo repu

dii libello aptus habetur, sive fuerit atramentum, sive auripigmentum,  
sive minium, sive gummi, sive chalcantum, nec non quevia res con  
sistens. Prohibitum tamen est scribere liquoribus, succis fructuum, aut  
ulla re non consistente. Plenius Gemaram & Baraitham fecutus R. Moses  
Maimonides in Hilcos Geruschin c. IV. s. I. II.

אין כוחbin' את הגט. אלא כרך שרישומו עומד כנון ריו וסקרי' וקומות וקנקנות

וכויזא בון אבל אם כתבו בדבר שאותו עומר כנון משקין ומי פירות וכויזא בון אינו גט כתבו באבר בשחור ובשחור כשר ואין כתובן בון לכתוליה כתובן במיל עפזין לכתוליה על גבי הניר והעור וכויזא בון אבל לא עלי גבי מלחה עפזין מפני שאין ניכר ואם כתוב אינו גט *Non scribunt libellum repudii, nisi re vestigia scriptionis relinquente, utpote atramento, minio, gummi, vitriolo, aut his similibus.* (Gemaarici huc referuntur מ טריין aquas Taria, que R. Iom Tobi in Gittin c. II. Mischna III. enucleante, sunt ט נשים נשאריות על הגנו aquae pluviales in rectis residue, aliter paulo sentiente R. Salomone in Gittin f. XIX. col. I. & Schabbas f. CIV. col. II.) *Quodsi scriptio fiat re vestigia scriptionis non relinquente, e. i. liquoribus aut succa e fructibus expressis (illos existimamus hic innui, quos describit R. Salomo in Schabbas c. XII. Mischna V. fol. CIV. col. II.)* במשקן כמו טהרות שמשחרין או במיל Liquores denigrantes dicuntur פירות של כל שאר פירות v. e. succi mororum. ט פירות v. e. succi reliquorum fructuum) irriter est repudii libellus. Si quis scriperit plumbo, carbone, (nondum contuso, ut colligimus ex R. Salomone in Gittin fol. XIX. col. I. & Schabbas f. CIV. col. II. quamvis Schulechan Aruch in Even Ezer Hilcos Gittin c. CXXV. s. I. f. CXV. scalprum ferreum videatur innuere) aut carbone (contuso) legitimus est, neq. tamen, bis scribunt nisi quadam addacti necessitate: Pre ceteris inscribunt aquis gallarum charta aut membrana hisq. similibus, non autem membrana galla infecta, quia cognoscit nequeunt scripture vestigia, si quis scriperit, libellus divertii salutari nequit; Parile iudicium de similibus ferendum est. Breviori omnia haec complexus stylo est Schulechan Aruch f. CXV. col. I. נהנן לכותבו ברו טובה כמו שכותבן ספרות Mos est consignare libellum divertii atramento pulcro, quali Codices scribi fuerunt. Conf. R. Moses Mikkovi in Seph. Mizv. Gadol Hilcos Geruschin f. CXXIX. col. I. Atramentum libello divertii scribendo asportare cogebatur scriba una cum membrana & calamo ad locum in quo scriptio suscipienda erat. Schulechan Aruch in Tur Eben Haezer

יבוא הסופר והקלף והדיוו והקולמוס וכל  
שאר כליו הכתובת יושאל הרב לסופר בפני העירום אם הכל

*Shall & cōsideretur quod scrip-  
tor membranam, atramentum & calatum, reliquaq; scriptio-  
nis instrumenta, queratq;  
Rabbi scribam praesentibus testibus: An omnia ista ipsi propria sunt? Si  
reponat: sunt, tunc tradet illa. Cui tradet, & pro quo? Respon-  
det R. Menachem in Zeda Ladderech. c. III. s. XI. fol. CXXXVI. col. II.*

הסופר ייתן הקלף והדיוו והקולמוס במתנה לבעל והבעת

*Scriba dono det membranam, atramentum &  
calatum Marito, Maritus autem premium exhibeat scribe.*

*Quan-  
tum præmii scribæ pro atramento datum fuerit, edocet R. Iacob Levita  
in Hilcos Gittin fol. LXXXVII. col. II.*

בום שינתן כו מחרילו  
הנתן וויה נוהג מהריגל לאחר שייצאו בשחור מבירת  
חכנת צוה אל הסופר להביאה אל ביתה הרב הקלף והדיוו  
וקולמוס הנצרכין לכתוב בהן הנתן ושם העור הויה שכנו  
חשי זאב רייןנס לטרווח לקרה הבעל ושני העירומים  
בכל פעם שהייתה צריכה ושכר הסופר היה א' זאב רייןנס ולכל  
עד רכישות זאב בכל פעם שחדרם והאמנץ מימי לא

שמעתי על מהרטיל שנטול אף פרוטה אחת מחומרה  
*Die illo quo tradi debebat libellus divorci in more positum  
fuit Maharil postquam exiverunt mane e synagoga, ut præcipere  
scribæ adduci ad aedes Domini membranam, atramentum & calatum,  
scribendo divorci libello necessaria; Ministri s. apparitoris verumerces  
erat  $\frac{1}{2}$  fl. Rhen. pro labore ob accersendum Dominum & duos testes,  
quoties esset necessarium; Merces scribæ erat 1. fl. Rhen. unicuiusq; te-  
sis  $\frac{1}{3}$  fl. quotiescunq; obsignaret. Verum nunquam audivi Maharil ac-  
cepisse vel obulum unum pre traditione libelli.*

s. XVII.

Fieri vero poterat, ut libellus divortii prima vice non tam accurate scriberetur, quam quidem requirebatur, inde scriptura sepius repetenda erat; tali in casu multum atramenti sibi coemere tenebatur scriba, aut novum procurare Dominus. *Schulchan Aruch* f. CXIII.

לכן אמר הבעל חולך מהיר ואמר שהו נוטן להם רשות לכתוב ולחותם גט מאחר עד מאה עד שיווא אחד כשר בין כתובתה בין בחותמה ליתר הרב שבער בלו שום פקופ

*Propterea si Maritus e civitate migraverit, dicat se ipsis tradere potestate & scribendi & obsignandi libellum ab exemplari primo usque ad centesimum, donec exprimatur accurate tam ratione scriptio quam obsignatio, ad mentem Rabbi in urbe commorantis, sine ullo obscurculo.*

Addit Commentator: אבל אם הבעל בעיר אין לטמך על זה והוא לבעל לחור ולצורות כל פעם לעודם ולטופר וכן נהגין שחור ומוציא כמו בראשונה גט מקנח להם הקלו' והודיע אם לא נשאר לסופר ממה שהקנה לו בראשונה ווש אומרים הא דאמרין עשו עדים וסופר שליחותן ציריך לחור ולצורות היינו רוקא אם כבר נהגין ונפסל אבל אם עירין לא נחתם יכולין לכתוב אחר ואין הבעל ציריך לאותה אבל נהגין להרמי בכל ענן

*At si Maritus manserit in civitate, in id non opus est ut consentiat, sed denuo praecipere potest testibus ac scriba, Et ita mos fert denuo praecipere, ut factum erat prima vice. Quin & comparat ipsis de novo membranam & atramentum, si nil remanserit scriba ex ante coemto. Sunt qui dicunt: Qua diximus, fecisse testes & scribam loco eorum, Quando vero iniungitur denuo imperanda scriptio, id non nisi intelligendum de obsignato & irrito exemplari; at vero si nondum obsignatum fuerit, possunt aliud consignare, nec opus est imperio novo Mariti, rem tamen omnem ubivis aggravare mos est. Quibus verbis allocutus scribam testesque fuerit expulsor, pandit Rabbi ante citatus f. CXIII.*

col.

וישיט הבעל אטוף והקולםוטס  
col. I. & clarius f. CLVI. col. I.  
והרו לסופר בפנוי עירס ואומר לו בפניהם כתוב לו גט  
לשם גירוש אשתי פלונית בת פלוני ולשם כוותה  
ואנו נתן לך רשות לכתוב הגט מארח עך מאחה עך  
שיהורה אחור כשר כל שות פקפק בין בכתיבתך בין בחתימה

*Porrigit Maritus membranam, calamum & atramentum  
scribe presentibus testibus, & dicat ad illum ipsis presentibus: Scribe  
mibi libellum, sub titulo repudii uxoris meae N. filie N. & sub titulo  
divortii. Ego vero trado tibi potestatem scribendi libellum repudii a pri-  
mo ad centesimum usque exemplar, donec emergerit legitimum sine ullo  
obstaculo tam ratione scriptio, quam obsignatio. Provocatus  
a Domino, & ad scribendam divortii schedam se accingens scriba a  
Rabbini decisionum cumulo deserendum non videbatur, cum in pri-  
mis multa occurrere possent scriptio eius ponentia obstaculum.  
Querendum erat: An licet scribae atramentum e theca Domini sui ni-  
fundere theca sua, decisumque fert R. Jacob Levita in Hil-*

*chos Gittin f. LXXXVIII. col. I.* פעם אחריו שאלו רופר אם

רשאי לשפר מן הריו של הבעל לקסת המחוור לו  
ואמריסגאל שיעוריך ויו שלו מקומות ולא יכתוב רק בראשו

*של הבעל Quescit aliquando scriba: an licet effun-  
dere de atramento Mariti in atramentarium scriba proprium. Re-  
posuit Maharil evanquandum esse atramentum eius antea, nec scri-  
bendum nisi atramento Marito proprio. Inter scribendum gutta a-  
tramenti si schedam macula foedasset, nec charta radi, nec loco raso  
scriptura inscribi poterat. Schülchan Aruch in Tur Even Haezer fol.*

*נפלו טיפות: דיו לתוכן האות ואנרכ נכרת CLVIII. col. II.*

אינו יכול להעבור הריו לתוך האות ויזה ליין כח  
*חוכמה Si ceciderit gutta atramenti intra literam, ut cognoscine-  
queat, atramenti removere nequit ad concinnandam literam, quia  
id idem esset, ac sculpere medium. Conf. Tur Orach Chaiim fol.  
XXXII. Si tamen inter literas vinculum intercesserit, deleri potest.*

*Seküll.*

*Schülehan Aruch f. CLVII. col. II.*

**אם יש בו אותיות דרבוקין** **ו יכול לגור הרו שביבתם להברילת**

*Si adhaerint fibis  
met literæ, atramentum inter easdem radere licet, quo segregentur.  
Excipiunt tamen fluxum atramenti madidi, si atramentum tantum  
videatur diffluere. Schülehan Aruch fol. CXVI. col. I.*

**האותיות מכח לחות הרו ער שנראין כרבוקין ומכל**

*Si diffuxerint li-  
teræ ob atramenti madorem, adeo ut appareant quasi coadunatae, ni-  
bilominus tamen se invicem non attingant, legitima est scriptio. Sin-  
gulare decisum est de musca atramentum absorbente a literis exaratis  
f. CXVI. col. I.*

**לה יהא בו שום טישטווש ולא יכתבו**

**על המחק ואם בא זובב ומשך הרו לה ומחוק לו נא**  
*Ne sit in eo  
ulla macula, nec inscribat loco raso; si musca accesserit attraxeritque  
atramentum, ne deleat, nec inscribat ulli perforato, quod arramen-  
tum supergredi nequit. Scriptione absoluta tandem atramento susce-  
pta traditur obsignatio Schülehan Aruch f. CLVIII. col. I.*

**כדו אויר שני שטין בין החיטתו לשטה אהרון והותמו גן**  
**בן קבולוס וברוי של הבעל**

*Non relinqunt ultra spatum  
duarum linearum inter obsignationem & lineam ultimam; obsignant  
autem similiter calamo & atramento Mariti. Obsignatione peracta  
tradebatur scheda Marito, ut eam mulieri insinuari curaret, sed &  
hic nova sæpe scribæ cura expetebatur. Referunt casum de R. Iac. Levita  
in Hilec. Gittin f. LXXXVIII. col. I.*

**פעס אחרת בשעת מהרל**

**הנתינeo שכבר מסר זרב הגט לר' הבעל להרץ לזר אשתו**  
**פראים אמר אחד מן הצבור אני זכר אחרית שאבי האישיה**  
**הרוח לי ולא נכתב בנט ונפסל הגט נטבל כל המלאכה**  
**וממחרות הציר את הסופר להכיא את הקלקף והרו ווקולומסן**  
**וכל הרכבים הראשונים כולם יפלז ולא הרוח מועיל אחד**

מתן

Accidit aliquando tempore traditi libelli, ut insinuatione à Rab-  
bi libelli Marito iam facta, quo insinuaretur manibus uxoris, subito  
diceret aliquid e cura: extremi mei memor sum, patrem mulieris suisse  
Levitam, id quod tamen in libello divorci scriptum non est. Tunc pro  
irrito & nullo torum habitum est negotium. Die sequente denuo ius-  
sus est scriba aportare membranam, atramentum & calamos, priora  
omnia rescindebantur, nulliusq; usus ullum illorum erat. Publice tandem  
libellus repudii prælegebatur, & de antecedentibus omnibus expul-  
sor, scriba, rostesque interrogabantur. R. Jacob Levita in  
fol. LXXXVIII. col. II.

ואז קראו הרבה ארץ הגט והעריות קראו  
עמו וקראו גם כן חותמת שנו העיריות ואז אמר אל הסופר  
פלוני כתבה זה הגט זה כתבה על קלף הבעל ועט דיו  
שלו וקלמוטו זה כתבה אז אותו לשמו ולשםו זה גוי ואז שאל  
הרבי אל רעד החותם בראשונה פלוני נתן הבעל זו  
הקלף והרווי והקלמווט לסתור וצורה לו לכתוב הגט לשמו  
ולשםו זה גם יהוה חברך החותם עמר ושם הרבירים  
שאמר לסופר כתוב על קלף זו גט לשמו ולשםו זה וכו'  
ואז חזר ושאל אל רעד השני בכל השאלות ששאל  
ארץ הראשון פלוני נתן הבעל וזה הקלף והרווי וגוי  
Tunc legat Rabbi schedam repudii, ut & teipsum cum ipso, nec non obsigna-  
tionem duorum testium, hisq; scribam alloquatur: N. Scripsisse  
hanc repudii schedam? Resp. Scripsi. Inscriptio membrane Marito  
proprie, nec non atramento eius ac calamo? Resp. Inscripti. Scri-  
psisse illam sub titulo illius mariti & marite? Resp. Scripsi &c. Con-  
versus ad testem primum, querat: N. deditne maritus hic membra-  
nam ac atramentum ut & calatum scriba, eisq; præcepit scribi sche-  
dam repudii sub titulo uriuusque? Resp. dedit, præcepit. Ad-  
fuitne tibi socius tuus subscriptus, audivisse verba quæ dixit ad scri-  
bam: Inscribe membrane, hæc esto repudii scheda nomine utriusque?  
Resp. Ita est &c. Tandem querat testem alterum omnes illas questio-  
nes, quas quæsiverat primum, scilicet: Deditne Maritus hic membra-  
nam

*nam & atramentum scriba &c.* His peractis tandem tradebatur uxori libellus, non sine novis ceremoniarum anfractibus. Si quis a nobis postulet, ob quid tanta decisionum syrmata circa solum in scribenda repudii scheda atramentum a Iudeis excogitata & præter modum coacervata sint? is cogitet non solum elucere hinc subtilitatis nimiae ingenii Iudaici specimen, sed & Legislatorum Rabbinicorum prudentiam; Cum enim hariolarentur Iudei, concessa repudiandi licentia degeneres fore incautorum animos, ut ruptis omnibus pietatis repagulis foeminas leviculas ob causis nuncium mitterent, schedam repudii quasi sepe quadam cinxerunt, ut maritus scheda repudii maritam dimissurus intra tantum spatum quo scheda scribebatur, animum verteret, inque amplexus denuo rueret maritales. Merentur hic adduci, que *Ioh. Buxtorfius* P. I. de Spons. & Divort. §. LXXXV. p. 80. adduxit ex R. Levi Barfellonita in *Sepher Chinnuch* fol. CCIX. col. I. צוותנו התורה כשלהנו אותה לבלתי שלהה בריבור. לבר פן ויהי מעשה הנירושין מצוי והרביה אן עתה שנחתייבנו לכתוב הורברים בספר והער ערים צריכיות להראות שטר על החותונת נירושין ועוור תועלתי ברכר כי בתוך כך תנוח חמתה האיש לפעתם וינחם *Precepit nobis Lex, ne dimissuri uxorem, dimittamus eam nudis verbis; Ob vitandam diportiorum frequentiam, que impeditur, cum nunc obligemur negotium totum in scheda describere, adhibitis testibus & illis instrumentum exhibere. Deinde & hec subest utilitas, quod interea temporis ira viri contra uxorem suam sepe mitigetur, ut ipsum consilii paeniteat, a reudio abstineat & pax inter coniuges redintegretur.* Conf. *Paulus Fagi* in notis ad Deut. XXIV. I. T. I. Crit. S. f. MCCCVI. Aliam suppeditabit rationem *R. Moses ben Maimon* L. III. More Nevochim. c. XLIX. fol. CLXXVII. col. I. & *R. Schein Tobb* Comm. in h. l.

## §. XVIII.

Occurit solennior atramenti usus etiam in תוביות seu Literis Dotalibus itemq; in שטרות seu Obligationibus Iudeorum; Verum cum

cum non dentur de his leges speciales, preprimis vero nobis verendum sit, ne opella hæc nostra in molem ex crescens B. L. prolixitate sua molesta reddatur, avidis commendamus Cod. ברכות c. IV. Misch. IV. Maimon. in c. I. & XI. R. Joseph Kaaro in Schüllchan Aruch Tur Choschen Hammischpat הלכות הרלוואות f. XLVI. col. I. seqq. R. Mordechai in לבוש עיר שׂוֹן Hilcos Schetaros fol. XXVI. col. II. Restat, ut singulares quasdam et Iudæorū decretis enatas rememur Quæstiones. Quærendum proinde (1): An in Sabbatho atramento literas exarare aut saltē atramentum macerare liceat? Utrumque licitum esse negare videntur Iudæi. Ut enim sabbati religio uidax infinita fere extorsit, nonnunquam plane superstitione & ridicula decreta, puta de pediculis & pulicibus vestibus in Sabbatho non expellendis in Schabbas c. I. Mischna III. Conf. Thom. Goodwin L. III. Mol. & Aaron. c. III. s. XV. p. 526. ita, quanta transgressoribus paenitentia incurrat, edocet Maimon, in Hilcos Schabbas c. I. s. I. שביריה nahic incumbat,

בשביעיו ממלאכה מצורית עשה שם ובירוס השבעה תשובה  
וככל העשה בו מלאכה ביטל מצור עשה ו עבר על לה  
העשה שני לה תעשה כל מלאכה ומזה חיוב על  
עשורי מלאכה את עשה ברצונו בזון חיוב כרת ואם  
היו שם ערים והרשות נסקל ואט עשה בשגגה חיוב  
Quies in die septimo ab opere iubetur  
præcepto affirmativo Q. D. (Exod. XX. 10.) Die septimo cessabis. Et  
qui fecerit opus in sabbato, irritum reddit præceptum affirmativum &  
transgreditur negativum Q. D. (Exod XX. 10.) non facies ullum  
opus. Cuiusnam vero rei reus fit, qui fecerit opus aliquod? Si fecerit  
ἐν προαιρέσεως, excidii reus est; si testes adfuerint eumque monuerint,  
lapidandus est; si per errorem deliquerit, obligatur ad oblationem hostie  
pro peccato determinata. Mirum igitur non est de atramento similes  
ferri leges. Descriptione atramento suscepta decisum est in Schabbas  
הכהב שתו אותות בין בוטני בין בשמאלו  
c. XII. Mischna III. בין משם אחר בין בשתי שמות בין מטה סממנות בכרן  
Si quis exaraverit seu manu dextra seu sinistra (ut face-  
re valent ambidextri utriusque compotes) duas literas eiusdem nomi-

nis (ut NN) sive diversi (ut אָבִ sive duobus coloribus, quacunq; tandem lingua, reus est legis violata. Evidem negari nequit, variam hic in Codice Talmudico occurrere Lectionem; cum enim Codex Venetus & Amstelod. legant signis malunt Pragensis & Menassianus (minorum tamen gentium Codd. vocati a Ioh. Bened. Carpzovio in præf. ad D. Seb. Schmid. Schabbas p. 2.) סְמִנּוֹת סְמִנּוֹת liquoribus. Utrumq; ficit dilucide fatis mentem Doctorum explanans R. Obad. de Bartenora ad c. XII. Schabbas Mischna III. משני סְמִנּוֹת אחר ברוי ואחר בסקורא ואית ספרות דגנוט משני סְמִנּוֹת קלומר משני סְמִנּוֹת כנין שכותנים א' ליטמן אחר וב' ליטמן שניים Duobus liquoribus scriptoriis, ut litera una atramento altera minio expressa sit; Prostant Codices, qui legunt, duobus signis v gr. scriberat נ' ad indicandam unitatem, aut ב' ad designandum binarium. Conf. R. Salomo in Schabbas f. CIII. col. I. At cum dubiis ista exposita videantur, excerpamus clariora. In Schabbas c. XII. Mischn. IV. hoc deprehenduntur: הכותב שתי אותיות ברוי בסיקרי נס בקופוס ובקנקנתו ובעל רבר שחווא רושם על שן כתולי זווית ועל שן לווח פנקס והן נתנו זה עם זה חיוב הכותב על בשרו חייב המסרת על בשרו רבי אליעזרQui duas inscriperit literas atramento, auripigmento, minio, gummi, chalcanto aut quacunq; tandem re vestigia scriptiois relinquent, duobus parietibus angularibus (quorum unus orientem alter septentrionem respicit, angulo tamen communi gaudent, ut vult R. Salomo in h. l.) aut duobus pugillarium foliis (qualibus collybistæ ac mercatores utuntur) ut una alteri sit e regione posita, reus est. Si inscriperit carni sua, reus est; Incidentem vero carni sua R. Elieser reum hostia pro peccato pronunciat, at R. Iosua eum liberum declarat. Unde fluit, nec atramentum in sabbato licitum esse, nec incisionem in carne suscipi; R. Obad. de Bartenora in h. l. haec addit: הכותב על בשרו ברוי והמסרט על בשרו בכרכל עושה צורתאות אחרות בבשרו רבי יהושע פוטר ואפילו חוץיה והמ לפי שאן רוך כתיכת בך ותלכתי כרכי יהושע

In-

*Inscribens carni sue, sc. atramento, & incidens carni sue, seu qui ferro literarum in carne sua fulcat figuram, hunc R. Iosua liberum pronunciat, quamvis eliciasset sanguinem; neq; enim hic scribendi mos est. Et sententia R. Iosuae calculus datur. An vero & maceratio atramenti in sabbato prohibetur? Ita videtur. Prostat quippe decisum in Schabbas c.I. Mischna V.*

*בית שמאו אמרים אין שורין רוי וסכנתו וכרשניטים*

*אלתא כד שישרו מבעוד יומם וכותת הילך מתרון*

*Schola Schammaana contendit non macerari atramentum, nec colores (conficiendo atramento aptos) nec viciam (seu speltam quæ prius maceranda est, antequam boum fiat pabulum, de qua voce commendandus R. Iom Tobb in Tosephos Schabb. c. I. Mischna V.) nisi forte maceratio perficiatur dum adhuc dies est. Verum secola Hilleiana licita pronunciat. Hac Hilleianos inter & Schammæanos cum disputentur, intelligi nequeunt, nisi decretis harum scholarum paululum delibatis. Hillel Babylonius cum Schammæo discipulo suo magno cum eruditorum applausu insigni discentium catervæ dogmata sua instillabant; factum vero, ut alteri maior adhærentium esset copia, hinc invidia incitari, conflictibus stimulari ad odia cœperunt animi, ut tandem consilia capi cogerentur, motos inter hos componentia fluctus. Illo tempore Chananias f. Geronis excutiendo perplexo Ezechielis libro in cœnaculo suo sedebat solitarius, ab eruditis Rabbinis iugiter visitatus; accidit igitur ut & Hilleiani & Schammæani convenirent, tentabaturque concordia, quo cœnaculo eodem sociati opinionum concordia iungerentur. Sed quæ concordia spes in eruditis, tot præiudiciorum nebulis obfuscata mente? Disputatum ab utraque parte genere dicendi pipere ac acetō consperso effectumque tandem, ut XVIII. controversæ removerentur ab utraque dissentientium parte sine ullo diffensu approbatæ, at XVIII. alia remanerent, tanta cum acerbitate inter horum Doctorum discipulos ventilata, ut hi illos quasi in errorum sentina lotos, illi hos diris devovendo non ore solum, sed & calamo veneno tincto pronunciant, omnisque unionis spes decollaret, adeo ut ne Elias quidem his componendis videretur idoneus. Conf. Bereschis Rabba Par. XC VIII. fol. CX. col. II. R. Abraham Zalburh in Iuchasin f. XXII. R. David Ganz in Zemach David*

ad A. DCCXXVIII. & ad eum *Gvilk. Henr. Vorstius* in Observ. p. 289. *R Gedalias* in Schalscheles Hakkabala f. XXV. col. II. seqq. *Seder Olam Suta* f. XXXV. col. II. *Iob. Cocceius* in Sanh. & Maccos. p. 126. 156. 429. *I. H. Hottinger* in Thes. Philol. L. I. c. I. Sect. V. §. X. p. 42. & *Iob. Franc. Buddens* in Introduc. ad Hist. Phil. Ebr. §. XXII. p. 81. seqq. Miraberis fors graves & salutem Palæstinæ attingentes controversias illa die Schammænos inter ac Hillelianos agitatas. Sed en speciminis loco prima occurrit de macerando atramento. Illis ceu rigidioribus negantibus, his sub conditione affirmantibus. Hinc *Maimon* in Hilcos Schabbas c. III. §. I.II.

**מזה להחיל מלאכה**

בערב שבת אָפַע שְׁחוּתָה נִנְרָא מַאֲלָוֶת בְּשֵׁבֶת שְׁלֵי נִסְרָה עליינו לעשורת מלאכה אלה בעצמו של יוסט גנו ושורין ריו וסמנן עם חשיכה והן שורין והולכן כל השכחות כויה *Licetum est incipere opus circa Sabbati vesperam, quamvis ex se ipso perficiatur in Sabbatho; neq; enim prohibitum nobis est facere opus, nisi illo ipso die.* Hinc macerant atramentum & colores sub vesperam, ut per totum Sabbathum perficiatur maceratio. Quod vero Schammæni putarint illicitam esse in sabbato macerationem, inde est, quod & homines & bestias & vasa quieti consecranda opinarentur, cum Hilleliani vasa a sabbatificatione excluderent. *R Obad. de Bartenora* in c. I. Schabb. Mischn. V.

וסכרי ב' אומ' מזהר על שבותת כלים כמו על שבותת כהנות והרינו טענאה ראי נונחנן אונן והרינו טענאה ראי פרשן מצורות ובה מתיירין משנתן הימים מבוער יום אף על פי שהן נשורין והולכן בשכחה וסכרי על שבותת כהנאות אומ' מזהר ראי, בה צער בעלי חיים אבל לאו שבותת כלים Existimant Schammæni legem de sabbato obligare hominem ad sabbaticam quietem vasorum aque ac bestiarum; Et hæc causa est, ob quam non indant lini fasciculos furno, nec expandant retia. Hilleliani vero permiserunt, dummodo aquæ infusa fuerint sole nondum demerso, quamvis magis magis macerentur in Sabbatho. Opinantur enim hominem obligari ad quietem bestie, que molestia affici potest, non vero ad quietem vasorum.

## §. XIX.

Quæstio inter Iudæos enascitur (II): An licita sit manuum lotio aquis, quibus iniectum deprehenditur atra mentum? Non vacat prolixus προσόντων ποιεῖσθαι sanctitatem lotionis manuum a Iudæis observata, cum id ipsum vel ex Matth. XV. 2. Marc. VII. 3. 4. in aprico possum sit, ac manifestum ex excommunicatione Eleazaris ben Hazar, cuius tumulo ob lotionis vilipendiū ingens lapis a Synedrio impositus legitur in Berachos c. III. f. XLVI. col. II. Conf. Iob. Lightfoot in Hor. Ebr. & Talm. ad Matth. XV. 2. T. II. Opp. p. 330. Aquas vero manibus lavandis inferientes atra mento fædandas non esse, totidem veribus Talmudici tradunt in Iadaim c. I. Mischna III. חמים שנפסלו משותית הכהומת בכלים פטולים וכקרוקוּת כשרים נפל לתוכן דו קומות וקנקנות ונתני מראיתן פסולין עשו *Aqua in tantum vi-*  
*tiate, ut bestie eas bibere renuant, si fuerint in vase, irritæ sunt; si in fundo, legitime. Inciderit in illas atra mentum, gummi, chalcanthum, ut mutetur externus ipsarum aspectus, irritæ sunt. Si paratum fuerit me-*  
*diantibus illis opus aliquid, aut panis in illis maceratus, irritæ sunt. Causarei in promptu videtur; cum enim ex statutis Iudæorum aquas*  
*requirant puræ, metuendum erat, ne atra mentum manus lavantis ma-*  
*gis fædaret, quam lotas exhiberet. Hinc Maimon in Hilcos Berachos*  
*c. VI. s. VII. ארבעה וברrios פסולין את הימים שינו מראה ונגלי*  
*ועשיות מלאתה בהן והפסר שמונע את הכמה לשוחות מהן*  
*כיצד מים שנשתנו מראיתן בין בכליים בין בקרוקוּת בין*  
*מחומרת ובר שנפל לתוכן בין מחמת מקוםן הרו אלו פסולין*  
*Quatuor sunt, que aquam lotioni manuum reddunt ineptam. (1) si*  
*color fuerit mutatus, (2) si disoperta manserit, (3) si operi alicui in-*  
*servierit, & tandem (4) ita vitiata sit, ut bibere eam renuant bestie.*  
*Quomodo id intelligendum? Aqua que mutarunt colorem suum, sive*  
*in vasiss, sive in fundis, sive ob rem aliquam in eas prolapsam, sive ratione*  
*loci, irritæ sunt. Altius tamen affurgit R. Iom Tobb ad Iadaim h. I.*  
*בנטילה יוֹתֵם בעין שלֶת נשתנו צורתן ודמייה רקיוש יוֹתֵם*  
*ורגילים מן הכהיר והם מטהבר רילפין לה שום מים ויהרין*  
*רכות*

רכחיב ונחת שטוח מים לרוחץ ורוחץ אהרון ובניו מננו וגוי בכבאות  
אל כל מועירחצ מים ומהכית ריקין רמס בהוויתן

*In lotione manuum poscimus, ne mutetur color aquarum; Nam & purificatio manuum pedumq; siebat (aqua) ex labore aeneo (fuente.) Id vero nos opinamur evincere e voce redundant (Exod. XXX. 18. 19. 20.) ubi dicitur: Et inde illis aquas ad lavandum, ut lavent se Aaron & filii eius ex illo &c. dum ergo accedunt tentorium, lavent se aquis; Hinc exquisite colligimus, aquas populari puras, non autem quoad aspectum immutatas. Plura de his dabant Sepher Col-Bo in Hilcos Nethilas Iadaim f. XVI. col. I. & R. Joseph Kaaro in Schülchan Aruch Tur Orach Chaiim f. LXXVIII. col. II.*

#### §. XX.

Tandem (III) indagandum paucis: Quid sibi velint ista, quæ de dissentium discrimine allegoria ab atramento petita inculcant Talmudici in Pirke Avos c. IV. Mischna XX. Verba hæc sunt:  
אלישע בן אבוחז אומר הולמר ולך למה הוא רומה לרו כתוכה על ניר חרש והלמר זקן למה הוא רומה לרו כתוכה

*Elisa Abua filius: Discens, ait, etate tenera, cui similis est? Resp. Atramento chartæ inscripto recenti; ac discens in senio cui similis est? Resp. Atramento inscripto chartæ rase. Menter sapientis huius Iudæi ut exploremus, in subsidium vocamus Commentatorum suffragia. R. Salomo Comm. in h. l. hæc ita enucleat:*

לרו כתוכה על ניר חרש שדיבכה שם יפה ואינו נמק לעולסך כך הולמר בילוותיו אינו שוכח לעולס Similis est atramento inscripto chartæ recenti, quippe quod avidius chartæ inhæret, nec unquam deleri potest; ita & qui disicit in iuventute sua, rei (semel impressæ) nunquam obliviscitur. Dilucidius hanc in rem differit R. If. Abarbanel in נחלת אבות raro at egregio in Pirke Avos Commentario f. CXXXVI. col. II.

לפי שהארם ראשונה יהוה תלמיד ואחר כך יהוה רב לכן זכר ראשונה מאמר אלישע בן אביה שרבר מענן התלמיד באומרו שראו לארם שילמר תורה

תורה מעורי לפי שהלמר תורה בהיותו נער רומה לדין  
 הכתובת על ניר חדש שנעור החוא לא כבל ערין  
 המונה אחרה והכתובת בו מיבורת ומספרת וכן חולר לא  
 הספיק עדרין לחשוב מהשכירות בעסקי העולם והרי לבן פניו  
 וועת ומוחשבתו פניה לקלל ועל כן יטיר ופה ביעתו מה  
 שיקבלחו אמנים חזקן שכבר נתמלו מוח מהענינים ההמנוניים  
 למינו היתה כתובתה על ניר מחוק לא אמר ניר ישן שחיה  
 הפחרוש כי אם מחוק שכבר נחקר ברעתו דשכונת רביס  
 וכנתבו על לבן וכאשר ורצה למלוד ושתול למלבו אוותם  
 מהשכירות כדיו שיצרו בו עני התורה ולא יוכל  
 לשוחתו בשלימות ולכן יציריו ביעתו הרובים מערובים  
 כמכות הכתוב על המחוק שאפשר שלא נשאי רשותם  
 מהמכות והראשון יתעורר בהם המכוב השני וזה אצל הסכורה  
 בשארם זכר יותר בשלמות הדבירים שראית בילוותו זה  
 לו חמישית שנה מאשר ראה זה לו שנה אחרת לפי  
 שהראשונית היו כתובות על ניר חדש ונשאר רשותם

וז ובחר ואחרוניות נכתבו על ניר מחוק *Cum deceat  
 hominem prius discipuli, tum vero demum Doctoris munere fungi, pre-  
 mittitur dicterium Eliæ filii Abuie, qui sermocinatur de discipulo, di-  
 cens: Decere hominem incumbere Legi a teneris inde unguiculis;  
 eum enim qui legem tenera in etate dicit, similem esse arramento scripto  
 in charta nova, quia charta talis nondum suscepit figuras alias, ac scri-  
 ptio in ea clara est ac distincta. Quin puerum nondum vexant cure  
 mundana animus eius, mens & cogitationes aptæ sunt ad recipiendum  
 ut formari queant pulcre in animo eius rerum ideæ. Senis autem, cuis  
 cerebrum ideis confusis repletum est, institutio scriptiori in charta rasa  
 comparatur. Non dicit: in charta vetusta, qua novæ opponitur,  
 sed notanter dicit: rasa, dudum enim multæ menti eius cogitationes  
 animoque eius inscriptæ sunt; hinc cum discere voluerit, mente sua  
 cogitationes istas eliminare opus habet, quo in ipsa formari queant ideæ  
 legis; id cum perfecte fieri nequeat, hinc in mente confunduntur ideæ re-  
 rum, ut fieri solit in scriptura deleta. Fieri enim non potest, quin relictis*

*scriptionis prioris vestigii, misceatur illus posterior.* Et hac mihi videtur  
 ratio, ob quam perfectior homini sit memoria rerum quas intuitus est in  
 iuventute sua 50. ante annis, pra illis quas vidi ante annum unum, quia  
 priores inscriptae erant chartae recenti, eorumque relinquebatur vestigium  
 clarum & evidens. Postremae autem inscriptae erant chartae rasa. Egregiam  
 his lucem infert R. Ioseph Chivani, Lusitanus in  
 Venet. MDLXXXV. 4to ed. f. XLVI. col. II. cuius verba, cum mentem  
 γνώμης Rabbinicæ per omnia exhauiant, adducere non pigrabimur:  
 ניר חרש הויא נייר שלבי נכתב עליו שוט כתוב וניר טזוק  
 הויא הניר שנכתב עליו כתוב ונמתק הכתוב הויא ורמה הלהמר  
 תורה בהויתו ילד לוי כתובה על ניר חרש בם רומיים  
 תא כי כמו שהכתיבת בניר חרש דיא קיימת ואנת  
 נמתקת משב מהורה ככה והتورה אשר ימליך וילך והיא  
 נשמר כמוו ואינה נמתקת מכח השום אשר בו מהרה לפט  
 שכחו השומר חזק והלמר תורה לךן דומץ לוי כתובה  
 על ניר מחק וזה שהכתיבת החישא שם בלתי קיומה  
 לחולשת הניר החישא וככראה כה השומר של הקן תש ונלאת  
 וימחק ממנו מהורה הליטור ההורא ועל זה שבחו רג'ל  
 גרטא רינקוטא ולכן אמרו שהלמר תורה לילד כתוב על  
 האבן והלמר לךן כתוב על החול חב כי הכתיבת בניר  
 חרש היא נאה יפה וכאשר דיא בניר מחק בחף וכן  
 הלמור לילד יפה ונעים וויהר לךן ולכך אמרו כי הלהמר  
 תורה לילד וימה לבוחר שנשא בתוליה הוא הנון ערלה  
 וויהי הנינה עליו והלמר אותה לךן דומה לךן שנשא  
 בתוליה היא הנינה עלו והויה אין הנון ערלה וגון כי  
 ניר חרש עדין לא קבל שם צויר ווילדי הכתיבת  
 החישא ולכך מתרשמת בו מהורה וויהר בחרף וכן  
 הילד עירין לא קבל מזו הענינים והצווים והמנוי ויקבל  
 מהורה למור ההוראה והקן בחף והוא מאמר רוד אשר בנינו  
 בנטיעי מנזרלי בנעורייה וזה כי הגטו הלה יניע הארי מאר  
 לכל

לכל צר שורציה ועמור שטן ואנטן חוכש לנא כן וכן אבניות  
זהם מגזרלים בכנענותהו במלכו התורה ויקבלו מהורה  
ולא ישכח מפההן ולכן רמו לומר הילך לענין  
שכברשותה בחווית קתנה ולמר חזקן לענינה שכברשות  
כשרו זקנה והו אמר שלמה דנק לנער עלי פ רכו

*Charta recens est, cui nulla inscripta scriptura, rasa, cui inscripta scriptura,  
at post ea delecta. Similis vero est legem in inventu dicens arramento  
in scripto charte recenti triptici ex capite: (1) Sicut scriptura chartae re-  
centi firmiter inbareret nec facile deleri potest, ita lex, quam iuvenis discit  
firmiter retenta deleri nequit et memoria retinentis tam subito, quia me-  
moria eius vividior est. At qui legem discit senex, similis est a-  
tramento inscripto chartae rase; sicut enim scriptura in illa stabilis non  
est ob charta huius langvorem; ita et memoria senis langvida est et debi-  
lis, ut subito ex illo hac doctrina deleatur; Hinc laudant Dd. nostri p. m.  
studia in inventu tradentes, eum qui instruit invenem in lege inscri-  
bere lapidi, qui senem, inscribere arenam. (2) Sicut scriptio in charta recen-  
ti elegans ac pulchra est, inconcinna vero in rasa; ira et doctrina in iu-  
ne pulchra et amena, in amena in sene; Hinc dicere amant Dd. Qui di-  
scit legem puer similis est iuveni virginem ducenti; Iuveni virginis, et  
hac iuveni apta est. At qui eam seni infillat, similis est seni virginem du-  
centi; Virgo apta est seni, non senex virginis. (3) Sicut charta recens  
nullam unquam receperit figuram praeter scripturam hanc, et proinde  
subito signa imbibit, rasa non item; ita et iuvenis cerebrum nondum  
confusis rerum ideis pre-peditum circuus imbibit doctrinam legis,  
quam senex. Hoc intendit David (Ps. CXLIV. 12.) Filii nostri  
sunt velut plantae protuberantes in inventute sua. Nam sicut plantam  
cito transplantare licet, in quamcumque lubitum fuerit partem, ut ibi con-  
fistat, plantam vero aridam non licet; ita filii protuberantes in iuven-  
tute sua imbibunt, que oblitterari nequit doctrinam legis subito, hinc  
comparant doctrinam iuvenis vitula, quam iuvenculam subiugare licet,  
senis vero doctrinam vitule adulterae eo collimat Salomo (Prov. XXII. 6.)  
Imbus puerum in tenera etate. Expositiones Sepher Lebb Avos, Sepher  
Chasidim, R. Ephraim, R. Moze Almosnino, aliorumq; studiose compila-  
ta, videri poterunt in Sepher Medrash Schmuel Vcaet, MDXC. edit.  
f. CLXI. seqq.*

Expeditioni atramenti usui conducunt atramentaria, infusum liqvorem retinentia, quo scribentibus præsto sit. Atramentaria itaq; Iudæorum inquirere, excuso haecnen atramento non abs re fuerit. **א**equidem atramentaria antiquis iam temporibus Hebreis nota fuisse illa innuunt, quæ habentur Ezech. IX. 2. 3. **וְהַנָּה שְׁשָׁה אֲנִשָּׁה-** **בְּאַתְּ מֹרֶךְ שֵׁר הָעֲלִין אֲשֶׁר בְּפָנָה צְפֹנָה** **וְאִישׁ כָּלִי מְפֻצָּן** **בְּדַיו וְאִישׁ אֶחָד נִתְּחַכֵּס לְבּוֹשׁ בְּרוּם וּקְטָרָה** **הַסְּפָר בְּמַתְנוֹן** **וְוּבוֹא וְעַמְדוּ אֶצְלָן** מזבח הנחשת **Ecce sex viri veniebant de via portæ superioris, obversa septentrioni, quilibet instrumento dissipationis armatus in manu sua.** Erat vero vir unus in medio illorum, lumen indutus vestibus, instructus, קָסַת הַסְּפָר in lumbis suis; His, venientes steterunt prope altare æneum. Divorium est inter Interpretes, quid per illam innuatur, lumbis viri accinctum? Sunt, qui tabulam scriptoriam lumbis alligatam, sunt, qui thecam pennis recipiendis aptam, sunt tandem qui vas atramento destinatum e lumbis viri suspensum decernunt. Chaldaeus: **וְגַבְרָא חָר בְּכִירָהוּן לְבּוֹשׁ** **סְפָרָא בְּחַרְצָרָה** **Vir quidam inter illos induitus vestibus & pugillares** (ita accipitur in *Avos* c. III. M. XVI.) **scribe erant ad lumbos eius.** LXX. a scopo aberrare videntur, reddentes: **Καὶ εἰς αὐτὸν ἐν μέσῳ αὐτῶν ἐνδευκός ποδῆσιν, καὶ λόγη σταφύλεις ἐπὶ τὴν ὀσφὺς αὐτῶν, & zona sapphiri super lumbia eius.** Symmachus πνωνίδιον, *pugillares*, quales Zacharias postulabat *Luc. I. 63.* Theodotion Κάστυ reddit, quam rōcem in prima Aquila editione fuisse, secunda vero insertum esse μελανοδόχειον i. e. *atramentarium scribē ad lumbos eius*, autor est Hieronymus *L. III. in Ezech. c. IX. T. V. Opp. pag. 337.* ac ipsummet Hieronymum adeo torsit, ut ad Iudæi cuiusdam suffragia recipere se cogeretur. **Quod Aquile, inquit, prima editio & Theodotio dixerant κάστυ, pro quo in Ebreo legitur Κάστη cum ab Hebreo quererem quid significaret, respondit mihi: Græco sermone appellari καλαμάριον, ab eo, quod in illo calami recondantur.** Nos *Atramentarium*, ex eo, quod *atramentum* habeat, dicimus. Origenes Symmacho subscribit: Πινακίδιον γραφέως ἔχων ἐπὶ τῆς ὀσφύς αὐτῶν, ἵνα ὥσπερ ὑπογεγραφητὸν ἐπάσσουνται. Αὐτὸς καὶ Theodotius κάστη γραμματέως, ὅδε δὲ πήγανται σημανεῖσθαι παρ᾽ Ἕλλησι, ἐν της κάστην Φωνῆς. **Τῶν δὲ Εβραιῶν τις ἔλεγε**

Ἐλεγε τὸ καλέμενον καλέμεσίον ἐνει τὸ κάτω. Non inconcinne notat Origenes vocem κάτω Græcis nil notare, sed quærenti cuidam ab Ebraeo responsi loco suppeditatam, prout evenerat etiam Hieronymo. Versiones reliquæ potiores pro atramentario militant, Vulg. Iun. & Trem. *Atramentarium*, B. Luth. *ein Schreibzeug*, Anglica, *An Inkhorn*. Conspirat etiam Rabbinorum caterva R. David Kimchi Comm. in h. I. קסֶת הוּא כָּלִי הַרוּחַ וְוֹנוֹתָן תְּרֵגֶת פְּנָקֵס סְפָרָא וְהַפְּנָקֵס חַיָּה מִרְאֵה שְׁכֹותָב עַל־צָרֶק הַרוּחַ לְאֵלֶּה עַל־הַלּוּחַ שָׁמֵר עַל־תוֹרַת הַיּוֹם וְאֶלְיוֹן. לְפִי שְׁתָלוֹתָי בְּמַתְנֵי הַסּוֹפֵר הַנֵּיר אוֹ לְחוֹז אַעֲפָכָן עַל־פְּסֻקָּה הוּא עַל־צָרֶק הַרוּחַ לְאֵלֶּה עַל־הַלּוּחַ שָׁמֵר וְתוֹרַת הַיּוֹם וְאֶלְיוֹן. עַם כָּלִי הַרוּחַ כָּלֵל הַכְּלָל בְּפְנָקֵס קָסָת est receptaculum atramenti. Targum Ionathan translit per פְּנָקֵס סְפָרָא, quo indigitatur id, cuius inscribi a scriba solent, puta charta aut tabula. Textus tamen magis postulat atramentum hic intelligi, quam tabulam, cum dicatur (v. 4.) וְimprime charakterem. Forte autem, quia ex lumbis scriba charta aut tabula, una cum atramentario pependit, voce generali omnia scribe vase designantur. Paria tradit R. David Kimchi in Sepher Schorashin f. CCCCXLIII. e quo sua more sive haustit R. Salomo ben Melech in Michlal Iophi fol. CXXVII. Philipp. Aquino in קָסָת וְקָסָת הַסּוֹפֵר fol. CCCCXCIII. col. II. ספר מעירך דמערכות במתני וְחוֹתָא כָּלִי הַרוּחַ וְאַינוֹ נִמְצֵא רַק בְּסְפַר הַנּוֹכֵר Vox legitur Ezech. IX. 2. est autem atramenti receptaculum, וְpreter hunc locum non reperitur. Et quanquam non desint iudæi, qui pro expositione Targumica defendenda omnem movent lapidem, uti R. Salomo, dum dicit: חַמְסָה לְחוֹתָה שְׁמַחוֹת בְּשַׁׁעַה וְחוֹרָתִין פְּנָקֵס הַמִּתְבָּא בְּשַׁׁעַה Sunt tabulae ceratae, in quibus styllo exarantur literæ. Ad ea tamen respondent alii, ut supra ex Kimchio observavimus, cui propterea magis accedendum putamus, quod sententia de atramentario magis scopo adventus viri togæ talari induti congruat, propterea hoc ceu videatur, vase instructi, ut ex eodem frontes consignaret suspirantium.

## §. XXII.

Sequiori ævo vase recipiendo destinata atramento seu calamaria nuncupari siveverunt, eaque vel simplicia vel gemellata comprehendimus; illa soli atramento recipiendo inserviebant, hæc arenæ, ceræ, aliorumque ad scriptiōnēm requisitorum erant receptacula, unde

& a distinctis thecis seu gemellata vocantur. De vulgaribus  
 scribunt Talmudici in *Mikvaos* c. X. Mischna I.  
 קְלָמְרִין הַרוּטוֹתֶת אֲנֵה טְהוֹרָה עַד שְׁנַקְבָּנָה מַצְרָה וּקְלָמְרִין שְׁלָתָן יוֹסָף  
 Calamarium vulgare purum non est  
 donec perforatum sit a latere; Calamarium autem Iosephi sacerdotis a  
 latere perforatum fuit. Solliciti in hoc commate Iudei sunt de expur-  
 gandis vasis immundis, utpote quæ munda non pronunciabantur,  
 donec aqua sine ullo impedimento omnes vasis immundi permeans eluis-  
 set particulas; id fieri non potuisse in atramentariis ob singularem co-  
 rum fabricam animadvertisunt Talmudici, hinc eiusmodi vasa perfora-  
 ri volunt a latere. Quænam fuerit haec figura, docet R. Moses ben Mai-  
 mon in Comm. ad h.l. fol. XVI. col. II.  
 זאת העשה מעופרת כעופת זהב  
 לתוכ' ערד שאט תחתך לא תשפך מה שיש בריך מהרו וחויא  
 ברכך נעשת אצלנו וחנוך כלתו ספק ציטריך שניקב בצריך עד  
 שיבאו חמייס לארץ חכופה Präparatur e plumbo intror-  
 sum curvato, adeo ut ex inverso licet, non effundatur id, quod in eo est  
 atramentum, qua ratione communiter apud nos confici solent. Sine dubio  
 vero a latere perforari opus est, ut intrromitti queant aquæ in hanc cur-  
 vaturam Conspirat R. Obad. de Bartenora evidentius dicta exponders:  
 קלָמְרִין כְּלֵי שְׁמִינִין כּוֹ אֶת הַרוּ וּכְן קְרוּם אֲוֹתוֹ בְּלַשְׁון רֹומי  
 קלָמְרִין וּעוֹשִׂים מֵהֶן שְׁפִיחָן שְׁקוּעַ לְתֻכֵּן כְּדֵי שְׁלָתָן יוֹסָף וְהַרְוּ  
 אַפְּלוּ אֲם יוֹחֵךְ עַל פַּיו אֲמַחְטְּבָלוּ כְּרוּרְכוּ אֵין הַמִּם נְכַנְּסִים  
 בְּחַלֵּל הַשְּׁקוּעַ שְׁטַבְּבִיכְ פַּיו מְבָנִים לְפִיכְ שְׁרֵיךְ לְמַקְבֵּן חַצְלָל  
 Calamarium vas est, cui infunditur atramentum, styllo Rom. appellatur  
 Calmari. Quedam ex illis ita preparantur, ut orificio eorum intror-  
 sum reflectatur, ne effundi queat atramentum, quamvis invertatur in  
 orificium. Hinc si immersum aquæ fuerit more solito, non ingrediun-  
 tur aquæ foramen & curvaturam, que intus circa eius est orificium, hinc  
 necesse est illud a latere perforari. Vid. R. Iom Tobb in h.l. Seph. Aruch R.  
 Nathan Hazzaddik Venet. edit. fol CXXXVII. col. IV. itemque  
 Sepher Aruch Cracoviæ impressus fol. LXII. col. I. Gemella-  
 ta vocante atramentaria diversis instructa thecis variorum instrumen-  
 torum graphicorum receptricibus. Celim c. II. Mischna VII.  
 שְׁלָתָן חַרְסָן וּקְלָמְרִין הַמְּתָאַבְּרוֹתֶת וּבְזַהַן תְּלִין שְׁלָתָן עַז  
 שנפטר

שְׁנַתְמָא אֶחָד בְּמִשְׁקָה לֹא נִטְמָא חֲדוּ  
*Vas testaceum, (in multis distinctas capsulas divisum, ne aromata inter se misceantur)*  
*calamaria gemellata & pyxis aromaticae et ligno parata; horum si unica*  
*liquore polluatur capsula, non statim pollutur altera. Expressus R. Salomo*  
*in Celim f. IX. col. I.* אֵם עֲשֵׂו מָרוּ  
וְכֵן בֵּית הַתְּבִלָּן שְׁלֵךְ חֲרָס אֵם עֲשֵׂו מָרוּ בְּרוּ  
וְכֵן קָלְמָרָן הַמָּתוּיִם הוּא כָּל שְׁמָנוֹתָן בְּרוּ  
Ita pyxis aromaticae testacea meris constans capsulis, nec non calamaria  
 gemellata (se habent) que vasa sunt atramentum servantia. Quan-  
 quam vero R. Nathan in Sepher Aruch f. CXXXVII. col. IV. propterea  
 gemellata vocari afferat, quod alii thecae calamaria imponantur, scribens:  
 עֲשֵׂין לְהַתְּקִין שְׁלֵךְ עַז וְמַנְחוֹן הַקְּسָתָן בְּתוּכוֹ וְאָתוֹן הַתִּיק  
 Thecam conficiunt ligneam, cuius sinu  
 atramentarium imponunt, illamq; thecam calamarium vocant gemella-  
 tum. Reliqua tamen in hac Mischna adducta exempla, hanc explana-  
 tionem vix patiuntur, quin rectius sensisse putamus R. Obad. in h. I. ita  
 כָּל עֲשֵׂו לְתַת בְּתוּכוֹ הַדְּיוֹ וְהַקְּלָמוֹת וְהַכְּלִים  
 שְׁצִירִים לְסֻפֶּר וְעֲשֵׂו נַסְתָּהָרָה הוּא רְבוּעָם תְּאוּמִים  
 וּבְאוֹרָצָן מַהְמָּהָרָה וּקוֹרָבָה לְהַטָּה בְּלָעָה קָלְמָרִי  
*Vas est aptatum infundendo atramento & imponendo calamo, aliisq; in-*  
*strumentis scribere necessariis. Preparatur vero & hoc ex multis quadra-*  
*tis gemellatisq; capsulis, qualium multa penes nos dantur. Exotici vocant*  
*calamaria. Receptacula igitur erant Iudeorum atramentaria (1) atra-*  
*menti & calamorum, ut ex dictis abunde patet. (2) cere sigillato-*  
*riæ obsignandis literis vel illiændis ceratis veterum tabulis inferuen-*  
*tis, prout non incongrue coniectari licet ex Celim c. XXIV. Misch.*  
*VII. Tandem (3) arena scriptio madida inspergenda; Quo ten-*  
*dit in primis R. Salomo in Schabbas c. XII. Mischna V. f. CIV. col. II.*  
*ad verba: Qui scripsierit באַבְקָן סּוּפְרִים pulvere scriba, haec addens*  
*ad verba: Qui scripsierit עַפְרוֹרִית שְׁלֵךְ קְסָתָן הַסּוּפָרִים*  
*scribarum.*

## S. XXIII.

Quæ haec tenus prolixius de Atramento Hebraeorum e Rabbinico-  
 rum Talmudicorumque scriptis ventilata sunt, satis ostendunt ritus ac  
 decretal iudeorum de eodem prolata. Sed quid mihi, dices, cum istis  
 tandem minutis, quas ceu novercantis ingenii iudaici partum ex utero  
de\*

deliræ matris obstetricante superstitione Iudaica profiliisse dixerim verius quam enatas? Sed bona verba quæsto! Itanc ergo & Iota Ebraeorum expunges minimam omnium literam, quæ meliori iure inter minutias refertur? Quid nobis, dices, cum his minutis negotii? Immemor capistrí menti tuae iniecti Matth. V. 18. Imo vero si nihil utilitatis e discursu hoc de atramento Iudaorum flueret, loqueretur nos filio loco Edvardus Pokokius in not. Misc. ad Portam Mosis c. IX. p. 350. (Ed. Lond.) de lotione Iudaorum ita differens: *Utilitates ex iis, que de munditia & immunditia rationibus tradunt Iudei si non alias, has saltem percepturi sumus, quod & merito ipsis a Christo viito verti probent, quod gravioribus Legis preceptis neglectui habentia ad minutias nescia quas diverterint, additisq; a se doctrinas, DEI mandatis, paleam tritico, corticem medullæ prætulerint, & ad ea que istiusmodi ipsorum mortuorum ex exempla affert evangelium, intelligenda faciant.* Verum non est, ut dictatoriam hanc censorum metuamus vocem. Loquentur pro nobis illa, quæ ad V. T. loca varia illustranda haec tenus haud una vice interspersa sunt, lucem tamen etiam Nov. Test. ascendendam autumamus. Non indagabimus causam, ob quam Iohannes & matri electæ & Gaio suo cordis sui desiderium expositorum, atramento illud concordare noluerit, sed faciem eorum intuieri anhelans scribat: Πολλὰ ἔχων ὑμῖν γεράφειν ἐπὶ ἐξελέγθην ΔΙΑ χάρτῳ καὶ ΜΕΛΑΝΟΣ, ἀλλὰ ἐλπίζω ἐλθεῖν πρός ὑμᾶς καὶ σώμα πρός σώμα λαλῆσαι. 2. Ioh. v. 12. Et Gaio: Πολλὰ ἔχον γεράφειν, εἰλλ' οὐδέλω ΔΙΑ ΜΕΛΑΝΟΣ καὶ μαλάκους σοι γεράψαι. ἐλπίζω δὲ ἐνθέως ιδεῖν σε, καὶ σώμα πρός σώμα λαλῆσουεν. 3. Ioh. v. 13. 14. Observamus saltem partim non opus esse cum Hug. Grotio Comm. in h. l. hic admittere inscriptionem impropriam, qua alteri bene cupiens cordi dicitur inscribere Prov. III. 3. Ierem. XXXI. 33. cum hac tam emphaticum Iohannis vix exprimant desiderium; partim non inconcinnem monuisse D. Fried. Rappoltum Comm. ad II. Ioh. v. 12. Opp. p. 688. Forte Apostolos, atramento Iudaico adfveros probabiliter dixeris non ex superstitione quidem, sed libere eodem tunc quoq; adscribendum uti solitos. Nam traditione e monte Sinai derivata se teneri Iudei credunt, ne alio colgre, quam atramento Ὁ θρησκευτικὸν τοῦ μεσαντελλούσαν τοῦ μελανοῦ οὐ μελανόν εἶγεγχαμψέν ΟΥ ΜΕΛΑΝΙ, ἀλλὰ πνεύματι, οὐεὶ γάνθι.

τόπον εἰς πλαξὶ λαθίσαις, αὐτὸν τὸν πλαξὸν καρδίας στεγνίζεις. Quo alludat dictis his Apostolus, ab interpretibus nondum clare evictum existimamus. Literas veterum commendatius commendant *Henr. Hammondus* Annot. in II. Cor. III. 1. T. II. p. 142. & *Dan. Heinicus* L. VIII. Exerc. S. c. II. p. 423. a primæva Ecclesia peregre euntibus dari solitas in testimonium pieratis ac fana doctrinæ, ut refert *Sozomenus* L. V. c. XVI. *Nicephorus* L. X. c. XXI. & pluribus agunt *Ferrarius* de Antiqu. Eccl. Epist. Gen. L. I. p. 45. *D. Io. Hildebrandus* Hist. Concil. Sec. V. p. 136. Nec incongrue huic revocari possent ea, quæ supra §. XX. dicta sunt, unde clare satis patet, Iudaïs plane insuetum non esse, discipulos suos comparare charta atramento consignata, in primis cum in *Medrasch Schemuel* l.c. expresse hanc causâ præstantia inscriptio recentiori in charta facta vel ex hoc capite commendent, quod ad eam accurrere soleant omnes lecturi, hæc annon eadē sint cum illis Apostoli v. 2. Επιστολὴ ἡ ἐπὶ ἀποκαλυψομένῳ ὅπῳ πάντων ἀπερπάνω, Epistola estis, ad quam lecturi omnes homines concurrunt, emunctioris naris criticis iudicandum relinquimus. Et quo tendunt tandem illa de discipulorum ac Doctorum ab atramento petita elogia sæpe in scriptis Iudaicis obvia? Notum adducemus elogium R. Iochanan ben Saccai Hillelis discipuli, ex *Sopherim* c. XVI. §. VIII. qui haec ceu discipulus de Doctore suo Hillele gloriatur: אֵם וַיְהִי כָל הַשָּׁמִים יוֹיעַת וְכָל הַאֲלֹתָה קָלְמוֹתִין וְכָל הַיּוֹם  
דַי אֵין כָדו לְכַתֵּב אֵת חַכְמָתו שֶׁלְמֹרוֹתִי מִרְכָּז הַלְּל וְלַעֲלָמָה  
אַצְלָתוֹ מִחְכָמָתָה חַכְמָתָה אֶלָא כִּשְׁבַּשׁ שְׂזִיבָכְךָ הַזְּטוּבָה בַּיּוֹם  
*Si omnes cali forent aulea, omnes arbores*  
calami, & totum mare atramentum, non sufficerent exprimende sapientia,  
quam didici a R. Hillele, nec tamen propterea superazi omnem sapientum sa-  
pientiam, sed sum in istar musæ immenso immersa Oceano, quam extrahunt si-  
ne mari defœtu, seu ut R. Gedalias in Schalscheles Hakkab. f. XXVI. col. II.  
refert, fuisse se canis ad in istar ex Oceano aquam hauri-  
entis, et addens: וְמִכְאֵן תִּבְנֵן נוֹרָכְךָ מַעַלְתָּה חַכְמָתָה רְבּוֹתָה Ex quo fa-  
cile cognoscis, quam excellentes eius fuerint Doctores Conf. Ialkut fol. VII.  
col. I. R. David Ganz in Zemach David f. LXXXIX. quamvis a Rabbi Iohanan mutuatam phrasin aliis etiam rebus accommodari ex Pefachin f. LVII.  
col. I. & Schabbas fol. XI. col. I. notum, imo ad Mahumeda-  
nos transiisse, ex Alcorani Surata XXXI. Surata Lokmanni di-  
cta §. XXVI. ostendat D. Augustus Pfeifferus Append. II. Diff. de Alcorano,  
Exerc.

Exerc. VI. Matzol. Iud. p. 379. His tamen non obstantibus, exactius mentem Apostoli ex Antiquitate Hebræa explanari posse existimamus, si ad volumen legis in Synagoga quovis Sabbato prælegi solitum mentem intendisse dicamus Apostolum; id enim nexus verborum egregie corroborat. Observamus dici de Corinthiis: (1) Φανερόν manifasti estis; ut enim res sub velo latens Φανερόθαι & conspicua reddi dicitur Ebr. IX. 8. 1. Cor. IV. 5. ita & volumen Legis manifestabatur in synagoga, dum scriptura intramembranas obvoluta replicabatur. Christus sane synagogam intrans ἀντίτοξα erat τὸ βελίον volumen revolvit Luc. IV. 17. a quo ritu factum nota Paulus Aringius L. VI. Romæ Subterr. c. XVI. quod Christus inter sacras imagines saepe pingatur volumen explicitum adstanti Petro porrigen, sine dubio ob scripturæ sensum ab ipso expositum, coniiciente Guibeli. Durando L. I. Ration. c. III. Imo si altius rem repetamus, volumen legis manifestatum dicere possimus in synagoga, quando more adhuc in synagoga recepto exterius volum impositū removetur, & volumen legis summa cum veneratione in altum tollitur, ut omnium oculis exponatur. Vid. Camp. Vitringa L. I. de Synag. Vet. P. I. c. X. p. 211. & L. III. P. II. c. VIII. p. 972. Eo respiciens Apostolus dicit, Corinthios esse velut volumen legis, quod velo remoto in altum elatum, oculis totius Synagogæ, evolutione vero ex plicis suis oculis lectorum exponitur. (2) Ut vero illa elevatione volumen legis manifestatur, ita & publica Corinthiorum laude apparere, eos esse volumen multo excellentius, nempe ἐπιστολὴ χριστοῦ; sive ita dictam velimus, quod ab eo scripta, sive quod illum gereret inscriptum. (3) Quale sit hoc volumen, porro innuit; nimis cum volumen legis a στολή seu scribis paretur, munere hoc se suosque socios defunctum esse pandit, οὐχὶ διανοηθεῖσα sub nostra scribarum manu & amanuensium calamo ἐγγέγραμμη exaratum. (4) Cum volumen legis atramento scriberetur, prærogativam declaraturus Apostolus volumen suum scriptum dicit. OT μελάνι; non sepia pisces cruentem innuens Romanis alias non infuetura (de quo Plinius L. IX. H. N. c. XXIX.) ut existimat H. Grossius in notis ad h. l. sed atramentum volumini legis scribendo adhibitum; Id. nimis vulgaria sapere; quin potius scriptura huius imaginem præbere tabulas in monte Sinai a DEO, וְמֵלָאָן אֶלְךָ תַּבִּרְכָּתָךְ exarat. Enimvero אלְדוֹת בְּאַצְבָּע digitum DEI Mosis tabulae exaratae sunt Exod XXXI. 18. Deut. IX. 10. digitum antem DEI Spiritum S. vocari constat ex Luc. XI. 20. Cum vero dicere possent Corinthii: nullane huic scripturæ prærogativa conceditur, etiam hanc tabularum scriptiōnē longo post.

se relinquens intervallo reponit Paulus: (5) Ingens adhuc esse discriben, quod ut lex scripta sint σὺ εν πλαξὶ λιθίναις αλλ' εν πλαξὶ παρόδαις σαρχίναις animo non silice durior, sed molli & tractabili. Ezech.XXXVI.26. Hac nostra expositione, nemini tamen obtrudenda, dubio succurri potest a Dan. Heinso L. VIII. Exerc. S. c. II. p. 423. moto. Theophylacto enim verba ἐγγεγρα-  
μένην & μέλανι ad Legem atramento exarata referenti, reponit, non dici posse legem atramento exarata, quam digito DEi sculptam constat, nisi proleptice ita dici velimus, quod postea lex atramento scripta fuerit; unde etiam Angli in *Annotations upon all the Books of the Old and N.T.* in 2. Cor. III. 3. scribent amant: *The tables were not written with ink, but whit the finger of God. In this part therefore of the verse he opposeth not the epistle of Christ to the writing in the tables of stone but to ordinary letters which are written with ink.* Ast ex hoc Heinsii dubio facile nos eluctari posse speramus, si dixerimus a scriptione membranæ legis atramento facta, altius progrederi Paulum ad scriptiōnem in lapide exarata spiritu seu digito DEi.

## §. XXIV.

Suppetias fert atramenti Ebraeorum meditatio loco Col. II. 14. in-  
signiter illustrando, ubi Paulus de Christo: Εξαλεψας τὸ πατρὶ ἡμῶν χειρό-  
γενῆ τοῖς δόγμασιν ἐπὶ ὑπεναυτίον ἤμην. Delevit chirographum nobis  
adversum. Ad privatorum obligationes, Ebrais חותם שטרו die Schuld-  
briefe, alludere Apostolum, non sine veri specie defendit Henr. Hammondus  
in not. ad Col. II. 14. T. II. p. 230. *Camp. Vitringa* L. II. Observ. S. c. XI.  
§. XIV. p. 412. & Ioh. Coccius in h. I. T. V. Opp. p. 46. non tantum ob vo-  
cem χειρόγενεων, qua est scheda debitorem ad solvendam a creditore acce-  
ptam obligans pecuniam, sed & ob ritum Iudeis receptum, quo chirographa  
solutione praedita deleri dicebantur, cum vel lacerarentur vel combure-  
rentur, teste R. Moſe Maimon. in הלכות מלוחה ולו §. XVI. c. XVI. §. VIII.  
Attamen cum Dan. Heinso L. XII. Exerc. S. c. II. p. 490. notei χειρόγενεων  
dici scripta quevis manu exarata, quin imo ipsam legem DEi manu exa-  
ratam; nil verat, quo minus alludi ad schedam Sotæ eiusque deletionem aquis  
amaris factam dicamus, ad quam vel Christum ipsum respicere Ioh. VIII. 6.  
autor est Ioh. Lightfootus in Hor. Hebr. T. II. Opp. p. 534. & Ioh. Henr. Ortho-  
in Lex. Rabb. Phil. p. 48. Nam (1) Sotæ scheda erat χειρόγενεων manu sa-  
cerdotis libro inscriptum. Tale χειρόγενεων omnium oculis expositum  
maledictiones vocantur. (2) Sotæ scheda erat contra mulierem; eam enim  
enccabat si rea esset, & veritatem ante non esset professa. χειρόγενεων  
erat

ερατ ναθ' ημῶν *adversus nos*, & ὑπεναυτίον ημῶν, *nobis adulteris ac desertoribus contrarium*. (3) Sotæ scheda non nisi execrationes continebat; Nil nisi execrationes Chirographo fuere inscriptæ, & mera dogmatæ. (4) Sotæ scheda celebatur exacte; Propterea enim ne chalcanto quidem uti licebat in scribenda scheda, ne forte vestigium scripturæ post ablutionem remaneret; vid. sup. §. XV. Apostolus schedam legis execrationes continentem ita deletam dicit, ut ne nota quidem superflues sit, quo nos emphasis vocis ἐξαλέψας dicit coll. Act. III. 19. Apoc. III. 5. VII. 17. XXI. 4. (5) Sotæ scheda liquore abstergebatur, in specie aqua, prout non inconcinne ex emphasis vocis מורה Num. V. 23. XXXIV. 11. Es. XXV. 8. Deut. XXIX. 19. occurrente, infert Baal Hatturim in h.l. Ita & chirographum eius deletum liquore, qui Es. XLIII. 25. exclamat: אָנֹכִי אָנֹכִי הוּא מֶרְחָה Ego, ego inquam ἐξαλέψας delens sum. Nec seqq. Pauli palmar sententia nostræ reddunt dubiam: προστηλώσας αὐτὸν τῷ σάρκῷ affgens illud cruci, qualis affixio Schedæ Sotæ accommodari non posse videtur. Occurri enim dubio huic potest, si dicamus: Alio hic oculos dirigere Apostolum, nempe ad tabulam condemnatorię cruci Christi affixam, Matth. XXVII. 37. de qua Cl. Salmasius de Cruce ad Bartholinum: *Elogia ista condemnatorum erant tabelle lignæ, de albate gypso & cerussa, in quibus literæ ex encausto vel atramento describebantur.* Succurrunt interea, qua referunt de tabula Helenæ Talmudici in Ioma c. III. Mischna X. דָּרְלֵנִי עֲשָׂתָה טְבִילָה שְׁלֵךְ זְהֻבָּה Helena fecit ex auro tabulam, cui sectio Sotæ inscripta erat; hanc autem parieti affixam discimus ex R. Alphes c. II. Tos. Sota f. DCLXIX. col. III. טְבִילָה שְׁלֵךְ זְהֻבָּה קְבֻעָה Tabula aurea, בְּכֹתְלָה שְׁלֵךְ הַכְּלָל וְהִיא נְאוֹתָה מְכֹרְלָת parieti sempli (seu sancti) affixa erat, unde ipsam in portico videre licebat. Vid. de hac tabula appensa Maimon. in Sota c. II. Mischn. IV. Rob. Sheringham ad c. III. Ioma Mischn. X. I. C. Wagenfeil in Sota c. II. p. 363. & app. p. 1117. & 2. ad. Acoluthus c. III. de Aq. amar. §. LXVII. p. 312. Quid si ad hanc tabulæ Sotæ affixionem & suspensionem a Paulo alludi dicemus? At manum de tabula!

## תוספות

- I. Vox וְעַמְרוֹן Exod. IX. 16 Pharaonem peste infectum, at pristinæ valediūna a DEO restitutum, evincit.
- II. Thus in libaminibus adulendum, cochleari exceptum, non manu nuda sacerdos contra Foro. Scacchum nuper evincere studuit Phil. Bonanni, Italus in Mus. Kirch. p. 10. ei tamen nec rationes, quas assert, nec antiquitas Hebreæ suffragantur.

תְּהִלָּה לְאָלָה תְּבָרָךְ





99 A 6943

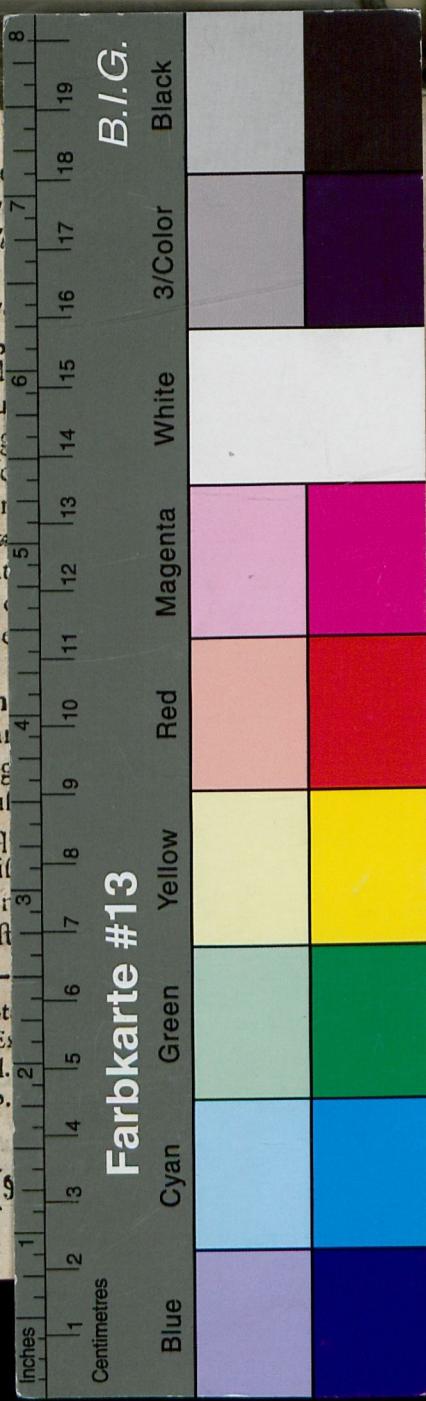


BR

Dattrau

VS 17. Febr.





כָּנָה  
Exercitatio  
Rabbinico - Talmudica

D

וְיַעֲשֵׂה

SEL

**ATRAMENTO  
HEBRÆORUM,  
RECTORE MAGNIFICENTISSIMO,  
AUGUSTO aug. SERENISSIMO PRINCIPÆ ac DOMINO,  
DOMINO FRIDERICO  
WILHELMO,**

REGNI PRUSSIÆ, ELECTORATUS CÆTERA-  
RUMQUE PROVINCiarum BRANDENBURGICARUM  
HÆRFEDÆ, &c. &c. &c.

IN HELICONE PATRIO  
Placide Συμφιλολογεντων discussioni exponunt  
**PRÆSES**

# M. IOH. IACOBUS QVANDT

**CHRISTOPHORUS GRUBE**

Anno MDCCXIII. d. Februar. H.L.Q.S.

**REGIOMONTI, Typis REUSNERIANIS.**